

जिनपूजासंग्रह

श्रीमदुपाध्यायरामचंद्रजीगणी

की

आज्ञानुसार

ऋषि नानकचंदने सोधितकरके

मुद्रितकिया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

सम्वत् १९३३ सि० आश्विन वदि १

॥ विज्ञापन ॥

सकल भविक जनोंकों उचित है कि अपार ससार सागर सेतु श्रीभगवान् इष्ट स्वरूप जिनेन्द्रकी उपासना में निरालस्य हो के अवश्य प्रवृत्त होना, और वह उपासना प्रवृत्ती आगम के ज्ञानही से सुकर और सफल होती है, आगम ज्ञान भी पठन पाठन और ग्रंथों की सुलभतासे सिद्ध होता है, इस हेतु धनि क लोग पाठ शाला और मुद्राय त्रीमे यथाशक्ति द्रव्य व्यय करें उसको व्यर्थ न समझें ग्रंथों की सुलभता और विद्या दृष्टि होगी यद्यती प्रत्यक्ष फल है परंतु औरभीफल है इसमें प्रमाण त्री देम चंद्र सूरिजी का वचन है "नतेनरा दुर्गति माप्रवति नमू कर्तानैष जडस्वभाव ॥ नचांधतां बुद्धि विहीनत चयेलेषयतीहजि नस्य वाक्यं ॥ १ ॥ पठति पाठयते पठतामसौ वसन भोजन पुस्तक वस्तुभि प्रतिदिनं कुरुते य उपग्रह स इह सर्वविदेय भवे न्नर २ ॥ लेखयंति नरा धन्या ये जिनागम पुस्तकं ते सर्व वाङ्म य ज्ञात्वा सिद्धिं याति नसशय ॥ ३ ॥", इनवचनोमेंलेखयति इसका अर्थ यह है कि अक्षर विन्यास अर्थात् कागज पर अक्षर की रचना, सो लेखनी सेहोव, या मुद्रासे उसमें कुछ विषे प नहो, ऐसे अक्षरकार कार्य में प्रवृत्त नहोना यह बड़ी भूल है श्री भगवान् उनके सय मनोरथ पूर्ण करै, जो वंग देशभूपण राय धनमत सिंघ बहादुर ऐसे कार्यमें उन्हाही होके व्यय कर रहे हैं उन्ही के सहायतासे मद रत्नायली १ जिमपूजा सग्रह २ सुविज्ञ किया है औरसिञ्जाय पुस्तक मुद्रित होरहा है, ऐसे ही सकल भविक लोक प्रवृत्त होय विद्या और ग्रंथों की दृष्टि करै जिसेधर्मसुरक्षित है ऐसी हमारी इच्छा है, भगवान् शीघ्र पूर्ण करै ॥ इति ॥



॥४०॥ अथ श्री जिन पूजा पद्धतिः ॥



प्रथम श्री मज्जिन पूजा करने वाला
अच्छे स्थान में स्नान कर चोटी के केश बाध
शुद्ध वस्त्र पहरे के उत्तरासगकर मुख कोश
बाधे पीछे इन मंत्रों से वास क्षेप तीन तीन
वार मंत्र के अष्ट द्रव्य कों शुद्ध करे सोही
आचार दिनकर से लिखते हैं ॥



ॐ अनरूपोह ससारि जीवः सुवासनः
सुमेधः एमचित्तो निरवद्वार्हत् पूजने निर्वृ
त्तां निष्पापो ज्ञयानं निरुपद्रवो ज्ञयासं म
न्मश्रिता न्यपि जीवा निरवद्वार्हत् पूजने
निर्व्यथा. निष्पापा ज्ञयासु. स्वाहा ॥
॥ यह मंत्र पढ़के अपने ललाटे में तिलक करे ॥

॥ अथ जल मंत्र ॥

ॐ आपो अप्काया एकेंद्रिया जीवा नि
रवद्व्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा निष्पापाः शुभ्र
गतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्ह
दर्चने स्वाहा ॥

॥ चंदन पुष्प धूप फल अक्षत शुद्धि मंत्र ॥

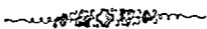
ॐ वनस्पतयो वनस्पति काया जीवा
एकेंद्रिया निरवद्व्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा
निरपाया शुभ्रगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन
हिंसापाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ अग्नि और दीपक शुद्धि मंत्र ॥

ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया
निरवद्व्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथाः संतु निर
पायाः संतु शुभ्रगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिं
सा पाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ अथ स्नात्र पूजा प्रारंभः ॥



॥ पांखडी गाथा ॥

॥दृग॥ चोतीसैं अतिशय जुन । वचनाति
शय सजुत्त ॥ सो परमेसर देखि नवि सिहा
सण सपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासण वैठा जगन्नाण । देखी नविजन
गुणंमणि खाण ॥ जे दीठें तुऊ निम्मल ऊण
लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि
मेलो आदि जिणदा ॥ तोरा चरण कमल ची
वीस पूजो रे चोवीस सोजागी चोवीस वैरागी
चोवीस जिणदा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि
जिणदा ॥ (ए पढ चरने ठीकी दीजे ॥ १ ॥)

॥ गाथा ॥

कुसुमांजलि मेलो धीर जिणंदा तोरा चरण
कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सोनागी चो
वीस वैरागी चौवीस जिणंदा कुसुमांजलि
मेलो धीरजिणंदा ॥

॥ इति पांखडी गाथा ५ ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिन वर सयल जिन वर नमिय
मनरंग । कल्लाणक विह संथविय । करि सुज
म्म सुपवित्त सुंदर । सय इक सत्तरि तित्थं
कर । इक्क समै विहरंत महियल । चवण समै
इकवीस जिण । जम्म समै इकवीस । नत्तिय
जावें पूजिया । करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचिरा हुलरावती एदेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिन नत्ति
प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख
आसंसना । करि थानक वीसनी सेवना । अ
ति राग प्रशस्त प्रजावता । मन जावना ए
हवी जावता । सविजीव करुं शासन रसी
इसी जाव दया मन उल्लसी । लहि परिणा

म एह वु जलुं । निपजात्री जिनपद निरमलु
 आऊ बंध विचै इक नव करी । प्रधा सवेग
 थी थिर धरी । तिहां थी चविघ लहै नर न
 व उदार । नरतं तिमं ऐरव तेज सार । महावि
 देह विजय प्रधान । मऊ खडै अवतरै जिन
 निधान ॥

॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपनाहे देखें । मनमे हर्ष विज्ञोपै
 गजवर उज्जाल सुदर । निर्मल वृपन्न मनोहर
 निर्जय केसरी सिंह । लखमी अतिह अवीह
 अनुपम फूलनी माल । निर्मल शशि सुकमा
 ल । तेज तरण अति दीपै । इद्ध ध्वजा जग
 जीपै । पूरण कलस पंडूर । पदम सरोवर
 पूर । इग्यार में रयणायर । देखै माता जी
 गुण सायर । वारम जुवन विमान । तेर मे
 रत्न निधान । अग्नि शिखा निरधूम । दे
 खे माताजी अनुपम । हरखी रायने नासैं ।
 राजा अर्थ प्रकाशे । जगपति जिन वर
 सुख कर । होस्यें पुत्र मनोहर । इद्धा दिक
 जसु नमस्यें । सकल मनोरथ फलस्यें ॥

॥ वस्तु ॥

पुन्य उदय पुन्य उदय उपना जिण नाह ।
 माता तव रघणी समै देखि सुपन हरखंत
 जागिय । सुपन कही निज कंत नें सुपन अ
 रथ सांजलो सोजागिय । त्रिभुवन तिलक म
 हा गुणी । होस्यें पुत्र निधान इंद्रा दिक ज
 सु पयनमी करस्यें सिद्ध विधान ॥

॥ ढाल चंद्रा उलानी ॥

सो हम पति आसन कंपियो । देई अब
 धें मन आणंदियो । मुऊ आतम निर्मल कर
 ण काज । जव जल तारण प्रगट्यो जिहाज ।
 जव अरुवी पारंग सत्य वाह केवल नाणा
 इय गुण अगाह । शिव साधन गुण अंकूर
 जेह । कारण उलट्यो आषाढ मेह । हरखें
 विकसैं तव रोमराय । बलया दिक मां निज
 तनु नमाय । सिंहासन थीज्यो सुरिंद । प्रणमंती
 जिण आणंद कंद । सगअरु पयपमुहा आवि
 तत्य । करि अंजलि प्रणामिय मध्य सत्य ।
 मुख न्नाखें ए खिण आज सार तियलोय पल्ल
 दीठो उदार । रेरेनिसुणी सुरलौय देव । विष
 या नल तापित तुम समेव । तसु शांति क

रण जलधरं समान । मिथ्या विष घूरण
 गरुडवांन । तेदेव सकल तारण समत्य ।
 प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्य । इम जंपी
 सकस्तव करेवि । तव देव देवी हरखैं सुणे
 वि । गावें तव रंजा गीत ज्ञान । सुर लोक
 ज्ञवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज वंश
 ठामं । जिन राज वधैं सुर हर्ष धाम । पि
 ता मात घरे उच्छ्व अलेख । जिन शासन
 मंगल अति विशेष । सुर पति देवा दिक
 हर्षसग । संयम अरथी जननें उमंग । शुन
 येला लगनें तीर्थ नाथ । जनम्यां इद्रादिक
 हर्ष साथ । सुख पाम्यां त्रिजुवन सर्वजीव ।
 यधाई बधाई थई अतीव ॥

॥ इहां चैत्य वंदन करणां धूप खेवणां ॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञाति जिननों कलश कहस्यो ॥ एदेशी ॥

श्रीतीर्थ पतिनों कलस भजन गाइये
 सुखकार । नरखित्त मंडन दुह विहंडन भवि
 क मन आधार । तिहां राव राणां हर्ष उ
 च्छ्व थयो जग जय कार । दिसि कुमरि

अथवि विशेष जाणीं लह्यो हर्ष अपार ॥
 निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण
 बंद । जिन जननि पासिं आवि पोहती
 गहकती आणंद । हे माय तैं जिनराज जा
 यो अचि वधायो रम्य । अम्ह जम्म निम्म
 ल करण कारण करिस सूइय कम्म । तिहां
 भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार
 तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि म
 ज्ञान कार ॥ वर राखडी जिन पाणि वांधी
 दिर्ये एम आसीस । जुग कोडकोडी चिरंजी
 वो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायक जी त्रिभुवन जन हित का
 रण । परमात्म जी चिदानंद घन सारण ।
 जिन रयणी जी दशदिस उज्जलता धरै ।
 शुभ लगनें जी ज्योतिष चक्रते संचरै ।
 जिन जनम्या जी जिण अक्षर माता धरै
 तिण अवसर जी इंद्रासन पिण थरहरै ॥

॥ त्रूटक ॥

थरहरै आसन इंद्र चितै कवण अवसर

ए वण्यो । जिन जन्म उच्छ्व काल जा
णा अतिहि आनंद ऊपनों । निज सिद्ध
संपति हेतु जिनवर जाणि नगतै उमह्यो ।
विकसतवदन प्रमोदवधतै देवनायकगहगह्यो

॥ ढाल ॥

तव सुरपति जी घंटा नाद करावए । सुर
लोकें जी घोषणां एह दिरावए ॥ नर खेत्रें जी
जिनवर जन्म ऊवो अकू । तसु नगतै जी
सुरपति मंदरगिर गकू ॥

॥ त्रूटक ॥

गवै मंदर शिखर ऊपर नवनं जीवन
जिन तणों । जिन जन्म उच्छ्व करण कारण
आवज्यो सवि सुर गणो । तुम शुद्ध समकि
त धास्ये निर्मल देवाधि देव निहालतां आ
पणां पातिक सर्व जास्ये नाथ चणर पखा
लतां ॥

॥ ढाल ॥

इम सांजल जी सुरवर कोडी वज्र मि
लों जिन वदन जी मंदरगिर साहमी चली
सोहमपति जी जिन जननी घर आविया
जिन माता जी बंटी स्वामि वधाविया ॥

॥ त्रूटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्य हूँ
कृत पून्यए । त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुऊ
समो कुण अन्यए ॥ हे जगत जननी पुत्र
तुमचो मेरु मज्जन वरकरी । उच्छंग तु
मचै बलिय थापिस आतमां पुन्ये जरी ॥

॥ ढाल ॥

सुरनायक जी जिन निज कर कमलै
ठब्या । पांच रूपैजी अतिशय महिमा ये
स्तब्या ॥ नाटक विधजी तब वत्तीस आग
ल बहै । सुर कोडीजी जिन दरसन नें ऊमहै

॥ त्रूटक ॥

सुर कोड कोडी नाचती बलि नाथ शुचि
गुण गावती । अपकुरा कोडी हाथ जोडी
हाव नाव दिखावती ॥ जयजयो तूं जिन
राज जगगुरु एमदे आसीस ए । अम त्राण
शरण आधार जीवन एक तूं जगदीसए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरवरजी पांडुक बनमें चिहुं दिसै
गिरि सिल परजी सिंहासन सासयवसै ॥ ति
हां आणीजी शकै जिन खोलै गृह्या । चउ

सठै जी तिहां सुरपति आवीरह्या ॥

॥ त्रूटक ॥

आविया सुरपति सर्वज्ञगते कलत्र श्रेणि
वणावए । सिद्धार्थ, पमुहा तीर्थ अपधि
सर्व वस्तु अणावए ॥ अत्र यपति तिहां हु
कम कीनों देव कोडा कोडिने । जिन मज्ज
नारथ नीरल्यावो सबै सुर करजोडिने ॥

॥ ढाल शातिने कारणे इड् कलशा जरै ॥

आत्मसाधन रसी देवकोडी हसी । उल्लसीने
धसी खीरसागर दिशि । पउमदह आदि दहगं
ग पमुहा नई । तीर्थजलअमल लेवा जणी ते
गई । जाति अड कलत्र करि सहस अठोत्त
रा ॥ तत्र चामर सिहासणै शुभतरा । उप
गरण पुष्पचगेरि पमुहा सबे ॥ आगमें जा
सियां तेम आणी ठवे । तीर्थ जल त्रिरियं क
रि कलत्र करि देवता । गावता जावता धर्म
उन्नतिरता । त्रिरिय नर, अमरने हर्ष उपजा
वता धन्य अमसक्ति शुचिज्ञाति इमजावता
समकित्तै वीज निज आत्म आरोपता । कल
त्र पाणीमिसै जक्ति जलसोचता । मेस सिंहरो

वरें सर्व आच्यावही । शुक उच्छंग जिन दे
खि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हं हो देवा अणाइ कालो । अदिठ पुढो
तिलोयतारणो तिलोय बंधू मिच्छत्त माह
विठ्ठसणो ॥ अणाइ तिरहा विणासणो ।
देवाहि देवो दिठ्ठो दिठ्ठो हियकामेहिं ॥

॥ ढाल ॥

एम पन्नणंत वण नवण जोईसरा ॥ देव
वेमाणिया नत्तिधम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया
केवि मित्ताणुगा । केवि वर रमणि वयणेण
अइ उच्छगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्य अञ्जुय तत्य अञ्जुय इंद्र अदेश
करजोडी सब देवगण ॥ लेइ कलश अदे
श पामिय अदनुत रूप सरूपजुय कवण एह
पुच्छंत सामिय इंद्र कहें जग तारणो तार
ग अम परमेस । नायक दायक धर्म निधि
करिये तसु अजिषेक ॥

॥ ढाल ॥

॥ तीर्थ कमल वर उदक नरीनें पुष्कर ॥

॥ सागर आवै ॥ एदेजी ॥

पूर्ण कलश शुचि उदकनीधारा जिनवर
अगैनामै । आतम निर्मल नाव करतां व
घतें शुभ परिणाम ॥ अच्युतादिक सुरपति
मज्जन लोक पाल लोकांत । सामानिक इंद्रा
णी पमुहा इम अन्निके करंत ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशाण सुरिदो सकुं पन्नणइ करिस
सुपसाठ । तुम अके महनाहो खिणमित्त
अम्ह अप्पेह ॥ तासक्खिदो पन्नणइ । साह
म्मि वेच्छलम्मि वज्जलाहो आणा एवं गिराहइ
होउ कयत्या नो ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषन्न रूप कर । रहवण
करे प्रभु अगै । करिय विलेपन पुष्प माल
ठवि वर आचरण अभंगै सो ० ॥ १ ॥ तव
सुरवर वज्ज जय जय रवकर । निश्चै धरि
आणद । मोक्क मारग सारथपति घाम्योन्ना
जस्यू हिय नव फद सो ० ॥ २ ॥ कोऊ व

त्तीस सोवन्नउवारी वाजंतै वरनाद । सुरप
 ति संघ श्मर श्री प्रभुने ॥ जननीने सुप्रसा
 द । श्याणी थापी एम पयंपे । श्मह निस्त
 रिया श्याज । पुत्र तुमारो धणिय श्मारो ।
 तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ ३ ॥ मात
 जतन करि राखज्यो एहने । तुम सुत श्म
 श्याधार । सुरपति जक्ति सहित नंदीश्वर
 करै जिन जक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥ निय नि
 य कप्पगया सब निज्जर । कहतां प्रभु गुण
 सार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा
 चित्त मऊार ॥ सो० ५ ॥ खर तर गढ
 जिन आणा रंगी राज सागर उवऊाय ।
 ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुस तणै सुप
 साय ॥ देव चंद निज जक्के गाथो । जन्म
 महोच्छ्व बंद । बोध बीज श्कूरो उल
 स्यो । संघ सकल आणद सो० ॥ ६ ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥



॥ राग बेलाडल ॥

इम पूजा जगतै करो । अ्यातम हित का
जं तजी विज्ञाव निज ज्ञावमां रमलां शिव
राज इम० ॥ १ ॥ काल अनतै जे ज्ञवा ।
होस्ये जेह जिणंद । संपइ श्री मंधर प्रनू ।
केवल नाण दिणंद इम० ॥ २ ॥ जन्म म
होच्छ्व इण परै । श्रावक रुचिवंत विरचै
जिन प्रतिमा तणीं । अनुमोद नखत ॥ इम०
३ ॥ देव चद जिन पूजनां । करतां जवनों
पार । जिन पडिमा जिनसारखी । कही
सूत्र मकार इम० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥ १२२०००००

॥ अथ अष्ट प्रकारी पूजा ॥

विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं । जगति
जतु महोदय कारण जिनवरं वज्र मान ज
लौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १
नुंझी परम परमात्मने अनंतानत ज्ञान शक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय
जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ जल पूजा ॥

सकल मोह तमिश्च विनाज्ञानं परम ज्ञी
तल ज्ञाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन
चंदनैः । सहज तत्व विकाश कृतेर्चयेः ॥ २
नुँङ्गी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
ये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपू०

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै । विंशद चे
तन ज्ञाव समुद्रवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनै
र्नवैः । परम तत्व मयंहि यजाम्यहं ॥ ३ ॥
नुँङ्गी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
ये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ इतिपुष्प पूजा

सकल कर्ममहेंधन दाहनं । विमल संवर
ज्ञाव सुधूपनं । अशुभ पुद्गल संग विवर्जनं
जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥
नुँङ्गी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय
धूपं यजा महे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा

ज्ञविक निर्मल बोध विकाशकं । जिनगृहे
 शुभ दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्धि सम
 न्वित । दधतु ज्ञाव विकाशकृते र्जनाः ॥ ५
 नुँझी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
 जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय
 दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीपपूजा

सकल मंगल केलि निकेतनं । परम मंग
 ल ज्ञाव मय जिनं ॥ अयत न्नव्य जना इति
 दर्शयन् । दधतु नाथ पुरो कृत स्वस्तिकं ॥ ६
 नुँझी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
 जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय
 अकृतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ अकृत पूजा ॥

सकल पुफल सग विवर्जनं । सहज चेतन
 ज्ञाव विलासकं । सरस जीजन नव्य निवेद
 नात् परम निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ७ ॥
 नुँझी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
 जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय
 नैवेद्य यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्यपूजा

कटुक कर्म विपाक विनाशनं । सरस पक्व
फल ब्रज ठौकनं ॥ विहित मोक्ष फलस्य विज्ञोः
पुरः । कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः ॥ ८ ॥
नुँङ्गी परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय
फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति फलपूजा

इति जिनवरवृंदं नक्तितः पूजयन्ति । परम
सुख निधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रति दिवस
मनंतं तत्त्व मुद्रासयन्ति । परम सहज रूपं
मोक्ष सौख्यं श्रयन्ति ॥ ८ ॥ नुँङ्गी परम पर
मात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं य
जामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति अर्घ्य पूजा ।

शक्रौ यथा जिनपतेः सुरशैल चूला । सिंहा
सनो परि गतः स्नपनावशाने ॥ दध्यक्तैः
कुसुम चंदन गंध धूपैः । कृत्वार्चनं तु विद
धाति सुवस्त्र पूजां ॥ ९ ॥

तद्धत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार

वस्त्रा दिकां । पूजां तीर्थकृतां करोति सततं
 शकृत्या तिनकृत्या हतां ॥ नीरागस्य निरंज
 नस्य विजिताराते खिलोकीपतेः स्वस्या न्य
 स्य जनस्य निर्वृत्तिकृते क्लेशद्वया काद्वया ।
 नुंजी परम परमात्मने अनंतानत ज्ञानशक्
 तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिने
 द्वाय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्रपूजा

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

अहं पण्डि जग्गा पसरं पयाहिणं मुणिव
 ड करेऊणं । पण्डि सलूणत्तण जज्जियंच लूण
 ऊय थहम्मि ॥ १ ॥ पिरकविह मुह जिण वरह
 दीहर नयण सलूण राहावड गुरु मत्य जरि
 य । जलण पडस्सड लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिय
 जिणथरह । तिन्नि पयाहिण देइ तड तड
 सहं फरतिते विज्जाविज्जा जलेण ॥ ३ ॥ लूण अ
 ग्निमं दीजे ॥ जजेण विज्जा थुड जलेण तंनह
 अत्यि समहं । जिण रुय मच्छ रेण । फिट्
 ड लूणं तड तडस्स ॥ लूण अग्नि मे दीजे ॥

सच्चं मुणि वइ जलणि जल तंतह जमडइ
 पास अहव कयं तस्स निम्मलउ निगुण बु
 छि पयास ॥ १ ॥ जलण अनेविणु जलनिहि
 पास तिन्नि पयाहिण दिंतिहि पास । जिम
 जिय वुट्टै जव दुह पास । २ । जल निम्मल क
 र कमलेहि लेवणु । सुरविहि जावहि मुणि
 वइ सेवणु पन्नणह जिणवर तुह पय सरणु ॥
 एह कहकै लूण जल सरणकीजै ॥ इति

॥ श्री आरतिसवेरे की ॥

जय जय आरती शांत तुमारी ॥ तोरा
 चरण कमलकी मैं जाउं । बलिहारी विश्वसे
 न अचिराजी के नंदा । शांतिनाथ मुख पूनि
 म चंदा जै० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवन मय
 काया मृगलांबन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै ०
 २ ॥ चक्र वर्त प्रभु पंचम सोहै । सोलम
 जिणवर जग सज्ज मोहै जै० ॥ ३ ॥ मंगल
 आरति नोरें कीजे । जनम जनम को ला
 हो लीजे जै० ॥ ४ ॥ कर जोडी सेवकगुण
 गावै । जविक गुण गावै । सो नर नारी

अमर पद पावै ॥ जै० ॥ ५ ॥

॥ आरती संध्या की ॥

रिपन्न अजित सन्नव अग्निनदन सुमति
 पदम श्री सुपासकी । जै महाराज कि दीन
 दयाल की आरति कीजे । चंद्र सुविधि श्री
 तल श्रेयांसा । वासु पूज्य जिन राज की ॥
 जै० ॥ १ ॥ विमल अनत धर्म हितकारी ।
 शांति नाथ सुख कार की जैम० ॥ २ ॥ कुं
 थुनाथ अर मन्त्रि मुनिसुव्रत नमि नमु सो
 वन कायकी जैम० ॥ ३ ॥ नेमि नाथ प्रजु
 पार्श्व चितामणि वर्धमान नव पार की जै०
 ४ ॥ कचन आरति ब्रज विध सककर ली
 जेलीजे अग उठाह की जै ० ॥ ५ ॥ सक
 ल सध मिल आरति करत है आवा गमन
 निवार की जैमहा० ॥ ६ ॥

॥ इति सपूर्णम् ॥

॥ अथ यद् यद्गुणी आरती ॥

जय २ जिन पद सेवन कारक जय २
जगदंवे आं ० अह निशि तुफ पद समरन
कारन दिल धिच ध्यान धरे ज० १ नवि
जन वंछित पूरन सुरतरु चक्केस्वरि अंवे
ज० ३ वसु नुज शोन्नित कनक च्छवि तनु
सेवित सुरवृंदे ज० ४ पंचानन तिम खगप
ति वाहन आयुध हस्तधरे ज० ५ रिधि वृ
ष्टि नित प्रति सेवक आपें आनद संघ धरे
ज० ६ इति चक्केश्वरी जीकी आरती ॥

जय जय रिषन्न पदांबुज सेवक जय २
जखराया नविजन सुखदाया ज० १ कामग
वी जिम वंछित दायक कंचन बरण सुहाया
ज० ॥ १ ॥ संकठ विकट निवारण कारण
वर कुंजर चढिआया ज० ॥ २ ॥ उदधि नु
जैं करि शोन्नित तनु च्छवि गुणनिधि गोमुख
सुर राया ज० ॥ ३ ॥ आरत हरवा करत
आरती श्रीसंघ चितज्जल साया ज० ॥ ४ ॥
॥ इति यद् राज आरती ॥

॥ अथ सतरहजेदी पूजा ॥



ज्ञाव जले जगवत नी पूजा सतर प्रकार
परसिध कीधी द्दोपदी अग ठठे अधिकार
॥ राग सरपदो ॥

जोति सकल जग जागती ए । सरसति
समर सुजिंद ॥ सतर सुविध पूजा तणी प
जणिसु परमानंद ॥ २ ॥

॥ गाहा ॥

न्हवण १ विलेवण २ वस्यजुग ३ गंधा
रोहणंच ४ पुष्फ रोहणयं ५ माला रोहण ६
वन्नय ७ चुन्न ८ पलागाय ९ आन्नरणे १०
३ ॥ मालकलाव ११ वंसघर पुष्फंपगरंच १२
अठमगलय १३ धूवउखेवो १४ गीययं १५
नटं १६ वज्ज १७ तहाजणियं ॥ ४ ॥ सतरजेद
पूजापवरं । ज्ञाताअंगविचार । द्दु पदसुता ।
द्दोपदिपरै । करिये विधविस्तार ॥ ५ ॥

॥ अथन्हवणपूजा ॥

॥ रागदेशाख ॥

पूर्व मुखसावनं । करि दशन पावनं । श्रु
हत धोती धरीउचितमानी । विहित मुख
कोशकेखीरगंधोदके । सुनृत मणि कलशं
करि विविधवानी । नमिवि जिनपुंगवं ।
लोमहल्येनवं । मार्जनं करिय वावारि वारी ।
ज्ञणिय कुसुमांजली कलश विधिमनरली ।
न्हवति जिन इंदु जिमतिमश्रुगारी ॥ १ ॥

॥ राग सारंग मल्हारमें दोहा ॥

पहिली पूजासाचवें । श्रावक शुद्ध परि
णाम ॥ शुचि पखाल तनु जिन तणै । करै
सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ परमानंद पीयूष रस ।
न्हवण सुगति सोपान ॥ धरम रूप तरु सीं
चवा । जल धर धार समान ॥ २ ॥

॥ राग सारंग मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी । सुणियोरे मेरे जि
नवरकी परमानंद श्रुति ढल्योरी सुधारस ॥

तपत वुळी मेरे तनकीहो ॥ पू० १ ॥ प्रजुकुं
 विलोकि नमिजतन प्रमार्जित । करत पखा
 ल शुचिधार वनकी हो । न्हवण प्रथम निजघ्न
 जिन पुलावति पंककुंवरप जैसे घनकी हो ॥ पू
 २ ॥ तरण तारण नव सिधु तरणकी मंज
 री संपदफल वरधनकी । शिवपुर पंथ दि
 खावण दीपी । धूमरी आपद वेल मरदन
 की हो ॥ ३ पू० ॥ सकल कुञ्जल रंगमित्योरी
 सुमतिसग । जागी सुदिसा शुभमेरे दिनकी ॥
 कहै साधुकीरत सारगजरि करतां । आसफ
 लीमेरे मनकीहो ॥ पू० ४ ॥

॥ इति प्रथमन्हवणपूजा १ ॥

॥ राग राम गिरीमें विलेपनपूजा ॥

गात्रलूहें जिन मनरंगसुंहोदेवा गा० । स
 खरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं हारेदेवा वास
 सुं । गधक सायसुमेलिये ॥ नदन चंदन चद
 मेलीये रेदेवा । न० । मांहे मृगमदकुंकुम जेली
 ये । करलीये रयणपिंगा णीकचोलीये ए० १॥
 पग जानु कर पंधैसिरै रे । जालकं ठउर उदरं
 तरै दुपहरै हारेदेवा सुखकरै । तिलकनवे अग

कीजिये ॥ दूजीपूजा अनुसरै रे श्रावक । हरि
विरचै जिम सुरगिरै ॥ तिमकरै जिणपर जन
मन रंजीये ॥ २ ॥

॥ राग ललितमें दोहा ॥

करझ विलेपन सुखसदन । श्रीजिन चंद
शरीर ॥ तिलक नवे अंगपूजतां । लहैं नवो
दधितीर ॥ १ ॥ मिटै तापतसुदेहको । परम
शिशिरता संग ॥ चित्त खेद सवि उपश्रमैं ।
सुषम समरसी रंग ॥ २ ॥

॥ राग बेलाउल ॥

विलेपन कीजे । श्रीजिनवरअंगै जिनवर
अंगसुगंधै होवि० कुंकुम चंदन मृगमदजहक
हर्म । अंगरमिश्रित मनरंगै हो वि० ॥ १ ॥
पग जानूकर खंधै सिर । नालकंठ उरउदरं
तरसंगै । विलुपति अघमेरो ॥ करत विलेपन
तपत वृकति जिम चंगेहो वि० ॥ २ ॥ नव
अंगनवनव तिलक करतही । मिलत नवेनि
धिचंगे ॥ कहैसाधु तनु सुचिकरो । सुललित
पूजा जैसेगंगतरंगेहो वि० ॥ ३ ॥

॥ इति विलेन पूजा २ ॥

॥ अथ वस्त्रयुगलपूजा दोहा ॥

वसनयुगल उज्जल विमल । श्यारोपें जि
नश्रंग ॥ लान्न ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय
प्रसंग ॥ १ ॥

॥ रागगोडी ॥

कमलकोमलघनचंदनचरचित । सुगंध गं
धें अधिवासियाए ॥ कनक मंफ्रितहयै लालप
ल्लवशुचि । वसनजुगकंतश्रतिवासियाए । जि
नप उत्तम श्रंगै सुविधिज्ञाक्रोयथा । करियपहि
रावणीढोइयेए । पाप लूहणश्रंगलूहणो देवनें
वस्त्रयुगपूजमलधोइयेए ॥ १ ॥

॥ रागवैराफ़ी ॥

देव दुष्य जुग पूजा वन्यो है जतग
गुरु । देव दुख हर श्रव इतनों मागु ।
तुहिज सबहीहित तुंहीज मुगति दाता ।
तिण नमि २ प्रनु जी के चरणें लागुं दे० ॥
१ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दसण
नाण । देव दुष्य मिसदेऊ उत्तम वागु ।
श्रवण अजलि पुट सुगुण अमृत पीता सवि

राडे दुख शंसय घुरम ज्ञांगुं दे० ॥ २ ॥

॥ इति देव दूष्य पूजा ॥ ३ ॥

॥ श्रुथवासक्षेप पूजा ॥

॥ राग गौली में दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परें । सुमति वधारें
वास । कुमति दुरजि दूरै हरै । दहै मोह दल
पास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हां होरे देवा वावन चंदन घसि कुंकुमा
चूरण विधि विरचै वासुए हां० ॥ कुसुम
चूरण चंदन मृगमदा कंकोल तणों अधि
वासु ए हां० ॥ वास दज्ञो दिशि वासती ।
पूजो जिन अंग उवंगु ए हां० ॥ लाठि जुव
न अधिवासिया । अनुगामी की सरम अ
जंगुए ॥ १ ॥

॥ राग गौडी पूर्वी ॥

मेरे प्रजुजी की आणंद मेलें की मे० ॥
वास जुवन मोह्यो सब लोए । संपदा जेलें
की पूजा ॥ १ ॥ सतर प्रकारी पूजां विजय

देवा तता थेई । अग्रमित गुण तोरा । चरण
 सेवा कि पूजा ॥ २ ॥ कुकुम चंदनवासै । पू
 जीये जिनराज तत्ताथेई । चतुर्गति दुख
 गौरी चतुर्थो धन की पूजा ॥ ३ ॥

॥ इति वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पुष्या रोहणं ॥

॥ दोहा ॥

मन विक्रसे तिम विकसतां । पुष्य अ
 नेक प्रकार । प्रज्ञुपूजा ए पंचमी । पंचम ग
 ति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

पाळल चंपक केतकीए । कुंद किरण म
 चकुंद सोवन जाती जूहिका । विउलसिरी
 अरविद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि घरै
 ए । मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणी
 से वर वरै । विधि जिन पूज विवेक ॥ २

॥ राग कान्छो ॥

सोहैरीमाई मनमोहैरी वरणै । विविधकु
 सुमजिनचरणै । विकसी हसीजपें साहिवकुं ।

राखि प्रभू हमसरणै सो० ॥ १ ॥ पंचमि पूज
कुसुम मुकुलित की पंचविषेँ दुख हरणै सो०
कहै साधुकीरति जगत जगवत की। जविक
नरां सुख करणैसो० ॥ २ ॥

॥ इति पुष्पा रोहण पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ माला रोहण ॥

॥ राग आसाउरी में ॥ दोहा ॥

बठी पूजा ए बती । महा सुरजि पुष्प
माल । गुण गुंथी थापेँ गलै जेम टलै दुख
जाल ॥ १ ॥

॥ राग राम गिरी गुर्जरी ॥

हेनागपुन्नाग मंदार नव मालिका हे म
ल्लिका सोग पारधिकलीए । हेमरुक दमण
कं बकुल तिलक वासंतिका । हे लाल गुल्ला
ल पाळल जिलीए । हे जासुमण मोगरा ।
बेउला मालतीए । हे पंच वरणै गुथी माल
तीए । हेमाल जिन कंठ पीठेँ ठवी लह ल
हैंए । हे जाण संताप सज्ज टालतीए । जलां
२ वारतीए ॥ १ ॥

॥ राग आसाउरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नदै
चकोरकुं देपि २ जिम चंदै पंचविध वरण र
ची कुसुमाकी जैसी रयणा वलिसु हमदै दे० ॥
बछीरे तोफर पूजा तव फर धूजे । सघ अ
रिजन झइ २ वंदे । कहै साधुकीरति सक
ल आसा सुख । जगति २ जेय जिण वंदे
दे० ॥ २ ॥

॥ इति माला पूजा ॥ ६ ॥

॥ अर्थ वर्ण पूजा

॥ दोहा ॥

केतकि चंपक केवला । सोनै तेम सुगात
चाढो जिम चढतां झवे सातमिये सुखसात १

॥ राग केदारो गोडीमे ॥

कुंकुम चरचित्त विविध पंच वरणका कु
सुम सुहे । कुद गुल्लाल सु चपको दमणको
जासु सुए । सातमी पूजमे अग आलिंगिये ए
अग आलिंग मिस मानवी मुगति आलिंगि
ये ए ॥ १ ॥

॥ राग जैरवी ॥

पंच वरणी अंगी रची कुसुम नी जाती
 फूलन की जाती पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाल
 सिरोवर कर करणी सोवनजाती पं० । दमणक
 मसक पाळल अरंबिंदो अस जूही वेउल वा
 ती ॥ पं० ॥ पारधि चरण कलंहार मंदारो व
 र्ण पटकूल वनी ज्ञांती । सुरनर किन्नर रमणी
 गाती जैरव कुगति व्रतती दाती पं० ॥ २ ॥

॥ इति वर्ण पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ गंधवटी पूजा ॥

॥ राग सोरठ ॥ दोहा ॥

सोरठ राग सुहामणी । मुखैन मेली जाय
 ज्युं ज्युं रात गलंतियां । त्यूं त्यूं मीठी
 थाय ॥ १ ॥ सोरठ थारा देशमें । गढां बडो
 गिर नार । नित उठ यादव वांदस्यां । स्वामी
 नेम कुमार ॥ २ ॥ जो हूंती चंपो बिरख
 वा गिर नार पहार । फूलन हार गुंधावती
 चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥ राजमती गिरवर
 चढी । ऊजी करै पुकार । स्वामी अजऊ न वा

ऊडे । मोमन प्राण आधार ॥ ४ ॥ रे संसारी
 प्राणिया । चढो न गढ गिरनार । गगा न्हाये
 न गोमती । गयो जमारो हार ॥ ५ ॥ धन
 वा राणी राजमती । धन वे नेम कुमार । शील
 संयमता आदरी । पीहता नव जल पार ॥ ६ ॥
 दया गुणां की वेलही । दया गुणां की खान
 अनंत जीव मुगतै गया । इण दया तणें
 पर माण ॥ ७ ॥ जग मे तीरथ द्योय बला
 सेतूं जो गिरनार । इण गिर रिपन्न समो
 सरे उण गिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अगर सेलारस सार सुमति पूजा आठमी ।
 गंध वटी घन सार । लावो जिन तनु नाव
 सुं ॥ ९ ॥

॥ राग सोरठी ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा । पा
 वन घन घनसारो जी । आठो सुरजि सखर
 मृग नाजिजा जी देवा । चुन्न रोहण अधि
 कारो जी । आ० वस्तु सुगध जब मोरि
 यो जी देवा । अशुन्न करम चूरीजै जी आ०
 आंगण सुरतस मोरियो जी देवा । तव कु

मती जन खीजै जी ॥ १ ॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई जिनवर अंग सुगंधें । गंध
वठी घनसार उदारे । गोत्र तित्यंकर वां
धैं पू० ॥ १ ॥ आठमो पूजा अंगर सेलारस
लावे जिन तनु रागें । धार कपूर नाव घन
वरषत । सामेरी मति जागें पू० ॥ २ ॥

॥ इति गंध वठी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन मोहन धर मस्तकै । सूहव गीत समू
ल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा । नवमी पूजअ
मूल ॥ १ ॥

॥ राग मेघ गउडी में वस्तु ॥

सहस जोयण रहेममय दंठ । युतपताक
पांचे वरण । घुम घुमंति घूधरी वाजै । मृ
दु समीर लहकै गयणं । जाण कुमति दल
सयल नाजै । सुरपति जिम विरचै धजा ए
। नवमी पूज सुरंग । तिणपरि आवक धज

महति । आपें दान अन्नंग ॥ १ ॥

॥ राग नहनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहन जि० मोहना
सुगुरु अधिवासिनु । करि पंच सवद त्रिप्रद
द्विणा । सधव वधू शिरसोहण जि० ॥ १ ॥
जांतिवसन पांच वरण वन्योरी । विध करि
ध्वज को रोहण । साधु न्णति नवमी पूजा
नव पाप नियांणा खोहण । शिव मंदिर कुं
अधिरोहण जन मोह्यो नहनारायण जि० २

॥ इति ध्वजपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ अन्नरण पूजा ॥

॥ राग केदारो दोहा ॥

शिरसोहै जिनवरतणै । रयण सुगट ऊ
लकत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा । श्रवण
कुल्ल अतिकंत ॥ १ ॥ दग्मी पूजा अन्न
रणकी । रचना यथा अनेक । सुरपति प्रनु
अगे रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरास वा गुंमलहार ॥

पाच पिरोजा नीलू लसणीया । मोतीमा

णक लाल लसणीया । हीरा सोहै रे । मन मोहै
 रे । धुनी चुनी पुलक करकेतनां । जात
 रूप सुजग अंक अंजना । मन मोहै रे ॥ १ ॥
 मौलि मुकुट रयणे जम्भो । कांनै कुंठल हां
 सुजुगतै जुम्भो । उरहारू रे ॥ २ ॥ जाल ति
 लक वांहे अंगदा । आञ्जरण दशमी पूज
 मुदा । सुखकारू रे । दुखवारू रे ॥ २ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभू शिर सोहै । मुगट रयणे जम्भो । अं
 गद बांह तिलक जालस्थल । यज्ञ नीको कों
 नधम्भो प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंठल शशि तरणि
 मंठल जीपे । सुरसुं अधिक अलंकस्यो । दुख
 के दार चमर सिंहासण । कृत्र शिर उवारि ध
 स्यो । अलंकृत उचितवस्यो ॥ २ ॥

॥ इति आञ्जरणपूजा १० ॥

॥ अथ फूल घर पूजा ॥

॥ दोह ॥

फूल घरो अति शोभतो । फूंदै लहकै फू

ल ॥ महकै परिमल मह महा । इग्यारमी
फूल अमूल ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी कौतकिया ॥

कोज अंकोल रायवेलि नव मालिका । कुं
द मचकुंद वर विचिकलूए । हे तिलक दमण
कदलं मोगरा परिमलं । कोमलं पाराधि पा
रुलूए । हे प्रमुख कसुमै रचै त्रिभुवन कुं रुचै ।
कुसुम गेह विच तोरणूए । गुच्छ चंद्रोदय कुं
वक उन्नय । हे जालिका गोख चितचोरणू ए ।

॥ राग राम गिरी ॥

मेरोमन मोह्यो माईरी । फूलघरै आणंद
फिलै । आसत उसत दामवधारी मनोहर ।
देखत तवही सबदुरित खिलै फू० ॥ १ ॥ कु
सुम मंफित थन्नगुच्छ चंद्रोदयं । कोरणि चा
रु विणाण सकै की । इग्यारमी पूज वणीहें
रामगिरी । विबुध विमाण जैसे उपरि नजै की

॥ इति फूल घर पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ पुष्पवर्षा पूजा ॥

॥ दोहा मलारमें ॥

वरषै वारमी पूजमें । कुसुम बादलिया
फूल । हरणताप सविलोकको । जानु समा
बज्जमूल ॥ १ ॥

॥ राग ज्ञीम मलार गुंठमिश्र ॥

हेमेघवरसैभरी । पुष्प वादलकरी जानु
परिमाण करि कुसुम पगरं । पंच वरणै वन्यो
विकच अमुकरवन्यो । अधर वृत्तैनही पीठ
पसरं मे० ॥ १ ॥ वास महकै मिलै । जमर
जमरीजिलै । सरसरंगै तिण दुखनिवारी । जि
नप आगैकरै । सुरपजिम सुखवरें । वारमी
पूजतिण परिअगारी मे० ॥ २ ॥

॥ राग ज्ञीम मलार ॥

पुष्पवादलीया वरसैसुसमां । योजन अ
शुचिहर वरषै गंधोदकै । मनोहर जानु स
मा पु० ॥ १ ॥ गमन आगमन कीपीर नही
तसु । इह जिनको अतिशय सुगुण । गुंज
ति२ मधुकर इमज्जणें मधुर वचन जिनगुणधु
णें । कुसुम सुपरि सेवाजोकरै । तसु पीरन
ही सुमणै पु० ॥ २ ॥ समवसरण पंचवरण
अधोवृंत । विवुधरचै सुमना समा । वारमी
पूज जविक तिमकरें । कुसुम विकसी हसी

उच्चरै तसु नीमबंधण अहराज्जवे । जे करै जै
जै जिननमा पु० ॥ ३ ॥

॥ इति पुष्पवर्षा पूजा १२ ॥

॥ अथ अष्ट मंगलीक पूजा ॥

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमि पूजा अक्सरे मंगल अष्ट विधान ।
युवति रचै सुमता सही । परमानद निधान १

॥ राग वसंत ॥

अतुल विमल मिल्या । अखरु गुणै जि
ल्या । सालि रजत तणा तंदुलाए । अलपण
समाजकं विच पंच वरणकं । चद्रकिरण जै
सा अजलाए । मेल मंगल लिखै । सयल मं
गल अस्तै । जिनप आगे सुथानक धरै एं ।
तेरमि पूजाविध । तेरमि मन मेरे । अष्ट
मंगल अष्ट सिद्धि करे ए । अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा वणी तेरी रसमै ॥ अष्ट मंग
ल लिखै । कुशल निधान है । तेज तरण के
रसमै हां० ॥ दर्पण नद्धासण नंदावर्त पूर्ण

कुंज । मलयुग श्रीवत् तासुमै । वर्धमान स्व
स्तिक पूज मंगल की । ज्ञानंद कल्याण के
सुख रस मै हा० ॥ २ ॥

॥ इति अष्टमंगलीक पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अग्र । सेलारस घन
सार । धर प्रजु आगल धूपणा । चउदमि अ
रचा चार ॥ १ ॥

॥ राग वेलाउल सवावा ॥

कृष्णागर करचूर । सीगंध पांचेपूर । कुं
दुरुक्क सेलारस सार । गंधवटी घनसार । गं
धवटी घनसार । चंदन मृगमदा रस जेलिये ।
श्रीवारु धूप दशांग अंबर सुरभि वज्र द्रव्य
जेलिये । वेसुलिय दंळं कनक मंळं । धूप धा
णो करधरे । नव्यवृत्ति धूप करंति जोगं । रो
ग सोग अत्रुज हरे ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौली ॥

सव अरति मथन मुदार धूप । करत गंध

रसाल रे । देवाकर० । काम धूमावली करिय
 धूसर । कलुप पातिक गाल रे स० ॥ १ ॥ ऊर्ध्व
 गति सूचत जविकुं । मघ मघै किरणालरे ।
 चवदमी वामाग पूजा । दीये रयण विशालरे ।
 श्यारती मगल थाल रे । मालवी गौढी ताल
 रे स० ॥ २ ॥

॥ इतिधूप पूजा १४ ॥

॥ श्यथ गीत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कठ जलै श्यालाप कर । गावो प्रनु गुणगी
 त ॥ जावो श्यधिकी जावनां । पनराभि पूजा
 प्रीत ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

यद्ददनत केवलमनत फलमस्ति । जैनगुण
 गानं । गुण वर्ण नाद वादौ मात्रा ज्ञापा लयै
 युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वरसंगीतै स्थानै र्जयतादि
 ताल करणै च । चचुर चारी चारै गीतंगानं
 सुपीयूषं ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

जिनगुण गानं श्रुतअमृतं । तार मंदादि
अनाहत तानं । केवल जिम तिम फल अमृतं
जि० ॥ १ ॥ विविध कुमार कुमरी आलापे ।
मुरज उपांग नादज अमृतं । पाठ प्रबंध धु
आप्रतिमानं । आयतिच्छंद सुरति सुमति
सवद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं । सुरनर गावे
जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं ।
पनरमि पूज हरै दुरितं जि० ॥ ३ ॥
॥ इति गीत पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ नृत्य पूजा ॥

॥ राग शुद्ध नाटक दोहा ॥
करजोही नाटक करे । सऊि सुंदर सि
णगार नव नाटक ते नवि नमै । सोलमि
पूजा सार ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

जावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चं
दानना । सप्पिम्मासम रूप वेस वयसो मत्ते
न कुंनत्थणा । लावणा सुगुणा पिकस्सरवई
रागाइया लावणा । कुमारी कुमरावि जैन

पुरञ्च नञ्चति सिगारणा ॥ १ ॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अठसयं कुमार कुमरीञ्च सूरिया
नेणं देवेणं सदिठा । रंग मरुवे पविठा । जिणं
नमंता गायंता वायंता नञ्चति ॥

॥ राग त्रिगुण नाटक ॥

नाचंति कुमार कुमरी । त्रागफदि तत्ता
थेइ । द्वागफदि २ थोगनि २ मुखै तत्ताथेइ
ना० ॥ १ ॥ वेणु वीणा मुरज वाजै । सोलही
श्रृ गार साजे तनन निन्ना नई । घृणण २
घूधरी घमके । रणणनिन्नानई ना० ॥ २ ॥ कं
सती कंचुकी तरुणी । मंजरी ऊंकार करणी ।
सोचंति कुमरी हास्तकं हावादि जावे । ददति
त्रमरी ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी सुरी
याज्ञ रावणे कीधी सुधग तत्ता थेई । तेम
जगते जविक लीणा । आणंद तत्ता थेई
नाचंति कुमार कुमरी ॥ ४ ॥

॥ इति नृत्य पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ वाजिन्न पूजा ॥

॥ दर्शन ॥ अथ नवपद जी की पूजा ॥

॥ गाथा ॥

उप्यन्न सन्नाण महो दयाणं । सप्याङ्गि हे
रासण संठियाणं ॥ सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं
नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ ढाला ॥

जिए शुद्धज्ञावेँ निजात्मा पिढान्यो स्वबोधे
ठए द्रव्यनों भेदजान्यो । निज प्राग्जवेँ सत्त
पः कर्म साध्यो । विपाकोदयी तीर्थकृन्नाम
बांध्यो ॥ १ ॥ यदीय प्रज्ञावेँ जगत् सुप्रसिद्धा
वसुप्राति हाय्यादि संपत्ति सिद्धा । परानंद
मग्ना सदा जे विशोका । नमो ते जिना सर्वदा
ज्ञच्य लोका ॥ २ ॥ नमो नन्त संत प्रमोद प्र
धानं । प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय । यथा
जेह ना ध्यान थी सौख्यज्ञाजा । सदा सिद्धच
क्राय श्रीपालराजा ॥ ३ ॥ कस्या कर्मदुम मर्म

चक्रचूर जेणे । जला जव्य नवपद ध्यानेन
तेणे । करी पूजना जव्य जावे त्रिकालें सदा
वासियो आतमा तेण कालें ॥ ४ ॥ जिके
तीर्थकर कर्म उदये करीने । दिये देशना ज
व्यने हित धरीने । सदा आठ महापाहिहारे
समेता । सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रम्हपूता । कस्या
घातिया कर्म चारे अलग्गा । जवोपग्रही
चार वे जे विलग्गा । जगत् पंच कल्याण के
सौख्यपामे । नमो तेह तीर्थ करा मोक्षकामें ॥

अथ ॥ ढाल ॥

तीर्थपति अरिहा नमुं धर्मधुरंधर धीरो
जी । देशना अमृत वरसता निज वीरज वर
वीरो जी ॥ १ ॥

॥ त्रुटक ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान जासन सर्व जाव
प्रकाशता । निज शुद्ध प्रथा आत्म जावे चर
ण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रज्ञाव
अतिशय प्राति हारज शोभता । जग जतु
कसणावंत जगवत जविक जनने थोभता ॥

॥ दोहा ॥ ६॥ १

परम मत्र प्रणमी करी । तास धरी उर

ध्यान । अरिहंत पद पूजा करो । निज २
सगति प्रमाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

तीजे नव वर थानक तपकरि जिण बां
धुं जिन नाम । चौसठ इंद्रें पूजित जे
जिन । कीजे तास प्रणाम रे ॥ १ ॥ नविका
सिद्धचक्र पद वंदो जिम चिर काल आनं
दो रे न० ॥ उप शम रसनो कंदो रे न० ॥
रत्न त्रयीनो वृंदो रे न० । बंदी नें आनंदो रे
न० ॥ सेवे सुर नर इंद्रो रे नवि० ॥ १ ॥
जेहनें होइ कल्याणक दिवसे । नरकें पिण
उजवालुं । सकल अधिक गुण अतिशय
धारी ते जिन नमि अघटालुं रे न० ॥ सि०
२ ॥ जे तिहुं नाण समग उपन्ना । जोग क
रम खीण जाणी । लेइ दीक्षा शिक्षा दिये
जन नें । ते नमिये जिन नाणी रे न० ॥
सि० ॥ ३ ॥ महा गोप महा माहण कहिये ।
निर्यामक सत्य वाह । उपमा एहवी जेहनें
ढाजे । ते जिन नमिये उढाह रे न० ॥ सि०
४ ॥ अठ महा प्राति हारज ढाजे । पैतीस
गुण युत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जग जन

नें । ते जिन नमिये प्राणी रे न० ॥ सि० ॥

॥ ढाल सीमधर स्वामी उपदिसे एदेशी ॥

अरिहंत पद ध्यातां थकां ॥ दब्रह्म गुण
पजाये रे । जेद छेद करि आतमा । अरिहत
रूपी थाये रे ॥ २ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे
सांजल ज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानं
आतमा । रिद्धि मिले संजु आई रे ॥ वी० ॥

॥ त्रलोक ॥

॥ विमल केवल० नुँं जी अहं परमात्मने० ॥

॥ इति प्रथम पद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की ॥ कीजे दिल खुसि
याल ॥ असुज कर्म दूरे टलें । फले मनोरथ
माल ॥ १ ॥

॥ ठंड ॥

सिद्धाण माणद रमालयाणं । णमो णमो
णंत चउक्कयाणं समग्ग कम्म रकथकारयाणं

जन्मं जरा दुःख निवारणं ॥ २ ॥ निजा
नादि कर्माष्टके । कृत्य करी नें । जरा मृत्यु
जन्मादि दूरे हरी नें । स्थिता सर्व लोकाग्र
ज्ञागें विशुद्धा ॥ चिदानंद रूपा स्वरूपें प्रसि
द्धा ॥ ३ ॥ निजानंत बोधादि युक्ता प्रदेक्षा ।
निराबाधता निर्वृता जे अलेक्षा । निराकार
साकार ज्ञावे महंता । जजो ते प्रमोदे सदा सि
द्ध संता ॥ ४ ॥ करी आठ कर्म कृत्ये पार
पांड्या । जराजन्म मरणादि ज्ञय जेण वाम्या
निरावर्ण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार
पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ ५ ॥ त्रिज्ञागोनदेहा
वगाहात्म लेक्षा । रह्या ज्ञान मय जात वर्णा
दि देक्षा ॥ सदानंद सौख्या श्रिता जोति
रूपा ॥ अनाबाध अपुनर्नवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्म मल कृत्य करी । पूरण शुद्ध
स्वरूपो जी अच्या बाध प्रनुतामई । श्रात
म संपति नूपोजी ॥ सकल ० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे नूप श्रातम सहज संपति । शक्तिव्यक्ति
पणे करी स्वद्वय क्षेत्र स्वकाल ज्ञावें । गुण

अनंता आदरी स्वस्वभाव । गुण पर्याय पर
णित । सिद्ध साधन परञ्जणी । मुनिराज
मानसहंससमवहनमो सिद्ध महा गुणी १ ॥

॥ ढाल ॥

समय पणसंतर अण फरसी । चरमति
नाग विशेप । अवगाहन लहि जे शिव पु
हता ॥ सिद्ध नमो ते अज्ञेपरे ज० ॥ १ ॥
पूर्व प्रयोग नें गति परिणाम । बंधन वेद ।
असग । समय एक उर्ध्वगति जेहनी ॥ ते
सिद्ध प्रण मो रगे रे ज० ॥ २ ॥ सि० ॥
निर्मल सिद्ध सिलानें ऊपर जीयण एक लो
गत सादि अनंत तिहां थित जेहनी ते सिद्ध
प्रणमो सतरे ज० सि० ॥ ३ ॥ जाणे पिण
नस के कहि । परगुण प्राकृत तिम गुण जास ।
उपमा विण नांणी नव मांहे । ते सिद्ध दिउ
ऊल्लास रे ज० ॥ ४ ॥ जोतिसुं जोति मिली
जस अनुपम । विरमी सकल ऊपाधि । अज्ञात
म राम रमापति समरो । ते सिद्ध सहज समा
धि रे ज० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभाव जे । केवल दंसण ना

णीरे । ते ध्याता निज आत्मा । होइं सिध
गुणखाणी रे वी० ॥ २ ॥

॥ त्रलोक ॥

॥ विमल० नुँझी परम० सिद्धेभ्यो ॥

॥ इति श्री द्वितीय सिद्ध पद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिविआचारज पदतणी पूजा करोविशेष
मोहतिमिर दूरेंहरे । सूऊँजाव अशेष ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं णमो णमो सू
रिसमप्यहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं ।
अखंठ षट्तीसगुणायराणं ॥ २ ॥ नमूंसूरिरा
जा सदातत्वताजा । जिनेंद्दा गमें प्रौढ साम्रा
ज्यजाजा षड् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना । पं
चाचारनें पालवें सावधाना ॥ ३ ॥ जिकेपंच
आचार पालें सुजावें । अनित्यादि सद्भावना
नित्यजावें । जिनेंद्दागमें ज्ञान दानेंसुरत्ता ।

बहूनव्यमें जेरहें अप्रमत्ता ॥ ४ ॥ ढतीसे
 गुणे दीप्यमाना गणेशा । सदाज्ञासना धार
 जूता सुलेशा । बहूनव्य लोका सुमार्गनयं
 ता । ऊज्योसूरि मुप्या सदातेजवंता ॥ ५ ॥
 जविप्राणिने देशना देशकालें । सदाअप्रम
 ह्ता यथासूत्रआलें । जिकेशासनाधारदिग्द
 तकल्या । जगत्ते चिरंजीव जोशुद्धजल्या ॥

॥ ढाल ॥

आचारिज मुनिपतिगणी । गुणढतीसंधा
 मोजी । चिदानद रसस्वादता । परजावें नि
 क्कामोजी ॥ १ आ० ॥

॥ त्रुटक ॥

नि. कामनिर्मलशुद्धचिदधन । साध्यनिज
 निरधारथी । वरज्ञान दरसन चरणवीरज । सा
 घनाव्यापारथी । जविजीवयोधक तत्वसोध
 क । सयलगुण सपतिधरा । संवर समाधिग
 तिउपाधि । दुविध तपगुण आगरा ॥

॥ ढाल ॥

पंचआचार जेसूधापालें । मारगजाखेंसा
 चो । तेआचारज नमित्येनेहसुं । प्रेमकरीने जा
 चारे ज० ॥ १ ॥ वरढतीस गुणेकरिशोने ।

युगप्रधान जगमाहै । जगमोहै नरहै खिणु
 कोहै । सूरिनमुंते जोहै रे न० सि० ॥ २ ॥
 नितअप्रमत्त धरमउवएसैं । नहिविकथान
 कषाय । जेहनें तेआचारजनमियें । अकलुष
 अमलअमायरे न० सि० ॥ ३ ॥ जेदियेसार
 णवारण चोयण । पफिचोयण बलिजननें ।
 पटधारी गढथंन आचारज । तेमान्या मुनि
 मननें रे न० सि० ॥ ४ ॥ अत्यमियें जिमसू
 रज केवल । वंदीजैजगदीवो । नुवन पदार
 थ प्रगटपटूते । आचारज चिरजीवोरे न०
 सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारजन्ला । महामंत्र शुन
 ध्यानीरे । पंचप्रस्थानें आतमा । आचारज
 होयप्राणी रे ॥ ३ ॥ वीरजि० ॥

॥ त्रलोक ॥

विमलकेवल० ॥ नुँझी परम० आचार्य ॥

॥ इतिश्री तृतीयकलत्र पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथचतुर्थ पद पूजा ४ ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोजित
गात्र ॥ उवजाया पद अरचिये । अनुभव
रसनो पात्र ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

सुहृत्तय वित्यारण तप्पराणं । णमो णमो
वायग कुंजराणं । गणस्स सधारण सायराणं
सहृत्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ महा सूत्र
सिद्धांत शुद्धे करीनें । पढावें सुशिष्यां अनु
ग्रह घरीनें । करें पूजना लोक मध्ये तदीया
रफुरती दृष्टी. जास शक्ति स्वकीया ॥ २ ॥
गणे सारशुद्धिं सहर्षं करंता । मुनी वर्ग
मध्ये प्रमादं हरंता । पचीसे गुणे युक्तदेहा
सुधूर्या । सदा वंदिये ते उपाध्याय पूर्या ॥
३ ॥ नही सूरि पण सूरिगुण नें सुहाया ।
नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली
द्वादशागादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधा
ने निरुद्धा जिमाने ॥ ४ ॥ धरे पंच नें वर्ग
वर्गित गुणौघा । प्रवादी द्विपोच्छेदने तुल्य
सिंघा । गुणी गच्छ संधारणे स्तंभ नूता । उपा
ध्याय ते वंदिये चित् प्रनूता ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

खंतिजुवा मुत्तिजुवा । अज्जव महवजुत्ता
जी । सच्चंसोय अकिंचना । तव संयम गुणर
त्ताजी ॥ १ खंति० ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्मा ब्रम्हसुगुप्तगुप्ता । सुमति सुमता
श्रुति धरा । स्यादवाद वादे तत्ववादक । आ
त्म पर वीजंजन करा । जव जीस साधन धीर
ज्ञासन । वहनधोरी मुनि वरा । सिद्धांत वा
यन दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

छादशअंग सिज्जाय करे जे । पारंग धार
गतास । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते । नमोउ
वज्जाय उलासे रे ज० ॥ १ ॥ अर्थ सूत्र नें दा
न विज्ञागें । आचारज उवज्जाय । जवतिन्ये
जेलहे शिवसंपद । नमियेते सुपसायें रे ज० २
मूरख शिष्यनिपायें जेप्रत्तु । पाहणनें पल्लव
आणे । तेउवजाय सकल जन पूजित । सूत्र
अरथ सबजाणरे ज० ॥ ३ ॥ राज कुमर स
रिखागण चिंतक । आचारज पदयोगें । जेउव
जाय सदातेनमतां । नावें जवजयसोगें रे ज०

५ ॥ सि० वाचना चंदनरस समवयणे । शु
हित ताप सविटाले । तेउवकाय नमोजे जे
वलि । जिनशासन अजुवाले रे ज० ॥ ५ ॥
॥ ढाल ॥

तप सिज्जाये रत सदा । छादश अंगनो
ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव
जग ज्ञाता रे वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॥ नुंकी परम० उपा० ॥

॥ इति श्री उपाध्याय जी चतुर्थ पद पूजा ॥

॥ अथ पचम साधु पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्ष मारग साधन जणी । सावधान थ
या जेह । ते मुनिवर पद वदतां । निरमल
धाये देह ॥ १ ॥

॥ लंद ॥

साहज संसाहिय सयमाणं नमो नमो शु
ष्ठ दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं

मुंणीण मानंद पयठियाणं ॥ १ ॥ जिके दर्श
 न ज्ञान चारित्र रत्ने । करी मोक्ष साधै प्र
 धान प्रयत्ने । सुमती गुपती धरे सावधाना
 शुजाचार पाले हरे मोह माना ॥ २ ॥ विवर्जे
 विकत्या प्रमादादि दोषा । जितेद्री पणे जे
 महा ज्ञान कोसा । शुज ध्यान ध्यावे गुणौ
 घे समिधा । नमो ते सदा सर्व साधु प्र
 सिधा ॥ ३ ॥ करे सेवना सूरिवायग गणी
 नी । कज्जं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समैता
 सदा पंच सुमति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्तै नही
 काम जोगेषु लिप्ता ॥ ४ ॥ वली बाह्य श्र
 भ्यंतरे ग्रंथि टाली । ऊइं मुक्ति ने योग चा
 रित्र पाली । शुजाष्टांग योगे रमे चित्त वा
 ली । नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ ५

॥ ढाल ॥

सकल विषय विषवारने । निक्कामी निरसं
 गीजी जवदव ताप समावता । श्यातम सा
 धन रंगी जी ॥ ५ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देहनिर्मम नि
 र्मदा ॥ काउसगग मुद्रा धीरश्यासन ध्यान

श्रम्यासी सदा । तप तेज दीपें कर्म जीपें
नही ठीपें परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिं
धु त्रिजुवन बधु प्रणमूं हित जणी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जिम तरु फूलें जमरो वैसे । पीला तसुन उ
पायें । लेई रस आतम संतोपें । तिममुनि गो
चरि जाये रे ज० सि० ॥ १ ॥ पंचेढी नें जेनि
त जीपे । पटकायक प्रतिपालें । समय सतरे
प्रकार आराधे । वदों तेह दयाल रे ज० ॥ २ ॥
अठार सहस्स शीलांगनाधोरी । अचल आचा
रचारित्र । मुनिमहंत जयणा युत वदी कीजे जन
मपविहारे ज० सि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हगु
प्तजेपालें । बारहविहतपसूरा । एहवामुनि
नमियेजेप्रगटें । पूरवपुन्य अकूरा रे ज० सि०
४ ॥ सो नांनों परे परिक्तादीसैं । दिनदिन
बढतेवानें । संयम खपकरतां मुनि नमिये ।
देव कालअनुमानें रे ज० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जेनित रहे । नविहरपे नविसोचैं
रे । साधु सूधा ते आतमा । स्यू मूढे स्यू लोचैं
रे वी० ॥

॥ त्रलोक ॥

॥ विमलके० नुँझी० परम० साधु ॥

॥ इति पंचम पद पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठमदर्शण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर ज्ञापित शुद्धनय । तत्वतणी पर
तीत ते सम्यंग दर्शण सदा । आदरिये सुजरीत

॥ वंद ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स । नमोनमो नि
म्मल दंशणस्स । मिच्छत्त नासाइ समुग्गम
स्स मूलस्स सद्धम्ममहा दुमस्स ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

अनंतानुबंधी कृयादिप्रकारे । महामोह
मिथ्यात्वने जेहवारै इगट्यादिजेदै करीवस्स
वीजे । सद्धसठिजेदै वली जे थुणीजे ॥ ३ ॥

जिनैद्धोक्त तत्वार्थश्रुतान रूपो । गुणासर्व म
ध्ये प्रवर्तैण्णूपो । विनाजेण नाणंचरित्तंनशुद्धं
सुहंदंशणंतं नमामो विशुद्धं ॥ ४ ॥ विपर्या

सहोवासना रूपमिध्या । टले जेअनादि अ
 वें जे कुपध्या । जिनोक्तै ज्ञयेंसहजथी शुद्ध
 ध्यान । कहीयेदर्शन तेहपरमंनिधानं ॥ ५ ॥
 विनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं चरित्रं विचित्र न
 वारण्यकूप । प्रकृतिसातमे उपशमं क्षयेतेहहो
 वे । तिहांआपरूपें सदाअपजोवें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

सम्पद्दर्शनगुणनमो । तत्वप्रतीत स्वरू
 पोजी । जसुनिरधार स्वभाव वै । चेतनगुण
 जेअरूपोजी ॥ ५ ॥

॥ त्रुटक ॥

जे अनूप अज्ञा धर्म प्रगटैं । सयलपरईहा
 टले । निजशुद्ध अज्ञानाव प्रगटैं । अनुज्ञवक
 सणाऊठले । वज्जमान परणाति वस्तुतत्त्वै । अ
 हव सुर कारण पणे निज साध्य, दृष्टे सरव कर
 णी । तत्वतासपतिगिणें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरुधर्मपरीक्षा । सद्वहणा परिणा
 म । जेह पांमी जे तेह नमीजें । सम्पद्दर्शन
 नामे रे न० सि० ॥ १ ॥ मलउपशम क्षयउ
 पशम क्षयथी । जेहोइ त्रिविधि अज्ञंग । सम्प

गदर्शन तेह नमीजे । जिनधर्म हठरंगे रे ज०
 सि० ॥ २ ॥ पंचवार उपसम लहिजे । क्यउ
 पत्रामियअसंख । एकवार क्हायक तेसम्पग् ।
 दर्शन नमीये असंख रे ज० सि० ॥ ३ ॥ जे
 विणनाण प्रमाण नहोवे । चारित तरुनविफ
 लिनु । सुखनिह्वानन जे विण लहिये । सम
 कित दर्शन वलिनु रे ज० सि० ॥ ४ ॥ सठ
 सठवोले जे अलंकरिनु । ज्ञान चारित्तनूमूल ।
 शमकित दर्शन ते नित प्रणमुं । शिव पंथनुं
 अनुकूल रे ज० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

शमसंवेगा दिकगुणा । क्यउपसम जेआ
 वेरे दर्शन तेहिज अतमा । स्युं होवे नाम
 धरावेरे वी० ॥ १ ॥

॥ उलोक ॥

॥ विमं० नुंजी परम० दर्शन प० ६ ॥

॥ इतिश्री षष्ठम पद पूजा ॥

॥ अथसप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम यद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप
माहि । श्याराधी जे सुज मनं । दिन दिन
अधिक उठाह ॥ १ ॥

॥ ठंड ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स । नमोनमोना
ण दिवायररस । पंचप्पयार स्सुवगारगस्स
सत्ताणसव्वत्थ पयासगस्स । ऊवेजेहथी सर्व्व
अज्ञानरोधो । जिनाधीश्वर प्रोक्तअर्थाववो
धो । मतीअण्णदिपच प्रकारप्रसिठो । जगद्धा
सने सर्व्वदेवा विस्सुठो ॥ २ ॥ यदीय प्रजावें
सुजद्धं अजद्धं । सुपेयं अपेय सुकृत्यं अकृत्यं
जिणेंजाणिये लोकमध्ये सुनाण । सदा मे वि
शुद्धं । तदेव प्रमाण ॥ ३ ॥ ऊइजेहथी ज्ञान
शुद्धिप्रबोधे । यथावर्णनासे विचित्रा वबोधे
तिणेंजाणिये वस्तुपड् डव्यजावा । नहोवे वि
तत्यानिजेच्छास्वजावा ॥ ४ ॥ होइंपच मत्या
दि सुज्ञाननेदे । गुरुपास थीयोग्यतातेनवेदे
वल्लिजेयहेया उपादेयरूपे । लहेंचित्तमांजेम
ध्यानेप्रटीपें ॥ ५ ॥

॥ ठाळ ॥

ज्ञानमो गुणज्ञानने । स्वपरप्रकाशक ज्ञा
 वेंजी । पर्यायधर्म अनंतता । जेदाज्ञेद स्वज्ञा
 वेंजी ज० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जेमुख्यपरणित सकलज्ञायक । बोधवास
 विलासता । मतिआदि पंचप्रकारनिर्मल ।
 सिद्धसाधन लंकृता । स्याहादसंगी तत्त्वरंगी
 प्रथम जेद अज्ञेदता । सविकल्पने अविकल्प
 वस्तु । सकल संशय वेदता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जहु अजहु न जेविन लहिये । पेयअ
 पेय विचार । कृत्य अकृत्यन जे विन लहिये
 ज्ञानते सकल आधाररे ज० सि० ॥ १ ॥ प्र
 थम ज्ञानने पीकेअहिंसा । श्रीसिद्धांतेजाप्युं
 ज्ञानने वंदो ज्ञानमनिंदो । ज्ञानीये शिवसु
 खचारुयुं रे ज० सि० ॥ २ ॥ सकलक्रियानो
 मूलजेअरुहा । तेहनूं मूलजे कहिये । तेहज्ञान
 नितनित वंदीजै । ते विन कहो किम रहिये रे
 ज० सि० ॥ ३ ॥ पांचज्ञानमांहि जेह सदा
 गम । स्वपरप्रकाशक तेह । दीपकपर त्रिभु
 वन उपकारी । बलिजिम रविशशिमेहरे ज०

सि० ॥ ४ ॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योति
 प । वैमानिक नें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट
 सब जेहथी । ते ज्ञाने मुक्तसिद्धिरे न० सि०
 ॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जेकर्मवै । खयउपनाम तसथा
 येरे । तोहोय एहिजश्यातमा । ज्ञान अथोध
 ताजायेरे वी० ॥ ५१ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल० मुंजीपरमपरमात्मनेज्ञान० ॥

॥ इतिश्री सप्तम ज्ञानपद पूजा ७ ॥

॥ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्र नों पूजो धरी उमेद ।
 पूजन अनुभव रस मिले । पातिक होय उ
 छेद ॥ १ ॥

॥ ठंद ॥

शारा हिया खडिअ सक्तिअस्स । नमो
 नमो सयम वीरिअस्स । सज्जायणा संग

निवहि अस्स । निव्वाण दाणाइं समुज्जय
 स्स ॥ १ ॥ फलै जेह संपूर्स थी तत्तकालं ।
 सुणाणंपि सर्वात्मजावे विञ्जालं । जिणें अाद
 स्यो जे प्रयत्नें करीनें । दियो लोक नें जे
 अनुग्रह धरीनें ॥ २ ॥ ऊर्वे जेहथी रंकलोको
 पि पूज्यो । गुणश्रेणि थी दीपतो जेम सू
 र्यो । स्वकीये सुजेदै करी जे विचित्रं । जयो
 ते सदा लोक मध्ये चरित्रं ॥ ३ ॥ बली ज्ञा
 न फल ते धरिये सुरंगें । निरायंसता द्वार
 रोधै प्रसंगे । ज्ञवांजोधि संतारणे यान तु
 ल्यं । धरूं तेह चारित्र अ्प्राप्त मूल्यं ॥ ४ ॥
 होइं जास महिमा थकी रंक राजा । बली
 छादजांगी जणी होइ ताजा । बली पापरू
 पोपि निःपाप थावे । थई सिद्ध ते कर्म नें
 पार जावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

चारित्र गुण बलि २ नमो । तत्व रमण
 जसु मूलो जी । पररमणीय पणो ठलें । सकल
 सिद्ध अनुकूलो जी चा० ॥

॥ बूटक ॥

प्रतिकूल आप्रव त्याग संयम तत्व धिर

ता दम मयी । शुचि परमखंती मुनींद शम
पद । पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक
जेद धर्म यथाख्यातै पूर्णता । अकपाय अ
कलुप अमल उज्जाल काम कर्मल चूर्णता ॥ १

॥ ढाल ॥

देज्ञ विरतनें सर्व विरतजे । गृही यती
अजिराम । ते चारित्र जगत जयवतो । की
जे तास प्रणामरे ज० ॥ १ ॥ तृण पर जे पट
खंठ सुख ठंठी । चक्रवर्त्तिपण वरिज ॥ ते
चारित्र अखयसुख कारण । ते मै मनमांहि
धरिज रे ज० ॥ २ ॥ ह्रवा रंक पिण जेहनें
आठरि । पूजित इद नरेद । अशरण शरण
तेहिज वारू । वरिज ज्ञान आनद रे ज० ॥
३ ॥ यारमास परिजाये जेहने अनुत्तर सु
म्व अतिक्रमिये । शुक्ल शुक्ल अजिजात्य
तेऊपर । ते चारित्र ने नमिये रे ज० ॥ ४ ॥
चयते आठ कर्म नो सचय । रिक्त करै जे
तेह । चारित्र नाम निरुहै जाण्यु । ते वदू
गुणगेह रे । ज० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

जाणी चारित्र तेश्यातमा । निज स्वना

वमांहि रमतोरे । लेत्रया शुष्ठ अलंकस्यो ।
मोह वने नवि नमतो रे वीर० ॥ १३ ॥

॥ त्रलोक ॥

विमल केव० नुँझी परम परमा० चारि०

॥ इत्यष्टमी कलश पूजा

॥ श्रथ तप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्म काष्ठ प्रति जालवा परतिख अग्नि
समान तपपद पूजो नवि सदा । निरमल
धरिये ध्यान ॥ १ ॥

॥ बंद ॥

कम्महु मुन्मूलन कुंजरस्स । नमो नमो
तिव्व तवो नरस्स । अणेग लक्ष्मीण निबंध
णस्स । दुस्सज्ज अत्थाणय साहणस्स ॥
१ ॥ इय नव पय सिद्धिं लक्ष्मि विज्ञा समि
द्धं । पयक्रिय समवग्गं जीति रेहासमग्गं ।
दिशिवइ सुरसारं खोणि पीढा वयारं ।
तिजय विजय चक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ २

विधे जे कस्यो आतमा ऊज्ज वालै । घणा
 कालनी कर्मराशि प्रजाले । अनेका सुलझी
 लहै यत् प्रजावे । कृमायुक्त ए साधु महान
 ठ पावे ॥ ३ ॥ वली वाह्य अश्रितरे नैद जिन
 जिनेद्रा गमे वर्णव्यूं जे श्रितित्तं । श्रनासं
 स्वजावे तिलोके सुबंद्यं । नमू ते प्रमोदे तपः
 पद मनिंद्यं ॥ ४ ॥ इति जिनवरवृंदं चक्तितो
 ये स्तुवति । परमपद निधान मानसे संस्म
 रति । परजव इह वा श्रीपालव न्मानवानां
 प्रजवति किल तेषां चारु कल्याण लक्ष्मीः ॥
 ५ ॥ विकालिक पणै कर्म कपाय टाली ।
 निकाचित पणे बांधिया तेह वाली । कह्यो
 तेह तप वाह्य श्रभ्यतर दुजे दे । कृमायुक्त
 निहेतु दुर्घ्यान येदे ॥ ६ ॥ होइं जास महि
 मा थकी लछि सिछि । श्रवांठक पणै कर्म
 आवरण शुछि । तपो तेह तप जे महानंद
 हेतै । होइं सिछि सीमंतिनी जिम स केतै ॥ ७
 इसा नवपद ध्यान ने जेह ध्यावे । सदानंद
 चिद्ध पता तेह पावे । वली ज्ञान विमलादि
 गुणरं तन घामा । नमो तेह वृदा सिद्धचक्र
 प्रधाना ॥ इम नवपद ध्यावे । परम श्रानद

पावें । नव ज्ञव शिव जावें । देव नर जव
पावें । ज्ञान विमलगुण गावें । श्रीसिद्धचक्र
प्रज्ञावें । सवि दुरित समावें । विश्वजय कार
पावें । ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन तप नमो । वाह्यअभ्यंतर
जेदेंजी । ज्ञातम सत्ता एकत्वता । परपरणित
उक्तेदेंजी ।

॥ त्रुटक ॥

उक्तेदकर्म अनादि संतति जेह सिद्ध प
णोवरें । योगसंगै निद्राआहारटाली । ज्ञाव
अकृयता करे । अंतर मत्सरत तत्वसाधै स
र्व संवरता करी । निजआत्म सत्ता प्रगटजा
वें । करो तपगुण आदरी ॥ १० ॥

। ढाल ॥

इमंनवपद गुण मंजुलुं । चउनिक्षेप प्रमा
णेंजी । सातनये जेआदरें । सम्प्रग् ज्ञानें जा
णेंजी ॥

॥ त्रुटक ॥

निरधार सेतीगुणें गुणनोकरें जेवज्जमान
ए । जसु करणईहा तत्वरमणें थायें निर्मल

ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता जलो चेतन सकल
सिद्धी अनुसरें । अक्षय अनंत महत चिदधन
परम ध्यानदता वरें ॥ १ ॥

॥ कलशं ॥

इम सखल सुख कर गुण पुरंदर सिद्धचक्र
पदावली । सविलब्धि विज्ञा सिद्धि मंदिर
त्रिविक्र पूंजो मनरली । उवळाय वर श्री राज
सागर ज्ञान धर्म सुराजता । गुरुदीपचंद सु
चरण सेवक देवचंद सु शोभता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिजंज्ञानें सयुत । ते नव मुक्ति
जिणद । जेह आदरें कर्म खपेवा । ते तप सुर
तरु कंदरे ज० ॥ १ ॥ करम निकाचित पिण
क्षयजावें । क्षमा सहित करंतां । ते तप नमि
ये तेह दिपावें । जिन शासन उजवाले रे ज०
२ ॥ आमोसाहि पमुहा बजालछी । होइं जा
स प्रजावें अष्ट महा सिद्धि नव निधि प्रग
टे । नमिये तेह प्रजावें रे ज० ॥ ३ ॥ फल
शिव सुख मोटू सुर नरवर । संपति जेहनूं
फूल । ते तप सुरतरु सरिखी वडुं । सम
मकरद अमूल रे ज० ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मां

हैं पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथे । ते
तप पद त्रिकरण नित नम्रिये । वर सहाय
शिव पंथे रे ज० ॥ ५ ॥ इम नव पद थुण
तो तिहां लीनो । ऊवो तनमय श्री प्राल
सुजस विलास वे चौथे खंठे । एह इग्यार
मी ढाले रे ज० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधे संवरी । परणित समता योगे रे
तप ते एहिज आतमा । वरते निज गुण योगे
रे वी० ॥ १ ॥ आगम नो आगमतणो । ज्ञाव
ते जाणो साचो रे । आतम ज्ञावे थिर ऊवो
पर ज्ञावे मत राचो रे वी० ॥ २ ॥ अष्ट स
कल समृद्धिनीं । घटमांहे रिछी दाखी रे ।
तिम नवपद रिछ जाणज्यो । आतमराम वे
साखी रे वी० ॥ ३ ॥ योग असंख्य कुं जिन
कह्या नवपद मुख्य ते जाणो रे । एह तणे
अवलंब ने । आतम ध्यान प्रमाणो रे वी०
४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चौथे खंठे पूरी
रे आणी वाचक जस तणी । कोइ न रही
अधूरी रे वी० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० नुँझी तपसे ॥

॥ इति तप पद पूजा ॥ १ ॥

॥ इति वृहन्नवपद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपद जी की श्रारती ॥

जय जय जग जन वंदित पूरण सुरतरु
 अजिरामी । आत्म रूप विमल करतारक
 अनुभव परिणामी ज० ॥ १ ॥ जय २ जग
 सारा । नविजन आधार ॥ श्रारति पार
 उतारा । सिद्ध चक्र सुख कारा ज० ॥ २ ॥ जग
 नायक जग गुप्त जिणचंदा । नज श्री नज
 वता । आत्मराम रमा सुख नोगी । सिद्धा ज
 वंता ज० ॥ ३ ॥ पचाचार दिये आचारज
 युगवर गुण धारी । धारक वाचक सूत्र अ
 रथना पाठक नव तारी ज० ॥ ४ ॥ सम
 दम रूप सकल गुण धारक मोटा मुनि राधा
 दरसन नाण सटा जय कारक । सजम तप
 गाया ज० ॥ ५ ॥ नवपद सार परम गुरु
 नापै । सिद्धचक्र जयकारी । इह नव पर

नव रिधि सिधि दायक नव सायर वारी ॥
 ज० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक जस गावे मन
 बंछित पावे । श्री जिन चंद चरण परि पूजक
 शिव कमला पावे ज० ॥ ७ ॥

॥ इति नवपद श्रारती संपूर्ण ॥



॥ अथ नवपद लघु पूजा ॥



उय्यन्नसन्नाणमहोमयागं । सय्याहिहेरास
 णसंठिष्णणं ॥ सहस्रणाणंदियसज्जाणणं । न
 मोनमो हीउसया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंतसं
 तप्रमोदप्रधानं । प्रधानाय नव्यात्मने ज्ञा
 स्वताय । थया जेहना ध्यानथी सौख्यनाजा ॥
 सदा सिद्ध चक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या
 कर्म दुम मर्म चकचूर जेणें । नलान्नच्य नव
 पद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना नव्य ज्ञा
 वें त्रिकाले । सदा वासियो आतमा तेण का

ले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करी
 नें । दिये देशना नव्य ने हित धरी ने ॥
 सदा आठ महापाणिहेरें समेता ॥ सुरे सें
 नरे से स्तव्या ब्रम्ह पूना ॥ ४ ॥ कस्याघा
 तिया कर्म च्यारे अलग्गा । नवो पग्रही
 च्यार क्रे जे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याण
 के सौप्य पामें । नमो तेह तीर्थकरा मोक्ष
 कामें ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर
 ध्यान ॥ अरिहंत पद पूजा करी । तिज र
 सक्ति प्रमाण ॥

॥ ढाल ॥

तीजे नव विधि सों करी । बीसस्थानक
 तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थकर वांधियो ।
 समकित सुधमन धरिने रे ॥ १ ॥ अरिहंत
 पद नितवदिये करम कठिन जिमबंछिये रे
 अं० ॥ जनम कत्याणकनें दिने । नारकीसु
 खियायावें रे । मतिश्रुत अवधिविराजता । ज
 सुजपमकोई नावे रे अ० ॥ २ ॥ दीहालीधी
 सुजमनें । मनपर्यत्र आदरियो रे ॥ तपकरि

कर्मखपायनें । ततखिणकेवल वरियोरेअ० ३
 चोतिस अतिसय सोजता । वांणीगुण पे
 तीसारे ॥ अठदस दोष रहितथई । पूरेंसंव
 जगीसो रे अ० ॥ ४ ॥ मनतन वयण लगा
 यनें । अरिहंत पद अाराधै रे ॥ तेनरनिश्च
 यथीसही । अरिहंतपदवी साधे रे अ० ५

॥ उलोक ॥

अथाष्ट दलमध्यावज कर्णिकायां जिने
 श्वरान् अविर्भूतो लसद्दोधा नावृतः स्थाप
 याम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेषदोषे धनधूमकेतू ।
 नपार संसार समुद्रसेतून् ॥ यजेसमस्ता तिस्र
 यैक हेतून् । श्रीमज्जिना नंबुजकर्णिकायां २
 नृंजीअर्हण्यो नमः ॥ इति अरिहंत पूजा ॥

॥ अथ सिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धनी कीजे दिल खुसियाल
 असुन्न कर्म दूरें टलें फलें मनोरथ माल ॥ १
 सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । नमो नमो णंत
 चउक्कयाणं । करी अाठकर्मदुर्ये पार वाम्या
 जरा जन्म मरणादि त्रय जेण वाम्या ।
 निरावर्ण अात्म स्वरूपें प्रसिद्धा । थया पा

रपामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिजागो न देहा
वगाहात्म प्रदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णा
दि लेशा । सदानंत सौण्या श्रिता ज्योति
रूपा । अनावाध अपुनर्नवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल करमनों द्य करी । सिद्ध अण्व
स्या पाई रे गुण इगतीस विराजता । उषम
जस नहि काई रे ॥ ६ ॥ मनसुध सिद्धपद
वंदिथे क० अं० । जनममरण दुख नीगम्या
गुहातम चिदरूपी रे । अनंतचतुष्टय धारता
अव्यावाध अरूपी रे म० ॥ ७ ॥ जास ध्या
न जोगीसरू । करे अण्व्या जापें रे । जव २
सच्या जीवकै । कठिन करम ते कापें रे ॥
म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरता सिद्धनो पूजंतां
मन रागे रे । अविचल पदवी पाईथे । कह्यो
जिनवर वरु जार्गे रे म० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

तस्यपूर्वं दलेसिद्धान् । सम्यक्तादि गुणा
त्मकान् ॥ निः श्रेयस पदप्राप्तान् । निदधे
नक्तिनिर्जर ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परित्त. प्रण
ष्ट । दुष्टाष्टकर्मा नधिगम्यशुद्धिं ॥ प्राप्तान्तरा

न् सिद्धि मन्तवोधान् । सिद्धान्यजे शांति
करान्नराणां ॥ २ ॥ नुँकी सिद्धेभ्यो नमः ॥
॥ इति सिद्ध पूजा ॥

॥ अथ अचार्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिविआचारिज पदतगी । पूजा करो विशे
ष ॥ मोह तिमिर दूरें हरै । सूऊँ जाव अशेष
॥ बंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । नमोनमो सू
रिसमय्यहाणं । नमोसूरिराजा सदातत्वताजा
जिनेंद्दागमे प्रौढ साम्राज्यनाजा । षट्त्वर्गव
र्गितगुणे शोन्नमाना । पंचाचारनें पालवें सा
वधाना । नविप्राणिनें देशनादेशकालें । स
दा अप्रमत्ता यथासूत्रअालें । जिके शासना
धारदिग्दंतिकल्पा । जगत्ते चिरंजीव जेशु
सृजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

गुणबत्तीसे दीपता । पालै पंचअचारोरे ॥
जिनमारग साचोकहै ॥ युगप्रधान जयकारो

रे । आचारिज पदवदीये क० । सारण वारण
 चोयणा । पङ्क्तिचोयण चौसिद्धारे । नव्यजीव
 समजायवा । देवाने ते दक्षारे आ० ॥ १ ॥
 जिनवर सूरिज आथम्यां । परतिख दीपक जे
 हारे । सकल जाव परगठ करें । ज्ञानमयी ज
 सु देहा रे आ० ॥ २ ॥ विधिसु पूजा साचवें
 ध्यावे निज हित जाणी रे । पावे लघुतर का
 लमां आचारिज पद प्राणी रे आ० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

स्थापयामि ततः सूरिन् दक्षिणेस्मिन् दले
 मले चरतः पञ्चधाचारं पटत्रिंशत् सद्गुणैर्यु
 तान् ॥ १ ॥ सूरिन् सदाचाररतां श्वसारा
 नाचारयतः स्वपरान्यथेष्ट उग्रोपसर्गैक नि
 वारणार्थं मन्थ्यर्चयाम्यक्षतगधधूपैः ॥ २ ॥
 नैकीं सूरिभ्योनमः ॥ इति आचार्य पद पूजा ॥
 ॥ अथ उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोजित
 गात्र ॥ उवजायापद अरचिये । अनुभव रस
 नो पात्र ॥ १ ॥

॥ ढंद ॥

सुत्तल्यवित्यारण तय्यरणं । नमो नमो वा
यग कुंजराणं । नहीसूरि पिणसूरिगुणनें सु
हाया । नमुं वाचकाल्यक्त मद मोहमाया । व
लीद्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधा
ने निरुद्धान्निमाने । धरै पंचनें वर्गवर्गित गु
णौघाः प्रवादी द्विपोच्छेदनेतुल्यसिंहा । गुणी
गच्छ संधारणे स्तंननूता । उपाध्याय तेवंदिये
चित् प्रनूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशांगी वांणी वदे । सूत्र अर्थ विस्त
रै रे । पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति
नित धारै रे ॥ १ ॥ श्रीउवकाया वंदीये क०
आं० ॥ दायक आगम चावना । जेदनावयु
त सारी रे । मूरखकुं पंफित करै । जगतजंतु
हित कारी रे ॥ २ ॥ शीतल चंद किरण समी
वांणी जेहनी कहिये रे । तेउवकाया पूजतां ।
अविचल सुखला लहीये रे श्री० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

द्वादशांग श्रुता धारान् । शास्त्राध्ययन
तत्परान् ॥ निवेश्याम्युपाध्यायान् । पवित्रे

पत्रिचमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्य निशंप्र
 शांत्यै । पठतिये न्यानपिपाठयति ॥ अध्या
 पकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता न्पवित्रान्परि
 पूजयामि ॥ २ ॥ नुँझी उपाध्यायेज्यो नमः ।
 ॥ इति उपाध्याय पूजा ४ ॥

॥ अथ साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनज्ञणी । सावधानथया
 जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां । निरमलथार्ये
 देह ॥ १ ॥

॥ बंद ॥

साहूण संसाहिय सजमाणं । नमो नमो
 सुद्ध दयादमाणं ॥ करैसेवना सूरिवायग गणीं
 नी । कहु वर्णना तेहनीसी मुणीनी । समेता
 सदा पचसमितित्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नही का
 भजोगेपुलिप्ता । वलीवाह्य अच्यंतरें ग्रंथि
 टाली । ज्ञयेमुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ।
 सुजाष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुसाधुने ते
 ह निज पापटाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सकलविषय विषवारनें । श्यातमध्यानेंरा
 तारे । उपशम रसमांजीलता । निजगुणज्ञा
 नें माता रे ॥ १ ॥ हित धरि मुनिपद वंदिये
 क० श्रां० । रतनत्रयी श्याराधतां । षट्का
 या प्रतिपालै रे । पंचेद्धी जीपें सदा । जिन
 मारग उजवालै रे हि० ॥ २ ॥ गुण सत्ता
 वीस अलंकस्या । पंच महाव्रत धारी रे ।
 द्वादशविध तपश्यादरै । चिदानंद सुखकारी
 रे हि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हचरिज धरै ।
 करम महा जट जीत्या रे । एह्वामुनि ध्यावें
 सदा । तेनरजगत विदीता रे हि० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् । शुभ्रध्यानैक मा
 नसान् ॥ उदक्पत्रगतान्नित्यं साधून्बंदामि सु
 ब्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं । स
 त्यंतपोद्वादशधाशरी रे येषामुदक् पत्रगतान्
 पवित्रान् । साधून् सदातान् परिपूजयामि
 २ ॥ नुँजी सर्वसाधुज्यो नमः ॥ इति साधु
 पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शन पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर ज्ञापित शुद्धनय । तत्वतणी पर
तीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा । आदरिये शु
जरीत ॥ १ ॥

॥ ठंड ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स । नमोनमो नि
म्मलदसणस्स ॥ विपर्यासहो वांसनारूप मि
ध्या । टलै जे अनादी अवै जेम पथ्या ॥
जिनोक्ते ज्ञवें सहजथी शुद्ध ध्यानं । कहिये
दर्शनं तेह परम निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञा
न मज्ञानरूप । चरित्रं विचित्रं जवारण्य कूपं
प्रकृति सात उपजामक्ये तेहहीवें । तिहांआ
परूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सुगुरू सुदेव सुधर्मनी सरदहणा चित ध
रियें रे । सात प्रकृतिनो दाय करी । दायक
समकित वरियें रे ॥ १ ॥ दरसण पद नित
वदीये क० आं० । इण विन ज्ञान निफल
कह्यो । चारित निफल जायें रे । सिव सुख
जे विण नां मिलें । बज्ज संसारी थाये रे ॥
द० ॥ २ ॥ सतसठि जेदें सोजतो । अज

रामर फल दातारे । जे नर पूजै जाव सुं ते
पामें सुख सातारे द० ॥ ३ ॥

॥ उलोक ॥

जिनेंद्रोक्त मतं श्रद्धा लक्षणं दर्शनं यजे
मिथ्यात्व मथनं शुद्धं । न्यस्त मीज्ञान सह
ले ॥ १ नुँझी सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति
दर्शन पद पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप
मांहि । श्याराधीजे शुद्ध मनें । दिन दिन श्च
धिक उठाहि ॥ १ ॥

॥ ठंड ॥

अन्नाण संमोह तमो हरस्स । नमो नमो
नाण दिवायरस्स । ऊर्ये जेहथी ज्ञान शु
द्ध प्रबोधं । यथा वरणनासे विचित्रं विबो
धं ॥ तिणें जाणिए वस्तु षड्द्रव्य जावा ।
नहोवें वितल्या निजेका स्वजावा ॥ ऊवें पंच
मत्यादि सुज्ञान जेदें । गुरू पास थी योग्य
तातेन वेदें ॥ बलीज्ञेय हेयाउपादेय रूपें ।

लहे चित्तमां जेम ध्वात प्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

ऋद्ध अऋद्ध विचारणा पेय अपेय निर
धारो रे । कृत्य अकृत्य ने जांगिये ज्ञान महा
जयकारो रे ॥ १ ॥ ज्ञान निरंतर बंदिये क० ।
श्यां० ॥ ज्ञान विना जयणानही । जयणा
विन नहि धर्मो रे । धर्म विना शिव सुख
नही । तेविण नमिठैजर्मो रे ज्ञा० ॥ १ ॥ पां
चप्रकारकूँ जेहना । जेदइकावन तासोरे ॥
जाणीनें पूजेसदा । तेलहै केवलखासोरे ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

अत्रोपद्रव्यपर्याय । रूपमेवा वचासकं ॥
ज्ञानमाग्नेय पत्रस्यं । पूजयामि हितावहं १ ॥
इतिज्ञान पद पूजा ७ ॥

॥ अथ चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्रनो । पूजोधरी उमेद ॥
पूजत अनुजव रसमिलें । पातिक होयउवेद

॥ ठंड ॥

आराहिया सांक्रिय सक्रियस्त । नमो २ सं

यमवीरियस्स । ज्ञानफल तेहधरिये सुरंगे ।
 निरायंसता द्वार रोधेप्रसंगे । नवांनोधि सं
 तारणे यानतुल्यं । धसंतेहचारित्र अप्राप्तमू
 ल्यं । कुवे जास महिमा थकी रंकराजा । व
 लीछादशांगी नणीहोय ताजा । वली पाप
 रूपोपिनिः पापथार्ये । थईसिष्ठ तेकर्मनोपा
 र थार्ये ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सर्वविरतिने देशविरतिथी । श्रुणागार सा
 गारी रे । जयवंतो थावोसदा । तेचारित्र गु
 णधारी रे ॥ १ ॥ चारित्रपद नितवंदीये क०
 श्रां० । षट्खंठ सुखतजिआदरे । संयमत्रिव
 सुखदाई रे । सत्तरिजेदै जिनकह्यो । तेश्रा
 दरियेजाई रे चा० ॥ २ ॥ तत्वरमण तसुमू
 लथै । सकलश्राश्रवनो त्यागी रे । विधिसेती
 पूजनक रे । ज्ञावधरी वरुजागी रे चा० ॥ ३ ॥

॥ उलोक ॥

सामायिकादिनि भेदै । उचारित्रं चारुपं
 चधा । संस्थापयामि पूजार्थं पत्रे हिनैर्ऋते
 क्रमात् ॥ १ ॥ नुँजीसम्य गचारित्राय नमः
 ८ ॥ इति चारित्र पद पूजा

॥ अथ तपपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा । परतिख अगनि
समान । ते तपपद पूजोसदा । निरमल धं
रिषेध्यांन ॥ १ ॥

॥ ठढ ॥

कम्महुमुन् मूलन कुजरस्स । नमो रति
सुतवो नरस्स । त्रिकालिक पणें कर्म कपाय
टाले । निकाचित पणे वांधिया तेहवालें ।
कह्यो तेह तप वाह्य अच्यंतर दुजेदें । क
मा युक्ति निर्हेतु दुर्घ्यान वेदें । ऊर्वें जास
महिमा थकी लविध सिद्धि । अवांक्क कपणे
कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तपजे महा
नद हेतें । ऊर्वें सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें

॥ ढाल ॥

निज डच्छा अवरोधीये । तेहिज तप
जिन नाखोरे । वाह्य अच्यंतर जेदधी छद
अ जेदे दाखोरे ॥ १ ॥ अनुपम तप पद
धंदीये क० । आं० । तदजव मोक्ष गामीप
णो । जाणें पिण जिनरायारे । तप कीथा अ
ति आकरा । कुत्सित करम खपायारे अ० ॥ २

करम निकाचित कृय ज्ञवें । ते तप नें पर
 ज्ञावें रे । लवधि अष्टावीस ऊपजे । अष्ट म
 हा सिध पावें रे अ० ॥ ३ ॥ एहवो तप
 पद ध्यावतां । पूजतां चित चाहैरे । अकृय
 गति निर्मल लहै । सज्ज योगिंद सरा हैरे ॥
 अ० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

द्विधा द्वादशधा जित्तं । पूते पत्रे तप
 श्चयं निस्थापयामि नक्त्यात्र । वायव्यादि
 शिशर्मदं ॥ १ ॥ नुँझी सम्पक् तपसे नमः ।
 ॥ इति तप पद पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

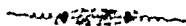
इम नव पद ध्यावे । परम आनंद पावे
 नव नव शिव जावे । देव नर नव पावे ।
 ज्ञान विमल गुण गावे । सिद्ध चक्र प्रजावे ।
 सज्ज दुरित समावे । विश्व जयकार पावे ॥

॥ अथ तवन उपरको कलश ॥

अरिहंत सिद्ध आचार्य उवजाय साधु
 दंसण नाणए । चारित्र तप नवपद थकी
 इहां सिद्ध चक्र प्रमाणए । श्रीपाल राजा सु

रू ताजा लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों । नवि
 जन नजो जिन लान्न जांणी । हिये आंणी ना
 वसों ॥ १ ॥ इय नवपय सिद्धिं । लछि
 विजा समिद्धं । पयक्रिय सर वग्ग । जीति
 रेहा समग्गं । दिसिवड सुर सारं । खोणि
 पीढा वयारं तिजय विजय चक्कं । सिद्ध च
 क्कं नमामि ॥ १ ॥ निः स्वेदत्वादि दिच्याति
 शय मय तनून् । श्री जिनेन्द्रा न्सुसिद्धान् ।
 सम्यक्तादि प्रकृष्टा ष्टगुण गणनृदा चार सा
 रांश्च सूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन
 रचना सुंदराण्या दिसंत स्तत्सिद्धौ पाठका
 नां यति पति सहिता नर्जयाम्य ध्यंदानैः ॥
 १ ॥ इत्य मष्टदलं पञ्च पूरये ढर्हदा दिनि.
 स्वाहातै प्रणवाद्यैश्च पदैर्विधननिवृत्तये ॥
 २ ॥ नुंजी पंच परमेष्ठिने सम्य ग्ञानादि
 षतु रन्वितेभ्यो नमः ॥ इति श्री नवपदस्तु
 तिः ॥ सिद्धचक्र तप महिमा वर्णनम् ॥

॥ इति लघु नवपद पूजा ॥



॥ अथ आरती ॥

ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम ग
 त शासय सुख पावो ॥ अं० ॥ धुरथी अरि
 हंतपद ध्याईजै थिरता ये श्रीसिद्ध थुणीजे ।
 ॥ १ ॥ आचारज तीजे आराधो । सूधै मन
 निज कारिज साधो ए० ॥ २ ॥ उवजाया
 पंचम अणगारा प्रणमंतां पामें नवपारा ।
 ३ ॥ दंशण नाण चरण नलदीपें । तप तप
 तां क्रमअरिनें जीपें ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद
 प्राणी नित थुणतां । गिरवा नरनव सफल
 गिणंता ए० ॥ ५ ॥ सिद्ध चकूनी कीजे सेवा
 मनवंछित लहिये नितमेवा ए० ॥ ६ ॥ अ
 जर अमर सुखदायक साचो । रूढै मनसे नि
 तप्रति राचो ए० ॥ ७ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ विंशति स्थानक पूजा ॥



॥ दोहा ॥

सुखसंपत्ति दायकसदा । जगनायक जिन
 चद ॥ विघनहरण मंगलकरण । नमो नाञ्जि
 नृपनंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासिका । जि
 नयाणी चितधार ॥ विंशतिपद पूजनतणो ।
 कहिस्युं विधि विस्तार ॥ २ ॥ जिनवर अंगें
 जापिया । तपजप विविधप्रकार ॥ विंशति प
 द तपसारिखो । अवर न कोइ उदार ॥ ३ ॥ दा
 नशील तपजप क्रिया । जावविना फलहीन
 जैसें नोजन लवण विन । नहीसरस गुणपोन
 ४ ॥ जेजवियण सेवेंसदा । जावें स्थानकवीस
 तेतीर्थंकर पदलहै । बंदै सुरनरईश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

श्रो अरिहंत पद १ सिधपद २ ध्यावो
 प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो ॥ स्थविरपं
 चमपद ५ पुनरुवजाया ६ । तपसो ७ नाण ८
 दंसण ९ मनजाया ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

मननाव विनया १० वत्र्यका ११ मल । शील
 १२ किरिया १३ जानिये ॥ तप १४ विविध
 उप्तम पात्र १५ घेया । यज्ञ १६ समाधि १७

बखानिये ॥ हितकर अपूरव नाण संग्रह १८ ध
रो मन सुजगीसए ॥ श्रुक्तिन्नक्ति १९ फुनि तीर्थ
प्रज्ञावन २० एह थानक वीसए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

एथानकवीज्ञ जग जयकारा । जपतांलही
ये जिनपदसारा ॥ करम निकंदैवीज्ञ बावीसै
ज्ञाण्या जग तारक जगदीसै ॥

॥ उल्लालो ॥

जगदीस प्रथम जिणंद । जगगुरु चरमजि
नवरजीमुदा । जवतीसरै पद सकल सेवी २०
लही जिनपति संपदा । बावीस जिनवर २२
सकल सुखकर । इंद्रजसु गुनगाइये । इग १
दोय २ त्रिण ३ सज्ज २० पद जपीने । तीर्थप
ति पदपाइये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रिहंतादिक पदसदा । जजिये तपकरि
शुद्ध ॥ अतिनिर्मल शुजयोगता । करिकेतसु
गुणलुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठत्रिक तदुपरै ।
ठविये जिनवर वीस ॥ पूजन उपग्रण मेलक
रि । श्रचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक २ ए पद
तणो । द्रच्यपूज परकार ॥ पंच ५ अष्ट ८ वि

धजानिये । सत्तर १७ इगवित्त २१ सार ॥ ३ ॥
 अष्ट ८ जातिना कलत्र करि । विमलजलै नर
 पूर ॥ पूजो नवियण सज्ज २० मुदा । होय
 सकल दुख दूर ॥ ४ ॥ सोहै सज्ज परमेष्टि मै
 जिनवरपद अजिराम ॥ वेद ४ निक्षेपें सम
 रिये । वधते शुद्धप रिणाम ॥ ५ ॥

॥ रागदेशाख । पूर्वमुखसावनं एचाल ॥

सकलजगनायकं । परमपददायकं । लाय
 क जिनपदं विमलज्ञानं । चतुरधिकतीस ३४
 अतिशय अमलवार १२ गुण । वचन पणतीस
 ३५ गुणमणिनिधानं ॥ १ ॥ सुखकरण जिन
 चरण पद्मसेवित सदा । नमर सुर असुर नर
 हृदयहारी । एहजिनवरतणी आण पूरणसदा
 दामजिम जगतजन शिरसि धारी अईयो ॥ २
 जिनपपददरज्ञपारसफरज्ञतेज्जवे । प्रगटनिज
 रूप परिणति विज्ञासं । तजिय वहिरात्म गि
 रिसारता नविलहै । अनुपम आत्म कांचन
 प्रकाशं ॥ ३ ॥ जवड जिनराज पद जाप
 रवि किरणतै । तुरत वज्ज दुरित नर तिमि
 र नाशं । घन चिदानंद वरकंदघन नवि

लहैं । तीर्थकरचरण कमलाविलाश ॥ ४ ॥ वर
 विबुध मणि लही काच लघु शकल कों । ग्र
 हण करिवा कवण कर पसारे । तिम लहीजि
 न चरण शरण शुभ योग सैं ॥ श्वर सुरसरण
 कुण हृदय धारै ॥ ५ ॥ प्रभु तणै पंच कल्या
 केरे दिनै । प्रगट तिज्जं लोकमें झइ उजेरो ।
 नविक देव पाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी
 बांधियो गोत्र जिनराज केरो ॥ ६ ॥ जेह
 त्रिण काल नित नमैं जिन हरखसुं । तेह न
 व जल तिरे जनम तीजें । अधिक नव य
 दि करे । तदपि निश्चय करी ॥ सप्त ७
 वलि अष्ट नव करीय सीकै ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

णमो णंतविन्नाण सहंसणाणं । सयाणंदि
 या सेस जंतू गणाणं । नवं नोज विठेयणे
 वारणाणं । णमो वोहियाणं वराणं जिणाणं
 ८ ॥ ॐंजी श्रीं अर्हंभ्यो नमः ॥

॥ इति प्रथमपदे श्रीजिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तनु त्रिन्नाग के घटन ते ॥ घन श्वगा
 हन जास । विमल नाण दंसण कियो । लो

कालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनासी अप्रमित
 अचल । पदवासी अविकार । अगम अगो
 चर अजर अज । नमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥
 ॥ राग सौरठ कुंदकिरणशाशिजजलोरेदेवा ॥

अनुभव परमानंदसुं रे बाला । परमात्म
 पद बंदो रे । करम निकंदो बंदिनें रे वा० ।
 लहि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पण
 शतर बली रे वा० । समयांतर अणफरसी रे
 द्वय सगुण परजायना रे बाला । एकसमय
 विध दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय अजु गति
 करी रे बाला । जण परमपद रामी रे । ज्ञांजै
 सादि अनंत रे वा० । निरुपाधिक सुख धामी
 रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे बाला ।
 सिद्ध सकल सुख कारी रे । विमल चिदानं
 द घन थयारे बाला । वर इकतीस गुण धारी
 रे ॥ ४ ॥ उत्पन्नता वलि विगमता रे बाला
 ध्रुवता ३ त्रिपदी सगें रे । प्रभु मैं अनंत च
 तुष्कता रे बाला । सोहें शमकूम जगें रे ॥ ५ ॥
 पनर १५ जेद ए सिद्ध थयारे बाला । सह
 जानंद स्वरूपी रे । परम ज्योति मैं परिण

म्यारे वाला । अव्याबाध अहूपी रे ॥ ६ ॥
 जिनवर पिणप्रणमै सदारे वाला । एहनें दीक्षा
 अवसरें रे । तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वा
 ला । कंठे धरिये सुपरै रे ॥ ७ ॥ हस्ति पा
 ल ज्ञवि जगतिसुं रे वाला । सिद्ध परम पद
 जजिनें रे । पद श्री जिन हरखे लह्यो रे वा
 ला । पर गुण परणति तजिनें रे ॥ ८ ॥

॥ काच्यं ॥

लोगगजागोपरि संठियाणं । बुद्धाणसिद्धा
 ण मणिंदियाणं । निस्सेस कम्मखय कारगा
 णं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥ ९ ॥ नुंझी
 श्री सिद्धेज्यो नमः ॥

॥ इति द्वितीय पदे श्रीसिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पदतृतीय प्रवचन नमो । ज्युंनज्जमो संसा
 र ॥ गमो कुमति परिणमनता । दमो करण
 जयकार ॥ १ ॥ जैसे जलधर वृष्टितें । अखि
 ल फलद विकसाय ॥ तैसें प्रवचन जक्तितें । शु
 न्न परिणति उलसाय ॥ २ ॥
 ॥ श्रीराग जिनगुणगानंश्रुतश्चमृतं एचालमै ॥

प्रवचन ध्यानं सुखकरण । परिहरिये सज्ज
 विषय विकारं । करिये प्रवचन अचरण प्र०
 १ ॥ सप्त ७ अगिन्नुपित एप्रवचन । स्यादवा
 द मुद्राअरणं । सप्त नयात्मक गुणमणि अ
 गर । बोधबीज उत्पति करणं प्र० ॥ २ ॥
 जैसे अमृत पानकरणते । ज्वे सकलविष संह
 रण । तैसे प्रवचन अमृतपानं । कुमति हला
 हल प्रविसरणं प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनको आधे
 यकहीये । सकलसंघ तसु अधिकरण । तिण
 एसंघ चतुरविध प्रवचन । एपद अखिल कलु
 षहरण प्र० ॥ ४ ॥ यदि अविजन तुमएचा
 हतुहै । मुगति रमणि जन वज्ञ करणं । कर
 ण तीनइक करि तद करिये । प्रवचन पदसम
 रण धरणं प्र० ॥ ५ ॥ जिनवरजी पिण एती
 रथने । प्रणमें मध्य समवसरण । अजल ता
 रण तरणि समानं । ए तीरथ अशरण शरण
 प्र० ॥ ६ ॥ जिमजरतेसर संघअगति करि ।
 लहियो पुण्यफला चरण । चक्रीपद अनुअ
 वि बलि शिवपद । लीध करिय क्रम निर्जर
 णं प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संजवजिन हरषेकरि
 आराधी प्रवचन चरणं । करम निकंद थया

जगदीसर जिनप रमाउर आज़रणं प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स । दुरकंधया सग्ग
दिवा यरस्स ॥ अणंतजीवाण दयागिहस्स ।
णमो णमो संघचउद्धिहस्स ॥ १ ॥ नुँङ्गीश्रीप्र
वचनाय नमः ॥ इति तृतीयपदे श्रीप्रवचन
पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पदचतुर्थ नमियेसदा । सूरीसर महाराज
सोहम जंबू सारिसा । सकल साधु सिरताज
१ ॥ सारण वारण चीयणा । पफिचीयण कर
तार ॥ प्रवचनकज विकसायवा । सहस कि
रण अवतार ॥ २ ॥

॥ राग रामगिरी गात्र लूहैं ॥

आचारिज पद ध्याइयेरे वाला । तासवि
मल गुण गाइये ॥ पाइये हांहीरे वाला पाइये
जिनपति पद जगशिर तिली रे श्या० ॥ १ ॥
जिन शासन उजुवालतारे वाला । सकलजी
व प्रतिपाल तां ॥ पालतां हां० ॥ चरण क
रण मगचाल तां श्या० ॥ २ ॥ सूरी सकल
गुण सोहता रे वाला । सुरनर जन मनमोह

ता । मोहता हां० ॥ नवियण नें पफिवोह ता
 आ० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला स
 जलजलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो०
 सूरि सकल सिर ढाजता आ० ॥ ४ ॥ उप
 देशामृत वरसतारे वाला । दुरित तापसज्ज
 निरसिता ॥ निर० हांहो० ॥ परमात्म पद
 फरसता आ० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा
 रे वा० जग वांधव जग हितकराहि० हांहो
 स्वपर समय विउ गणधरा आ० ॥ ६ ॥ प
 द श्रीजिन हरपे ग्रह्योरे वाला सूरीसर पद
 तप वह्यो ॥ त० हांहो० ॥ पुरुषोत्तम नृप
 शिवलह्यो ॥ आ० ॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केली तरु सिधुराणं । सूरीसराणं
 मुनिवधुराणं ॥ धीरत्तसतज्जिय मंदराणं । ण
 मो सया मगलमंदिराणं ॥ १ ॥ नुंझी श्रीआ
 चार्येज्योनमः ॥ ४ चतुर्थपदे आचार्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्विविध धविर जिनवर कहा ॥ द्वय
 नाव परकार । लौकिक लोकोत्तर वली । सु
 निये जेद विचार ॥ १ ॥ जनका दिक लौकि

क थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचम पद
में जानिये । द्वितीय थविर अधिकार ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥

नित नमिये थविर मुनी सरा । पंचमहा
व्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हित
करा नि० ॥ १ ॥ संयमयोगें सीदत बालक
ग्लाना दिक सज्ज मुनिवरा । एहनें उचित सहा
य दियणते । वारे एहनां दुखनरा नि० ॥ २ ॥
पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थविरा । वीस स
साठ समोपरा । वयधर समबया धिक पा
ठक । एह थविर गुण आगरा नि० ॥ ३ ॥
तीजे अंग कह्या दस थविरा । रत्न त्रयीनां
गुण धरा । ते इह निर्मल ज्ञाव ग्रहिवा न
विक सरोज दिवाकरा नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजल
धिसम अतिहि गज्जीरा । सुरगिरि गुरु धीर
ज धरा । शरणागत तारणता धारा । ज्ञान
विमल जल सागरा नि० ॥ ५ ॥ श्रुत तप
धीरज ध्यान धरणते । द्रव्यादिक ज्ञाता व
रा । तेह स्वरूप रमण कह्या थविरा । नही
य धवल केजांकुरा नि० ॥ ६ ॥ एह थविर
पद सेवी जगतें । पदमोत्तर बसुधेसरा । पद

श्री जिन हरखे तिण लहियो । मुनिवर
कुमुद निसाकरा नि० ॥ ७ ॥

॥ कलत्र ॥

सम्पत्सयम पतित नविजन । अतिहि
थिर करता नला । अवगुण अदूषित गुण
विनूषित । चंद्र किरण समुज्जला । अष्टाधि
कादश सहस शीलंग । रथ सचिर धारा धरा
नव सिंधु तारण प्रवर कारण । नमो थविर
मुनीसरा ॥ ८ ॥ नुँझीश्री स्थविराय नमः ॥

॥ इति पचमपदे स्थविर पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पुवरनाण दरसण चरण धारक यतिधूम
सार ॥ समितिपत्र त्रिण गुपतिधर । निरुपम
धीरज धार ॥ १ ॥ चरण कमल जेहनां नमै
अहनित्रि सुरनर राय ॥ जफतागिरि दारण
कुलित्र । जय जय सिरि उवजाय ॥ २ ॥
॥ राग नैरव पचवरणी अंगीरचो० एचाल ॥
नावधरि उवजाया बंदो विजयकारी ।
श्री उवजाय परमपद बंदी । लहो जिनपद
अतिशय धारी जा० ॥ १ ॥ कुमती मदतरु

नृज्जन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी ॥
 अंग दुबालस नृणै नृणावे । शिष्य नृणी चि
 तहित धारी ज्ञा० ॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदे
 श दिश्यण तै वाचक श्रुति विमलाचारी ॥
 नृव तीजै श्रुत सुख पावे । सुर श्रुसुरेन्द्र
 मनोहारी ज्ञा० ॥ ३ ॥ हय गय वृष पंचान
 न सरिखा । करमकंद वरतर वारी । वासु
 देव वासव नृप दिनकर । विधु नृकारि तु
 लाधारी ज्ञा० ॥ ४ ॥ जंबू सीता नदि कांच
 न गिरि । चरमजलधि नृपम नृारी । एनृपम
 बज्रश्रुतनी जाणों उतराध्ययने कही सारी
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रुमल पंचविंशति गुण मणि
 निधि सकल नृवन जन उपगारी । संश्रय
 तिमिर हरण वासर मणि । पाप ताप आ
 तप वारी ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रवर संख पय नृरि
 यो सोहै । तिमए ज्ञान चरण चारी । महेंद्र
 पाल पाठक पद सेवी । लहियो जिन पद
 विजितारी ज्ञा० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सव्होहि बीजं कुर कारणणं । णमो णमो
 वायग वारणाणं । कुब्रोहि दंती हरिणेसरा

ण । विग्धोघ सताव पयो हराणं ॥ ८ ॥
 नुँझी श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ इति षष्ठ
 पदे उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जाणें जिनवाणी सरस । स्याद वाद गुण
 वंत ॥ मुनि कहिये शिव पंथनें । साधें साधु
 कहंत ॥ १ ॥ श्रमता रस जल ऊलता । वि
 सदानंद सुरूप ॥ तिण पाम्बो पद सप्तमें ।
 नमो नमो मुनि नूप ॥ २ ॥

॥ राग गुफ्र मिश्रित नीममल्हार मेघवरसे ॥
 ॥ नरी पुष्य वादल करी एचाल ॥

—०—

शक्ति धरि सातमें पद नजो मुनिवरा ।
 सुखकरा विजित इन्द्रिय विकारा ॥ गुण स
 तावीस नूपण करी सोजिता । क्कोजिता वि
 कट क्रम सुजट सारा न० ॥ १ ॥ चरण सत्त
 रि परम करण सत्तरि धरा । शिव करण
 नाण किरिया प्रधाना ॥ प्रति दिने दोष झा
 हारना वरजिता । सप्त ७ चालीस ४० यति
 धूम निधाना न० ॥ २ ॥ मदन मद नंजता
 कुमति जन गंजता । नक्त जन रंजता क्कांति

न्नरिया ॥ सुमत धरिया सदा चरण परिया
 जना । तारिया ज्ञान गंजीर दरिया न्न० ॥
 ३ ॥ तृणमणी सम गिणें चतुर विध धर्मना
 परम उपदेश दायक उदारा ॥ बहिरञ्च्यंतर
 जिदा वार विध श्रुति कठिन । तपतपें सकल
 जीउ श्रुतयकारा न्न० ॥ ४ ॥ वलि श्रुठा
 वीस मनहरण गुण लवधि निधि । सातमें
 बठ गुण ठाण वसिया । सप्त न्नय वारका
 प्रवरजिन आगन्या । धारका स्वगुण परिण
 मनरसिया न्न० ॥ ५ ॥ पंच परमाद कल्लोल
 ता कुल महा । पार संसार सागर जिहाजा
 विविध नव वाफि युत शील व्रत के धरा
 मधुर निज वाणि रंजित समाजा न्न० ॥ ६ ॥
 कोफि नव सहस थुणियें महामुनि वरा । वी
 रजद् जिम करिय साधु सेवा ॥ परम पद
 जिन हर्षसुं ग्रह्योतसु तणा । चरण कजयुग
 नमें सकल देवा न्न० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

संतज्जिया सेस परीसहाणं । निस्सेस
 जीवाण दया गिहाणं ॥ सन्ताण पज्जायतरू
 वणाणं । नमो नमो होय तवोधणाणं ॥ ८ ॥

नुँझी श्री सर्व साधुज्यो नमः ॥ इति सप्तम
पदे श्री साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विमल नाण खर किरण किय । लोका
लोक प्रकास ॥ जीत लही निज तेज से ।
जिण अनंत रविनास ॥ १ ॥ सज्ज संशय
तम श्यपहरे । जय २ नाण दिणदं ॥ नाण
चरण समरण थकी विलय होय दुख दंद ॥

॥ राग घाटो मेरो मन बस करलीनो ॥

॥ जिनवर प्रभु पास एचाल ॥

— ० —

ज्ञावें ज्ञान बंदन करिये । शिव सुख तुरु
कंद ॥ जिन चन्द्र पद गुण धरिये वरिये प
रम श्यानद ज्ञा० ॥ १ ॥ मतिनाण १ श्रुत २
पुनरवधि ३ मन परजय जाण ४ ज्ञा० । लो
कालोक ज्ञाव प्रकासी । वर केवल नाण ५
ज्ञा० ॥ २ ॥ पच ५ ए इकावन ५१ जेदैं ।
कह्यो जिनवर ज्ञान ॥ जग जीव जफता छेदैं
ज्ञानामृत रस पान ज्ञा० ॥ ३ ॥ विन ज्ञा
न धीकी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥
जहाजह प्रगट ये करिये । जिम पय जल

हंस ज्ञा० ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया
 करी फल दातार ॥ ऊवो ज्ञान चरण रसी
 ला । लहो जव जल पार ज्ञा० ॥ ५ ॥ ज्ञाना
 नंद अमृत पीधो । * नरतेसरराय ॥ तिणसे
 अमृत पद लीधो । सुरपति गुण गाय ज्ञा०
 ६ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेसै । जये जिन
 महाराज ॥ सोहें ज्ञान ये त्रिजुवन में । स
 ऊ गुण सिरताज ज्ञा० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

बद्ध पज्ञाय गुणुक्करस्स । सथा पयासी
 करणी सुरस्स ॥ मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स
 नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ नुँङ्गी
 श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति अष्टम पदे श्री
 ज्ञान पूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

दरज्ञाण आप्रय धर्मनों । एहना षटउप
 मान ॥ दरज्ञाण विणनहि चरणचिद । उतरा
 ध्ययनें जान ॥ १ ॥ जिन दरसण फरस्यो
 जलो । अंतर मुज्जरत मान ॥ अरुपुगल परि
 यट रहें । तसु संसार वितान ॥ २ ॥

॥ राग कामोद चंपक केतक मालती एचाल ॥

जिनदरसन मुकुमनवस्योए । अडुर्यामन
 वस्योए । उपजत परमज्ञानंद । जिनदरसन
 दरसनदिये । विमल नाण तरुकंद ॥ १ ॥ द
 रसन मोह रिपु जीतिया ए अ० । दरसन
 उलसंत । दरसन घट परगट ह्वां । नविय
 ण नव न नमंत ॥ २ ॥ जिनवर देव सुगुरु ब्र
 तीए । केवलि कथित जिनधर्म । तीन तत्व
 परिणति रमें । ते दरसन करेशर्म ॥ ३ ॥ जिन
 प्रभु वचनो परिसदाए अ० । थिर सरदहण
 धरत । इण लक्षण तै जानिये । समकित वंत
 महंत ॥ ४ ॥ इग १ दुग २ ति ३ चउ ४
 शर ५ दस १० विहाए । सतसठि ६७ जेदवि
 चार । वलि पररीति समकित जणयो दुव्य
 ज्ञाव परकार ॥ ५ ॥ दुव्येजिन दरसन कह्यो
 ए । ज्ञावे समकित सार । दुव्यत दरसन ज्ञा
 वतो । दरसन कारण धार ॥ ६ ॥ दुव्यदरस
 ण यदिगतवलीए अ० । तदपि उत्तर हित कार
 ज्ञाय् नव जिनदरसणे । पायो दरसन सार ७ ॥
 दरसन विण किरियाहताए अ० । अक विना

जिम बिंदु । वलिहणियों विनचंद्रिका । वा
 रमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतो
 ए श्र० । दरक्षण पद अन्निराम । पद श्री
 जिम धस्यो ॥ बधतै शुभ्र परिणाम । ८ ।

॥ काव्य ॥

अपंत विन्नाण सुकारणस्स । अणंत सं
 सार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंस
 णस्स । णत्तो २ निम्मल दंसणस्स ॥ १ ॥ नुंझी
 श्री दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ इति नवम पदे
 श्री दर्शन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विनय नुवत्त रंजन करै । विनये जस वि
 सतार ॥ विनय जीव नूषित करै । विनये ज
 य जय कार ॥ १ ॥ विनय मूल जिनधर्मनों ।
 विनय ज्ञानतरु कंद ॥ विनय सकलगुण से
 हरो । जय जय विनय सजंद ॥ २ ॥

॥ रागसामेरीपूजोरीमाईजिनवरअंगसुगंधै ॥

ध्यावोरीमाई विनय दशम पद ध्यावो ।
 पंचधनेद दस १० विध तेरस १३ विध । बा
 वन ५२ नेद गणेशै ॥ बासठि ६२ नेद कहा

आगम में । विनयतणा सुविसेसे ध्या० ॥ १ ॥
 तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५
 किरिया ६ धर्म ७ वरनाणा ८ ॥ नाणी ९
 आचारिज १० मुनिधविरा ११ । पाठक १२
 गणि १३ गुणजाणा ध्या० ॥ २ ॥ ए अरिहादिक
 तेरस १३ पदनो । विनय करै जेनावें । ते
 तीर्थंकर पद अनुन्नविनें । अमृतपद सुखपावें
 ध्या० ॥ ३ ॥ जिम कंचन मै मृदुगुण लाजै ।
 नहीय कालिमा पावें ॥ तिण ए सकल धातु
 मै उत्तम । नाम कल्पण कहावें ध्या० ॥ ४ ॥
 तिम विनयी मै वै मृदुता गुण कुमति कठि
 नता नासें । कृशनादिक लेख्यानी मलिनता
 जाये विनय गुण जासे ध्या० ॥ ५ ॥ दोय स
 हस अस अधिक चिज्जतर । देववदन निरधा
 रो । गुप्त वदन विधि च्यार सै वाणुं ४९२
 जेद करी उरधारी ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादि
 कनो मन रंगें । विनय चरण शुभ ध्यायो ॥
 धन नामा जविजन शुभ योगें । पद जिन
 हर्षे पायो ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काच्य ॥

आणंदया सेसजगज्जाणस्स । कुदिंदु पादा

मलता चणस्स ॥ सुधम्मं जुत्तस्स दयासयस्स
णमोणमो सङ्घिणया लयस्स ॥ ८ ॥ नुँङ्गीश्री
विनयाय नमः १० इति दशमपदे श्रीविन
यपूजा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नितनमुं । देज्ञसरव चारित्र
पंकमलिनता दूरकरि । चेतनकरे पवित्र ॥ १ ॥
एह चरण सेवन करें । रंकथकी सुरराय ॥
तीन जगतपति पददिये । जसु सुरनर गुण
गाय ॥ २ ॥

॥ राग सारंग बावन चंदनघसिकुम० एचाल ॥

चरण सरण मुळमनहस्यो । सुखकरण ह
रण घनपापए । हांही रे वाला ॥ एहचरण ज
लधरहरें । अज्ञान तरुणतर तापए हां० १
आठकषाय निवारतां । देज्ञविरत प्रगट्जुवें
खासए हां० । चारकषाय निवारिया । सम
विरत लहै गुण वास ए हां० ॥ २ ॥ इगवा
सर सेव्यो थको । सुधसरव संवरचारित्रए
हां० परमानंद घनपददिये । सुरलोक जनि
तसुखचित्रए हां० ॥ ३ ॥ नवजय तरुगण

वेदिवा । ए संयम निसित कुठार ए हां० ॥
 ज्ञान परंपर करण छै । अमृतपदनों हित कार
 ए हां० ॥ ४ ॥ चरण अनतर करण छै । निर
 वाण तणों निरधार ए हां० । सरव विरति सुध
 चरणसे पामें अरिहंत पद सार ए हां० ॥ ५ ॥
 वरस चरण पर जायमे । अनुत्तर सुख अति
 कम होय ए हां० । सतर १७ जेद चारित्रना ।
 कहिया जिन आगम जोय ए हां० । देना
 थी सम संयम विषे । उज्जलता अनंत गुण
 नाज ए हां० । अरुण देव सेवी चरणनें । ज
 ये जगगुरु जिन महाराज ए हां० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महो दयानं
 द लयाजलस्स । विन्नाण पकेरुह काणणस्स
 णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ बुद्धी श्री
 चारित्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ इति एकादश पदे श्री चारित्र पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी । काम कलश
 अवधार । ब्रम्हचर्य डण सम कह्यो । कामि
 त फल टातार ॥ १ ॥ जिम जोतिसियां र

जनि कर । सुर गण में सुरराय । तिम सज्ज व्र
 त शिर सेहरो । ब्रम्ह चरिज कहिवाय ॥ २ ॥
 ॥ रागकाफी जंगला नला प्रनुगुण वालहाहो ॥

नवन्नयहरणा शिवसुखकरणा । सदान्नजो
 ब्रम्हचाराहो न० ॥ शीलविबुध तसुप्रतिपाल
 नकों । कही जिनवर नववाराहो न० ॥ १ ॥
 दिव्यौदारिक करण करावण । अनुमति विष
 य प्रकारा हो न० ॥ त्रिकरणजोगें ये परिहरि
 ये । नजिये नैद अठारा हो न० ॥ २ ॥ कन
 क कोफिनो दान दिये नित । कनक चैत्यकर
 तारा हो न० ॥ येहथी ब्रम्हचरिज धारकनो ।
 फल अगणित अवधाराहो न० ॥ ३ ॥ सहसचो
 रासी अवण दानफल । शमब्रम्हव्रतफल सारा
 हो न० ॥ विजयसेठ विजयासेठाणी । उन्नय
 पद्म ब्रम्ह धारा हो न० ॥ ४ ॥ नये सुदर्शन से
 ठशीलसें । मुगतिबधू नरताराहो न० ॥ सह
 स अठार शीलांगरथ धारा । धार करो निस
 तारा हो न० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुन्नय तरु
 नंजन । सिंधुर मदमतवारा हो न० ॥ कलह
 कारि नारद रिषिसरिखे । तस्योन्नवजलधि अ

पारा हो ज० ॥ ६ ॥ पञ्चस्काण विरति न
 हि एहमे । ये ब्रम्हव्रत उपगाराहो ज० ॥ स
 कल सुरासुर किन्दर नरवर । धरीय जगति
 हितकाराहो ज० ॥ ७ ॥ ब्रम्हचरिज ब्रतधरन
 रवरके । प्रणमैचरण उदाराहो ज० ॥ दक्षमे
 अगेजणियो नरवर्मा । नरपति गुण श्लाधा
 राहो ज० ॥ ८ ॥ ब्रम्हचरिजब्रत पाल लह्यो
 पद । जिनहरपे ० जयकारा हो ज० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

सग्गा पवग्गग्ग सुहपयस्स । सुनिम्मला
 णंत गुणालयस्स ॥ सव्वव्या नूसण नूसणस्स
 णमोहि सीलस्स अटूसणरस्स ॥ ९ ॥ नुंझीश्री
 ब्रम्हचर्याय नमः १२ इति द्वादशपदे श्रीब्र
 म्हचर्य पूजा ॥ १२ ॥

॥ टीहा ॥

करम निरजरा हेतु है । प्रवर क्रिया गुण
 खाण ॥ जिनशासन नीस्थितिरही । किरिया
 रूपे जाण ॥ १ ॥ जवन मांहि किरियामही ।
 सकल शुद्ध विवहार ॥ प्रवरनाण दरसन त
 णो । शुभक्रिया सिणगार ॥ २ ॥

॥ राग मालवीगौळी सत्र श्रुतिमयन० धूपं ॥

शुद्धध्यान किरिया हृदय धरिनें । धूमस
 कल उरधार रे ॥ श्वात्तरौद्धनी हेतुकिरिया ।
 शुद्धपणवीस वार रे सु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत
 अशस्त्रनटहैं । क्रिया शस्त्र वतंसरे ॥ सुन्नटना
 णी क्रियाशस्त्रै । करयक्रम अरिध्वंस रे सु० २
 ज्ञान सेती वदेंशिवयदि । तेरमें गुणठाणरे ॥
 येकनाणें करि जिनेसर । किमु न लहैं निरवा
 णरे सु० ॥ ३ ॥ जिनप शैलेशीकरण करि ।
 चउदमें गुणठाणरे ॥ सरस संवरचरण करणें
 लहैं पद निरवाणरे सु० ॥ ४ ॥ ये अनंतर अ
 मृतकारण । कह्यो जिनवर ज्ञाणरे ॥ सरवसं
 वरचरणकिरिया । नशिवइण विनुजाणरे सु०
 ५ ॥ येकनाणें इकक्रियामें । नशिव वितरण
 शक्तिरे ॥ कहैं जिनवर उन्नय योगें । लहैंज
 विजन मुक्तिरे सु० ॥ ६ ॥ गरलमिश्रित स
 रसज्जोजन । शुद्धपरिणति धाररे ॥ अमृत
 संयुत तेहज्जोजन । रुचिर परिणति कार रे सु०
 ७ ॥ ज्ञानसहता तेमकिरिया । करिकरें निस
 ताररे ॥ ज्ञानविन किरियानदीयें । मनोमत
 फलसाररे सु० ॥ ८ ॥ ज्ञान परिणत रमीकि
 रिया । तेहकिरिया साररे ॥ त्रयोहरि वाहन

जिनेसर । शुद्धकिरियाधार रे सु० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥

विशुद्ध सद्धान विभूषणस्स । सुलक्षि सं
पत्तिसुपोसणस्स ॥ णमोसदाणंत गुणप्पदस्स
णमोणमो सुक्किरिया पदस्स ॥ १० ॥ तुंझी
श्री क्रियायै नमः १३ इति त्रयोदशपदे श्री
क्रिया पूजा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

शमतारस्स युत तपरुचिर । ज्ञणियो जिन
जगज्जान ॥ शिवसुर सुख चंदनफलद । नंद
नविपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन
दहन । करनविमल तपजान ॥ विपिन धूम
केतनसमो । जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥
॥ रागकल्याण तेरीपूजावनीतेरसमैँएचाल ॥

—**—

मेरीलगी लगन तपचरणे । सकल कुशल
मैँ प्रथम कुशल ए । दुरित निकाचित हर
णे मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधर की जिनचरणे ।
चातक की जल धरणे ॥ जैसे चक्रवाक की
अरुणे । चकोर की हिम किरणे मे० ॥ २ ॥
जिनवर पिण तदभव शिवजाणे । त्रिणचउना

ण सुकरणे मे० ॥ तदपि सुकीमल करण सर
 णने । ठवय कठिन तप करणे मे० ॥ ३ ॥
 कपट सहित तपचरणधरणते । वाञ्छित फल
 नवितरणे मे० ॥ नितएदंज्ञ रहित तपपदके
 सुरपति गणगुण वरणे मे० ॥ ४ ॥ पीठम
 हापीठमुनि मल्लीजिन । पूरव जव तप सर
 णे मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि बंम्नो ।
 जये स्त्रीगोत्रा चरणे मे० ॥ ५ ॥ इठप्रहारी
 पांढव धनकरमी । बंम्नाकरमावरणे मे० ॥
 तपसे शोन्नलही त्रिज्जुवनमें । केवल कमलाज्ज
 रणे मे० ॥ ६ ॥ लाषड्ग्यारह असीहजारा ।
 पंचसयस दिनखिरणे मे० ॥ मासखमण करि
 नंदन मुनिवर । पाभ्यो फलशिव धरणे मे० ७
 तपकरियो गुणरयण संवच्छर । खंधक ज्ञम
 तादरणे मे० ॥ चनुदसहस मुनिमें कह्यो अ
 धिको । धन्नीतप आचरणे मे० ॥ ८ ॥ बहिर
 ज्यंतरजेदे एतप । बारजेद अधिकरणे मे० ॥
 वसने कनककेतु पांभ्यो पद । जिन हरषे ज
 वतरणे मे० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

लक्ष्मीसरोजा वलिता वणस्स । सरूव सं

लग्न सुपावणस्स ॥ अमगलानो कुहदुद्वस्स
णमोणमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ नुँङ्गी
श्री तपसे नमः १४ इति चतुर्दश पदे श्री
तप पूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न
वलिसङ्ग जिन गणधर नमों । चवदैसें वाव
न्त ॥ १ ॥ दानसकल जग वञ्चकरें । दान ह
रें दुरितारि ॥ मनवांछित सङ्ग सुखदिये । दा
न धरम हितकारि ॥ २ ॥

॥ रागसीरठ तेरी प्रीति पिठानी हो प्रभुमें ॥

पनरम पद गुणगाना होजवि पनरम० ॥
ज्ञावधरी करिये मनरगें । परम सुपात्रे दा
ना हो जवि पनरम० ॥ १ ॥ पात्रकह्या द्रव्य
ज्ञाव दुजेदे । द्रव्यलठन एजानाही जवि प० ॥
सर्वोत्तम उत्तमज्ञवे ज्ञाजन । रतनकनक रू
पाना होजवि प० ॥ २ ॥ मध्यम पात्रकही
जे एहवा । ताम्र धातु निपजाना हो जवि प०
पात्रलीहादिक अपरजातिना । तेहजघन्य क
हाना होजवि प० ॥ ३ ॥ ज्ञावपात्रनो लच्छ
न कहियें । सुनियें सुगुण सयाना हो जवि प०

पंचम चरणधरं वलि वरतं । क्षीणमोह गुण
 ठाणाहोत्रवि प० ॥ ४ ॥ रतनपात्र समते स
 र्वोत्तम । पात्रकह्या जिनज्ञाना हो त्रवि प०
 प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर । लाजालाज
 समाना हो त्रवि प० ॥ ५ ॥ तेकांचन त्राज
 न समकहिये । त्रवजल तारन याना हो त्रवि
 प० ॥ सुधमन छादशत्रत दरशनधर । तार
 पात्र समजाना हो त्रवि प० ॥ ६ ॥ शुध स
 मकित धरश्रेणिक परमुख । रह्या अविरति
 गुणठाणा हो त्रवि प० ॥ ताम्रपात्र समएहनें
 कहीये । त्रावी गुणमणि खाना हो त्रवि प०
 ७ ॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टी । लोहादि
 पात्र गिनाना हो त्रवि प० ॥ जिनशासन रंगें
 रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो त्रवि प० ८
 एहनें दान दियांशिव लहिये । एहसुपात्र प
 हिचाना होत्रवि प० ॥ पंचदान दशदान नि
 करमें । अत्रयसुपात्र महिराना होत्रवि प०
 ९ ॥ नरवाहन शुभपात्रदानतें । त्रयेजिन ह
 रष निधाना होत्रवि प० ॥ सालिजद्द वलि
 सुर सुखलहियो । सुरनर करय वखाना हो त्र
 वि प० ॥ १० ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविन्ताण विन्तासरस्स । दुवाल संगी
कमला करस्स ॥ सुलह्वासा जरगोयमस्स ।
णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ नुँज्जी
गौतमाय नमः । इति पचदश पदे सुपात्रदा
नाधिकारे गौतम पूजा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सोलमपदमें जानिये । वेयावञ्च विधान
अखिल विमल गुणमणि तणों । सोहै प्रवर
निधान ॥ १ ॥ जिन १ सूरी २ पाठक ३ मुनी ४
वालक ५ वृद्ध ६ गिलान ॥ तपसी ८ चैत्य ९
सघनीकरे । वेयावञ्च प्रधान ॥ २ ॥
॥ रागजगलावालोम्हारीकवमिलसीमनमेदू ॥

— ७१ —

सेवोत्तार्ई । सोलमपद सुखकारी ॥ श्री
जिनचद्दु प्रमुख दशपदनो । करो वेयावच
नारी से० ॥ १ ॥ श्रीतीर्थ कर त्रिचुवन शंकर
र । श्वर केवली बलिहारी २ मनपर्यवधर ३
श्वधिनाणधर ४ चवदपूरव श्रुतधारी से०
२ ॥ दशपूर्वी १६ उत्कृष्ट चरणधर । लब्धिवंत
अणगारी ॥ ए जिन कहिये इनवदनते । ज

विज्ञवे जिनअवतारी से० ॥ ३ ॥ जिनमंदि
 र विंकरयज्ञरावे । पूजकरे मनुहारी ॥ वेया
 वञ्चकहीये जिनकी । करिये जवजलतारी से०
 ४ ॥ ज्ञाचारिज परमुख नवपदकी । वेयाव
 च विजितारी ॥ जक्तिपूर्व वस्त्रौषध अनजल
 देवे गुणविस्तारी से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनि
 नीकरीय वेयावच । पूरवजव व्रतचारी ॥ ज
 रतवाञ्जबलि चक्रीपदजुज । बललह्यो वरीशि
 वनारी से० ॥ ६ ॥ नंदिपेण सुलसामुनि जि
 नकी करीय वेयावचसारी ॥ तिनसें स्वर्गलोक
 में दुयकी । जईय प्रशंसाजारी से० ॥ ७ ॥ इत्या
 दिक सोलमपद उधरे । वञ्जलजय कूमजा
 री ॥ तिनसें इन वेयावचपद की । वारीजा
 उं वारहजारी से० ॥ ८ ॥ नृपजीमूतकेतुर
 सोलमपद । सेवीजये दुखवारी ॥ श्रीजिनह
 र्षधरी हरिवंदित । जरणागत निसतारी से०

॥ काव्य ॥

मणुस सहातिसया सयाणं । सुरा सुयायी
 सर वंदियाणं ॥ रवींदु विंवामल सग्गुणाणं ।
 दयाधणाणं हि नमोजिजाणं ॥ १ ॥ नुंजी जिन
 ज्योनमः ॥ इति षोडशपदे वेयावृत्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सतरम पद में सेविये । सज्ज सुख करण
समाधि ॥ जिन सेवन ते जविक नों । गमें
व्याधि अरुं आधि ॥ १ ॥ ब्रम्ह नगर पति
विचरता । वरपाथेय समान ॥ ए समाधि पद
जानिये । सुरमुणि कियेहै रांन ॥ २ ॥

॥ रागकहरवा बाजै तेरा विद्युआ रे वा० ॥

मेरो रे समाधि चरण चित वसियो ।
तसु गुण समरण कियो मनु वसियो मे० ॥
सकल जगत जन जिनकुं स्तवतु हैं । अनु
जव रगे अतिहि विकसियो मे० ॥ १ ॥ दुव्य
तजावत दुविधि समाधि । सुरतरु मानु नित
जुवन विलसियो ॥ असन वसन सलिला
टिक जक्ति । करय संघनी करुणा रसियो ॥
मे० ॥ २ ॥ दुव्य समाधि प्रथम ये सुनिये ।
कह्यो जिन लोकालोक दरसियो ॥ सारण
वारण चोयण प्रमुखें । पतित सुधिर करै
घूम मे हरसियो मे० ॥ ३ ॥ जाव समाधि
द्वितीय ये कहिये । जो करै सो जिन चरण
फरसियो ॥ सकल सध को जो उपजावत ।

दुविध समाधि दुरित तसु नसियो मे० ॥ ४ ॥
 सुमति पंच त्रिण गुपति धरें नित । सुरगिर
 वरनों धीरज करसियो ॥ जगत जंतु अथ त
 पति हरन कुं अनुभव अमृत धार वरसियो
 मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल करमें धन दाहत
 जिनसे पर गुण परिणत खिसियो ॥ ये मुनि
 तरणि तेजसम दीपत । अमृत सुखामृत
 पान तिरसियो मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें जैसे
 मुनि जन के समरन तें । ऊये जग अवतं
 सियो ॥ ये पद सेवी नृपति पुरंदर नये ज
 गपति जिन हरख उलसियो मे० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सङ्घिदिया पारविकारदारी । अकारणासेस
 जणोवगारी ॥ महात्तयातंकगणापहारी । जयो
 सदा शुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ नुँझी श्री
 नमश्चारित्र धारेण्यः ॥ इति सप्तदश पदे
 समाधि पूजा १७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पद
 मांहि ॥ इण पद सेवक जन तणा । सजा
 संकट नय जाहि ॥ ९ ॥ जेती कुमति निशु

श्रुता । घोर तपें करि होय ॥ तत अनंत
गुण शुद्धता । सुज्ञानी की जोय ॥ २ ॥
॥ दिलदारयार गवरू रापूं रे हमारा घट में ॥

—०—

जिन चंद्र नाम तेरा । महाराज ज्ञान
तेरा ॥ जीतैं रे विकट जव जटनैं । सदपूर्व
ज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेंद्र चरणा । करेस
र्व कर्म हरणा जी० ॥ १ ॥ जग मे महोप
कारी । जय सिन्धु वार तारी ॥ कुमतांधता
विदारी जी० ॥ २ ॥ सज्ज जावनो प्रकासी ।
परम स्वरूप जासी । परमात्म सन्नवासी ॥
३ ॥ विनु हेतु विश्व बंधू । गुण रत्न राशि
सिधू ॥ समता पियूप अधू जी० ॥ ४ ॥ स्या
छाद पद्म गाजे । नयसप्त सैं विराजे ॥ एकां
त पद्म जाजे जी० ॥ ५ ॥ लहि तीर्थपाव
तारा । इनसें जिनेंद्र सारा ॥ जविके किया
उधारा जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरिदा ।
जये सागरादि चन्दा ॥ जिन हर्ष केसमदा ।
जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

शुभकृत्या मंगल मंगनस्स । संदेह सदोह

विखंठणस्स ॥ मुत्तीउपादान सुकारणस्स ।
णमोहिनाणस्स जसोधणस्स ॥ ८ ॥ नुंझी श्री
ज्ञानाय नमः ॥ इति अष्टादश पदे अपूर्व
श्रुत ग्रहण रूपा ज्ञान पूजा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पापताप संहरणहरि । चंदनसम श्रुतसा
र ॥ तत्त्वरमण कारण करण । अज्ञरण ज्ञर
ण उदार ॥ १ ॥ एगुनवीस पद में जजो ।
जिनवर श्रुतनीजक्ति ॥ इनपद वंदनसैलहें ।
विमलनाण युतमुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग देसी ब्रजवासीकानतें मेरी ॥

॥ गागरदोरीरे एचाल ॥

जविजन श्रुतजक्ति चरणज्ञरण उरधरियें
रे । ए श्रुतजक्ति सुमंगलमाल ॥ विमलकेवल
कमलावरमाल भवि० ॥ १ ॥ सकलद्रव्य ग
णगुणपर्याय । प्रगटकरण एश्रुत मनभाय भ०
अतुल अनंतकिरण समवाय । धरणतरणगण
समकहिवाय ज० ॥ २ ॥ एश्रुतकुमति युवति
नेसंग । अगणित रमणतणो करेजंग ज० ॥
अर्थैभाष्यो श्रीजिनराज । सूत्रैगणधर मुनि
सिरताज ज० ॥ ३ ॥ एश्रुत सागर अगम

अपार । अतश्चमल गुणरयणाधार ज्ञ० ॥
 नवज्ञय जलनिधि तरण जिहाज । निसुणमग
 ननई सकलसमाज ज्ञ० ॥ ४ ॥ नवकोटील
 गें तपकरिजीव । अज्ञानीकरें जितनीसदीव
 ज्ञ० ॥ कर्मनिरजरा तितनीहोय । ज्ञानीके
 इकदृणमेजोय ज्ञ० ॥ ५ ॥ एकसहस कोठि
 ठसयकोठि । चतुरतीस कोठि अक्षरजोठि
 अक्षसठिलापरु सातहजार । अक्षसय असी
 य प्रमित चित धार ज्ञ० ॥ ६ ॥ इतनें वर
 नसे इकपदहोय । एकत्रलोकके गणितएजो
 य ज्ञ० ॥ इकपदको परिमाण एजान । इण
 पद से आगम परिमाण ज्ञ० ॥ ७ ॥ तीन
 कोठि अरु अक्षसठि लाख । सहस वैयालि
 स एपद जाख ज्ञ० ॥ इतनेपदसें अगड्ग्यार
 केरीगणना नविचितधार ज्ञ० ॥ ८ ॥ वारम
 दृष्टि वादकोमान । असंख्यातपदकों पहिचा
 न ज्ञ० ॥ इनको चवदपूरवइकदेश । एनों पा
 रलहोहें गणेश ज्ञ० ॥ ९ ॥ एहदुवालस अग
 उदार । एहनीजइये नितबलिहार ज्ञ० ॥ ए
 हनी इव्यज्ञाव यज्ञनक्ति । करियेधरिये जि
 नपदयुक्ति ज्ञ० ॥ १० ॥ रत्नचूळ नृपसुखमा

धार । जिनश्रुत जक्तिकरी हितकार ज्ञ० ॥
 ज्ञये जिनहरष परम पददाय । जिनके सुरन
 रपति गुनगाय ज्ञ० ॥ ११ ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाणवल्ली वणवारणस्स । सुबोहिबीजं
 कुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स । ण
 मोदया मंदर सच्छुयस्स ॥ १२ ॥ नुँँजी श्री
 श्रुताय नमः ११ इति एकोनविंशतिपदे श्रु
 तपूजा ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

प्रावचनी १ अरुध्रमकथी २ । वाद ३ नि
 मत्ती ४ जाण ॥ तपसी ५ विद्या ६ सिद्ध ७
 पुन । कवी ८ एहमुनिज्ञाण ॥ १ ॥ ज्ञावती
 र्थ के प्रज्ञुकह्या । प्राज्ञाविक एअष्ट ॥ तीर्थप्र
 ज्ञावन जेकरे । तेफललहे विशिष्ट ॥ २ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

तीरथ परज्ञावन जयकारा । जिनसें जव
 सागर जल तरिये ॥ ते तीरथ गुण धारा ।
 ती० ॥ १ ॥ जिनके गणधर तीरथकहिये ।
 बलि सज्ज संघ सुखकारा ॥ एह महा तीरथ
 पहिचानो । बंदिलहो जवपारा ती० ॥ २ ॥

अरुसठि लौकिक तीरथ तजिकरि । नजली
 कोत्तरसारा ॥ द्व्यन्नाव दीयनेद लोकोत्तर ।
 धिरजंगम नयहारा ती० ॥ ३ ॥ पुढरीक प
 रमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा ॥ एवर
 तीरथ थावरकहिये । दीठांदुरित विदारा ती०
 ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीसजिन । विहरमा
 न नवतारा ॥ दीयकोढि केवलं विचरंता ।
 जगमतीर्थ उदारा ती० ॥ ५ ॥ सघचतुर वि
 ध जंगमतीरथ । जिनशासन उजियारा ॥
 वरश्चनत गुणनूपण नूपित । जिनकुं नमत
 जिनसारा ती० ॥ ६ ॥ एतीरथ परजावन
 करिये । शुद्ध जावन श्वाधारा ॥ शिवकज
 जलविशति तमपदकी । जाउं प्रतिदिन बलि
 हारा ती० ॥ ७ ॥ एतीरथ परजावन करतो
 मेरुप्रज्ञ श्रविकारा ॥ पदजिनहरपलहीनें तरि
 यो । नवअंजोधि श्वापारा ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

महामहानदपदप्रदाय । जिनश्रुतज्ञानपयो
 नदाय ॥ जगत्रया धीश्वरवदिताय । नमोस्तु
 तीर्थाय मुजददाय ॥ ९ ॥ नुंझीश्रीतीर्थायनम-
 इतिविशतितमपदेतीर्थप्रजावनापूजा ॥ २०

बीसपदकी विविध पूजन विधितर्णों रचनां
करी ॥ ५ ॥ इतिश्री विंशतिस्थानकस्तुति :

॥ जियाचतुरसुजाणनवपदके गुणगायरे ॥

॥ इस चालमें श्रारती ॥

पिया विंशतिथान मंगलश्रारति गायरे
सुमतिप्रिया कहैं चेतनपतिकों निसुण वचन
मनजायरे पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परि
णति तुमचहिये । तिणको एह उपायरे पि०
श्ररिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल
समु दायरे पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशति
पद समरण नवत्रय हरण विधायरे । एह
श्रारती श्ररतिवारती । अनुपमसुर सुखदाय
रे पि० ॥ ३ ॥ जैसेंनगतै करय श्रारती । स
कलसुरा सुररायरे ॥ तैसेंनवितुमे करोश्रारती
एपदगुण चितलायरे पि० ॥ ४ ॥ पंचप्रदी
पसें करयश्रारती । जेनितचित उलसायरे ॥
तेलहीपंच चिदानंद घनता । अचलअमर प
दपायरे पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप श्रखंफित
ज्योतै । दुर्मति तिमिर विलायरे ॥ एहश्र
रती तुरत तारती । नवजल निपतित धा
यरे पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष तणी एकर

णी । मनहरणी कहिवायरे ॥ चंद्रविमलशि
वसिधिनिधि धरणी । वरणीकिण विधजाय
रे पि० ॥ ७ ॥ इतिविंशति स्थानकारात्रिका
॥ ८ ॥ अथ चौवीसजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल । चरण कमल
सुखदाय ॥ शपिमल पूजन रचु । वरविध
जूचितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरै । शाश्व
त जिनमहाराज ॥ श्रचै अरविध पूजसुं ॥
जैसे सज्जसुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति
गुणधरी । श्रावक समकितधार ॥ विरचै जि
न चौवीसकी । श्रविध पूज उदार ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

सलिल १ सुचदन २ कुसुमजर ३ । दीवगकरणंच
४ धूवदाणच ५ ॥ वर अरकत ६ नेविजां ७ । सुन्न
फल पूजाय श्रविहा ॥ १ ॥ श्रविध पूजा
करणं सुणिये सूत्रमकार ॥ जे जविदिरचै प्र
नुतणी । ते पावै जवपार ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । योगीश्वर
नरगाय ॥ प्रथम जये युगआदिमे । सकलजीव

सुखदाय ॥ १ ॥

॥ रागदेसाख पूर्वमुखशावनं एचाल ॥

विमलगिरि उदयगिरिराज सिखरोपरे ।

तरुणतरुतेज दीपतादिणंदा ॥ युगलधूमवार

करधरम उद्योतकिय । विमलइह्वाकु कुल

जलधिचंदा ॥ १ ॥ मातमरुदेवि वरउदरद

रि हरिवरा । सकलनृपमुकटमणि नाजिनंदा

अखिलजगनायका । मुगतिसुखदायका विम

लवरनाणगुण मणिसमंदा ॥ २ ॥ वृषजलांठ

नधरा । सकलजवजयहरा ॥ अमरवरगीतगु

णकुशलकंदा । गहिर संसारसागरतरणसमध

रा । नमतशिवचंदप्रचुचरणवंदा ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल१चंदन२पुष्प३फल ४व्रजै । सुविम

लाकृत५दीप६सुधूपकै७ विविधनव्यमधुप्रव

रान्नकै८ । जिनिममीजिरहंवसुजिर्यजे ॥ १ ॥ नुँ

झीश्रीपरमात्मनेश्चनंतानंतज्ञानशक्तये ॥ जन्म

जरामृत्युनिवारणाय ॥ श्रीमद्वषजजिनेंद्राय ॥

जलं चंदनं पूष्पं धूपं दीपं अकृतं नैवेद्यं फलं

यजामहेस्वाहा ॥ इतिश्रीरिषजजिनपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

जयजिणंददिणइंदसम । लखिन्नविकजवि
कसात ॥ परमानंदसुकदजल । विजयामातसु
जात ॥ १ ॥

॥ रागश्यासावरी हो दिलवागमे ॥

॥ प्यारे जिनजी ॥ एचाल

एक अरज अवधारिये । अजितजिन ए०
अजितजिनेसर जगअलवेसर । कुरम निजर
निहारिये अ० ॥ १ ॥ चरमसिधु नवन्नय ज
लनिपतित चरणपतित मोहे तारिये अ० ॥
२ ॥ परमानंदधन शिव वनितानन । कजम
धुपान सुकारिये अ० ॥ ३ ॥ चिर सचित घ
नदुरित तिमिर हर । तुम जिननये तिमिरा
रिये अ० ॥ ४ ॥ कहै शिवचद अजित प्रजु
मेरे एह अरज न विशारिये अ० ॥ ५ ॥ नुँकी
परमप० अनं०जन्म० श्रीम० ज० चं०स्वाहा
॥ इति अजितजिन पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

जय जितारि संजव सदा । श्रीसंजवजिन
राज ॥ सकललोक जिण जीतियो । जीतोमोह
समाज ॥ १ ॥ जैनाकर गुणपूर । सेवो तेजसनूर
नक्तिनवपूरण उरधार । मुक्तिपुरीपथसार ॥

॥ रागवेलालसवायागंधवटी०सारए० ॥

अपरमित वर शिखरसागरधार संज्ञवका
 रए । जिनरायसंज्ञव पाय बंदो लहो जवजल
 पारए ॥ वल जलधिजात सुजातकुंजरकुंजजंज
 न जानिये । तसुजनकनाम समाननामा । ज
 ये जिन उर श्यानिये ॥ १ ॥ जसु चरण पंकज
 मधुर मधुरस पान लयलागीरह्या । मिलकर
 सुरासुर खचरव्यंतर जमर निलचितऊमह्या ॥
 जसुचरण कमलेंपलवगलांठनकनक सुवरणका
 यए । सञ्जनुवननायक सुमतिदायक । जननि
 सेना जायए ॥ २ ॥ जसुमधुरवाणी जगवखा
 णी । तीस सरगुण धारिणी ॥ संसार सागर
 जयजराकर । पतित पारउतारिणी ॥ स्याद्वाद
 पद्म कुठारधारा । कुमतिमद तरुदारिणी ॥ प्र
 नु व्याणि नित शिवचंदगणिके । ऊवो मंगल
 कारिणी ॥ ३ ॥ नुँझीश्रीं परम० शून०ज्ञान०
 श्रीमत्संज्ञव जिने० ॥ जलं०स्वाहा ॥ इतितृती
 यसंज्ञव पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो जविचित
 लाय ॥ जगति युवति संकटहरण । करण ति

न सुध थाय ॥ १ ॥

॥ कुंदकिरणशशिउजलोरे एचाल ॥

सवरनदन जिनवरूरे वाला । अग्निनदन हि
त कामीरे ॥ जगदग्निनंदन जयकरूरे वा० ॥
दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोका लोक
प्रकासता वा० ॥ करता अविचल धामीरे अ
व्यावाध अरूपितारे वा० ॥ विमल चिदानंद
रामी रे ॥ २ ॥ वलित पूरण सुरमणी रे वा०
एप्रनु अतरजामी रे । जैसे प्रनुमहाराजकुं रे
वा० । सिवचद नमेंसिरनामी रे ॥ ३ ॥ मुँजी
पर०अनं० अग्निनंदनजिनेंद्राय जल० स्वाहा
॥ दोहा ॥

पचमजिननायकनमूं । पचम गतिदातार
पंचनाणवरविमलकज । वनविकसनदिनकार
॥ कहरवा वसीतेरी वैरणवाजै एचाल ॥

सुधजावचितथिरधरके रे । पूजोसुमतिजि
णद ॥ जिननक्ति करण रसीला । लहे परम
अनंद सु० ॥ १ ॥ जिनराज सुमति समंदा
करे कुमतिनिकद ॥ प्रनुनाचरण अरविंदा ।
वंदै असुर सूरिंद सु० ॥ २ ॥ कनकाज तनु
दुतिसाहे । प्रनुसुमंगालानद ॥ करुणोपशम

रसजरिया । वंदै नित सिवचंद सु० ॥ ३ ॥
 नुँकी परम०अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत् सुमति
 जिनेंद्वाय जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

हिवपष्टमजिनवरतणी । पूजनकरिञ्जं उ
 दार ॥ नविचित नक्ति धरीकरी । सुखसंप
 तिकरतार ॥ १ ॥

॥ रागसारंग वावनचंदनघसिकुमकुमा ॥

हांहोरेवाला पदमप्रभू मुखचंद्रमा । नित
 सकललोक सुखदायए । हांहोरे वाला ॥ ह
 रिसुरअसुरचकोरफा ! नित निरखरह्या लल
 चायए । हांहोरेवाला । जिनमुख वचनअमृ
 ततणी । जे श्रवणकरें नविपानए । हांहोरे
 वाला ॥ ते अजरामरता लहै । हरिगण करें
 जसुगुणगान ए । हांहो० धर नृप कुलननदि
 नमणी । प्रभु मातसुसीमा नंदए हां० ॥ प्र
 भु दरसणते प्रति दिनें । ज्ञयज्यो शिवचंद्र
 अानंद ए ॥ ३ ॥ नुँकी परम०अनं०ज्ञा०ज०
 श्रीमत्यदमप्रभ जिनें० य जलं० नैवे० यजा
 महेस्वाहा ॥ इति ठठी पूजा संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्व सुरतससमो । कामित पूरण
काज ॥ नौ नवियण पूजो सदा । वसुविध
पूजसमाज ॥ १ ॥

॥ राग तेरीपूजावणीहैं रसमें एचाल ॥

मेरी लगी लगन जिनवरसें मे० ॥ जैसें
चंदचकोर नमरकी । केतकिकमलमधुरसे मे०
एहसुपारस नए प्रनुपारस । गुणगणसमरण
फरसें मे० । चेतन लोहपणो परिहरके । ऊ
यलैकंचन सरिसें मे० ॥ २ ॥ एप्रनु करुणा
करकु धरिले । नुर जिमकमल नमरसे मे० ॥
जेनवि जिनपदलगनधरें तसु ॥ नहिजये म
रन असुरसे ॥ ३ ॥ मात पृथवी तनुजात त
नुदुति । समनुनकंचनसरिसे मे० ॥ कहै सिव
चद चित नितमेरो रहो प्रनुपदलय नरसें मे०
नुंजी परम० अन० ज० सुपार्श्वजिने० जलं०
नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ इति सातमीपूजा ॥ ७

॥ दोहा ॥

अष्टमजिनपदपूजिये । विविधकष्टहरतार
अष्टसिद्धनवनिध लहै । जिनपू जाकरतार ॥

॥ रागमेघवरसेनरीपुष्पवादलकरीएचाल ॥

परमपदपूर्वगिरिराज परिउदयलहि । वि

जितपरचंद्र दिनकरअनंता ॥ चंद्रप्रभुचंद्रिका
 विमलकेवलकला । कलित शोभितसदाजिन
 महंता प० ॥ १ ॥ कुमतिमत तिमिरजरहरि
 यपुनन्नूरिन्नवि । कुमुद सुखकरिय गुणरयणद
 रिया ॥ गहिरन्नवसिंधु तारणतरणतरणिगुण
 धारि न्नवितारि जिनराज तरिया प० ॥ २ ॥
 राखियेअज मोहेलाजजिनराजप्रभुकरणसुख
 जिनचरण सरणपरिया । परम शिवचंद्र पद
 पद्ममकरंदरस ॥ पाननितकरण ततपरजरी
 या प० ॥ ३ ॥ नुँझी परम० अनं० श्रीम चंद्र
 प्रन्नजिनं० जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा इतिअ
 ष्टम जिनपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सुबिधरसमरणथकी । कामितफलप्रकटा
 य ॥ अतीगहनसंसारवन । बज्जलअटनमिट
 जाय ॥ १ ॥

॥ राग चंपक केतकी मालती एचाल ॥

सुबिध चरण कजबंदियेए अइयो बं० ।
 नंदियेअतिचिरकाल शिवतरवारनिकंदिये ।
 बिधनकंदततकाल अइ० ॥ १ ॥ अजजनमस
 फलोन्नयो अ०ए दीठोप्रभुदीदार । तनमनद्वग

विकसितज्ञये ॥ जिमकजलखिदिनकार ॥२॥ अ
 मृतजलध रवरसियो अ० व० ए । नविउरखे
 त्रमकार । दर्शनसुरतरु ऊगियो अ० ए शिव
 फलनोंदातार ॥ ३ ॥ नुँझीपर० अण० ज० श्रीम
 त्सुविधिजिनेंद्राय ज० नैवे० यजामहेस्वाहा
 १ ॥ इति सुविधिजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुक्तन मन शीतलकरो । श्रीशीतलजिन
 राय ॥ तुमसमरण जलधारसें । अंतरतपतपु
 लाय ॥ १ ॥

॥ दाढाकुशलसूरिंदण्चालमे ॥ घाटो ॥

मेरेदीनदयाल । तुमज्ञयेसकललोक प्रति
 पाल मे० ॥ सुणशीतलजिनवरमहाराज । च
 रणसरणधस्यो प्रभुनोष्णज ॥ ननमूंसज्जकारी
 देव । करिस्युंचरणकमलनीसेव मे० ॥ १ ॥ जैसे
 सुरमणिकरतलपाय । कुणलेकाचसकलउलसा
 य ॥ तुमसमसुरवर अवरनकीय । हेर २ जग
 निरख्योजोय मे० ॥ २ ॥ प्रभुदरसन जलध
 रघनघोर । लखीयनिरतकरें नविजनमोर ॥
 पदशिवचंद्र विमलजरतार । ० शिववनिता
 बरेअतिसुखकार मे० ॥ ३ ॥ नुँझीपरमअण० न०

मच्छीतलजिनै० ज० नै० य० स्वाहा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांसजिनैंदुपद । नंददुति सलिलाधा
र ॥ जेनेत्रैमज्जनकरे । तेसुचिइज्जांबिधुतार ॥

॥ राग सोहमसुरपतिवृषज्ञ रूपकरएचाल ॥

श्रीश्रेयांसजिनेसरसाहिब । इंद्रियसदन
सजंदहे । जसुबसुबिधपूजनसेअरचो ॥ उरध
रिपरमानंद हे श्री० ॥ १ ॥ ए समकित धर

श्रावकं करणी । हरणी जवमनरंगहे ॥ विजय
देवजिनप्रतिमापूजी । जीवाजिगमउवंगहे ॥

श्री० ॥ २ ॥ सूरियाज्जजिनपूजनकरियो । रा
यपसेणीउवंगहे । ज्ञाताअंगेंदुपदिश्राविका ॥

पूज्याजिनचितचंगहे । जेनिन्हवकुमतीजिन
पूजन ॥ उत्थापेंतेहअनंतहे काललगेंजमसीजव

वनमें ॥ मंदमतीजयज्ञांतहे ॥ २ ॥ विष्णुमा
ततनुजांत विष्णुनृप । विमलकुलांबरहंसहे ॥

सकलपुरंदरअमरअसुरगण । शिरुवरिप्रज्जुअ
वतंसहे ॥ इणसुरवरनीपरज्जविश्रावकजेपूजैजि

नउठरंगहे ॥ ते शिवचंद परमपद लहिस्येनि
उचयकरि जवजंगहे श्री० ॥ ३ ॥ नुँझीपर०

अनं० ज० श्रेयांस जिनै० जलं० नैवे० यजा

महेस्वाहा ॥ इति एकादशमजिन पूजा ॥ ११

॥ दोहा ॥

हिव्यारमजिनवरतणी । पूजनकरियेसार
ज्ञावञ्चक्तियुत जविसदा । द्वव्यञ्चक्तिचितधार

॥ राग सवअरति० मुदारधूपं एचाल ॥

सकल जगजनकरतवंदन । जयानंदन स्वा
मि रे ज० । दुरितताप निकंदचंदन । परम
शिवपदगामि रे स० ॥ १ ॥ नृपतिवर वसु
पूज्यनृपकुल । विपिन नंदनजातरे देवा वि०
सु हरिचदन नंदनदन । नदमदकियधातरे ॥
स० ॥ २ ॥ वसुपूज्यनद जिनेद्रपूजो । सक
लजिन महाराजरे ॥ करतनुति शिवचंदप्रभु
ए । निखिल सुरशिरताज रे दे० ॥ ३ ॥ नुंजी
पर० अन० ज० वासुपूज्यजिने० ज० नैवे०
यजामहे स्वाहा ॥ इति वारमजिनपूजा ॥ १२

॥ दोहा ॥

त्रिमल त्रिमलजिन करमुठे । मलिनकरम
करि दूर ॥ तेरमप्रभु रमिये सदा । मुठ उर
मळि गुणपूर ॥ १ ॥

॥ सिधचक्र पदवदारे जविका एचाल ॥

त्रिमलचरणकजवदारे । सूरीजनवि० वदी

नेत्रानंदोरे ॥ जसुगणधरमुनिवरगण मधुकर ।
 सेवतपदश्रविंदोरे स्यामाउदरसुगति मुगता
 फलकृतवरमानृपनंदोरे सू० ॥ १ ॥ सञ्जगमं
 क्लविमलकरणकुं निजसासन नन्नवंदो । उदय
 न्नयोन्नविकुमुदबिकसवा । वरगुणरयणसमंदो
 रे ॥ २ ॥ यदिन्नववंदिहरण न्नविचाहो । प्रचु
 वंदीचिरनंदो । विमल चिदानंद घन मथरू
 पी । नितवंदित शिवचंदो रे वि० ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥
 परम० श्रु० ज० श्रीविमलजिने० जलं० स्वा०

॥ दोहा ॥

हिवचवदमजिनपूजतां । हरिये विषयवि
 कार ॥ नो न्नवियण सुणिये सदा । एप्रचुश
 रणाधार ॥ १ ॥

॥ पंचवरणीअंगीरची एचाल ॥

पूजकरणीप्रचुनीदुरितनिवारी । अनंततर
 णिहिमकिरणतरुणतर । किरण निकरजीताहै
 न्कारी । अनंतनाण वरदरशण तेजे । प्रचुसुय
 सोदर श्रवतारी पू० ॥ १ ॥ लोकालोक श्रु
 नंतव्यद्गुण । पर्ययप्रगट करणहारि ॥ तातै
 श्रुन्वययुतजिन धरियो । अनंतनामश्रुतिम
 नुहारी पू० ॥ २ ॥ सिंहसेननृपनन्दन वंदन

करतइद्धचंद्रसुखकारी । सादिश्यनत जंगधि
तिधरियो ॥ पदशिवचद्र विजयधारी पू० ॥
नुँकी परम०अनं० ज० श्रीम दनंतजिनेद्राय
ज०नैवे०स्वाहा इतिअनतजिनपूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानुन्नूपकुलज्ञानुकर । पनरमजिनसुखका
र ॥ सोचित सङ्गजग विपिन जन । हरख
फलदजलधार ॥ १ ॥

॥ धीरसमीरेजमुनातीरेवसतिवनेवनमाली ॥

धरमजिनेसर धरमधुरंधर । जगबंधव जग
बालामें वारीजाउं ॥ सुव्रतानंदनपापनिकंदन
प्रनुन्नएदीनदयालामें वारीजाउं ध० । प्रनुधी
रजगुणनिरसंअमरगिरि । लजिलीनो अचला
धारा मे ॥ १ ॥ जिनगंजीरताचरमसिधुलखि
कियलोकांत विहारामें ध० ॥ एजिनचद्रचर
णअरचनते । लहिजिनपतिश्रवतारामें ॥ २
करमवैरिदलकरि नविलहस्यो पदशिवचद्रउ
टारा मे नुँकी परम०अनं०ज०श्रीधर्मजिनेद्रा
य ज०स्वाहा ॥ १५ ॥ इति धर्मजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अचिराउयरेश्रवतरी । शांतिकरीसुखका

र ॥ मारि विकार मिटायकरि । नामधस्यो
शांतिसार ॥ १ ॥

॥ रागज्ञाव धरिधन्य दिनश्राजसफलोगिणुं ॥
शांतिजिनचंद्र निजचरणकजशरणगत त
रणिगुणधारि नववारितारी कुमतिजनविपि
नजनिकुमतघन व्रततितत निश्रितधारतरबा
रबारी शांति० ॥ एकज्ञविपदउन्नयचक्रधरती
र्थकरधारियावारियाविधनसारा सकलमदमा
रियाविमल गुणधारिया सारियाज्ञक्तवांछित
अपारा शां० हरिणलांकुनधराकरणसुवरणक
रासुरवराहितधरागतविकारा मोहज्ञटधरणिध
रणहरणवज्रधरकुमुद शिवचंद्रपदरजनिका
राशां० ॥३॥ नृंक्षीपरम० अनं० ज० श्रीशांति
जिनेंद्राय जलं०चं० यजामहेस्वाहा १६ ॥

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीवसम । मफिन्नवसाग
रजाण ॥ नक्तियुक्ति नित पूजिये । लहिये
अमलविनाण ॥ १ ॥

॥ राग अरिहंतपद नितध्याइये एचाल ॥

कुंथुजिणंद गुणगाइये । मनबंधितफलपा
इये रे ॥ प्रनु समरण लयल्याइये । नविन्नव

तजिशिवजाइये रे कुं० ॥ १ ॥ नवजलगतनि
 जआतमा । वारी कसणाउरधरिताइये रे चर
 णकरणउपयोगिता । ग्रहणकरणकुध्याइये रे
 कुं० ॥ २ ॥ एप्रजुदरज्ञणजीवने । अनुभव
 सनोदाई रे ॥ वरशिवचंद विमलवधे । दिन
 दिनसोन्नसवाई रे कुं० ॥ ३ ॥ नुँझी परम० अ०
 श्रीकुंथुजिने० जलं० नै० स्वाहा ॥ १७ ॥ इति
 ॥ दोहा ॥

जिनअठारमोध्याइये । नवियण चित्तम
 ऊार ॥ करण तीनइक करिमुदा । प्रतिदिन
 जयजयकार ॥ १ ॥

॥ राग सगलागोही आवे० एचाल ॥

निजविमल नक्तिसे अरजिन सु नितरमि
 ये रे ॥ जिनगुण निजगुणतुल्यकरणकु । चंच
 लचित्तहयदामिये रे नि० ॥ १ ॥ सुमतियुवति
 सगतिउरधरिके । कुमतिनारसंगगामिये रे ॥
 अनुभव अमृतपानकरणसे । विषयविकृति
 विषयमिये रे नि० ॥ २ ॥ जिनवरसगरमण
 दव अनिले । पंकसघनवन धमिये रे ॥ कहे
 शिवचंद जिनेइ रमणसे । नववनमे नहिज
 मिये रे नि० ॥ ३ ॥ नुँझी परम० अ० श्रीम

तंश्चरजिनै० जलं० यजामहेस्वाहा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

उगणीसमजिन चरणकज । नमरहोयलय
लाय ॥ सेवे तसुन्नवन्नमरता । अगणिततुरत
विलाय ॥ १ ॥

मल्लिजिणंदउपगारी रे वाला हांहोरेवाला
वारीजाउं वारहजारी रे वाला म० ॥ कुंजन
रेसर गगनांगण में । सहसकिरण अ्वतारी
रेवा० ॥ म० ॥ १ ॥ पूरबन्नव खटमित्र नरिंद
पति । बोधसिंधुन्नवतारी ॥ वेदत्रई विरही
तनुधास्यो । सकलसंघसुखकारी रेवा० म० ॥
२ ॥ सकलकुशलहरिचंदनतरुवर । नंदनवन
अनुकारी ॥ संघचतुर्विध नूरिखचरगण प्रण
तचंदमनुहारी रे वा० म० ॥ ३ ॥ नुँझी पर
म० अनं० श्रीमल्लिजिनैदाय जलं० यजाम
हेस्वाहा ॥ इति मल्लिजिनपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

पद्मोदरवरपद्मनंद गतपरपद्मसमान ॥
विंशतितमप्रभुपूजिये । केवललच्छिनिधान ॥
॥ नविन्नक्तिधरीनवपदनव० एचाल ॥
सुणसुव्रतजिनैऽ सुनिजरधर मुऊपर वर

दरसणदीजिये । प्रनुदरसप्रीतनिरुपाधिकता
 करियेलहिये शिवसाधकता । तवतुरतमिटेंशि
 ववांधकता सुण० ॥ १ ॥ अमृत मेसाध्यपणों
 विलसें प्रनुदरसणसाधनताउलसें तद मुऊने
 साधकतामिलसें सु० ॥ २ ॥ जिन्नाधिकरणता
 यदिविघटै । एकाधिकरणतायदिसुघटें ॥ तद
 मुऊशिवसाधकताप्रगटें सु० ॥ ३ ॥ एकाधि
 करणता मुऊकरिये । जिन्नाधि करणतापरिह
 रिये ॥ शिवचंदविमलपदतदवरिये । सु० ॥
 ४ ॥ नुँझी परम० अनं० मुनिसुव्रत जिने०
 जलं० चंद० यजामहेस्वाहा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

अतरवैरीमारिया । तवलहियोनमिनाम ॥
 नवियणएप्रनुपूजसें । सरिये बंछितकाम ॥१ ॥
 श्रीनमिजिनवरचरणकमलमे । नयननमरयुग
 धरिये रे ॥ तिणकियगुण मकरंदपानसें । चे
 तनमदमत करिये रे श्री० ॥ १ ॥ एहचरण
 कजअहनिशिविकसै । परकजनिशिकुमलावे
 रे ॥ ए न बलेंघलि तुहिन अनलसै अपरक
 मल बलजावे रे श्री० ॥ २ ॥ एपदकजगुन
 मधुरस पीवत । जीव अमरता पावे रे वा०

शुवर कमल रसलोत्री मधुकर ॥ कजगतग
लगलजावे रे वा० । परकज निजगुण लच्छि
पात्र है ॥ पदकज संपद देवे रे । ताते पद
शिवचंद जिणंद के ॥ अहनिशि सुरनर सेवे
रे श्री० ॥ ३ ॥ नुँझी परम० अनं० नमिजि
नें० जलं० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

बावीसमजिन जगगुरू । ब्रम्हचारि विख्यात
इणबंदन चंदन रसै । पापताप मिटजात १

॥ रागं गात्रलूहै जिनमन रंगसुं० एचाला ॥

नेमि जिणंद उर धारी रे बाला । विषय
कषाय निवारिये रे बाला । वारिये रे हां रे
बाला ॥ ए जिननें न बिसारिये रे ॥ १ ॥

जलधर जिम प्रजु गरजता रे बाला । देशना
शुभ्रत बरसता रे बाला दे० बरसता हां रे०
नविक मोर सुण उलसता रे बाला ॥ २ ॥

समवसरण गिरि पर रह्या रे बाला । जामंठ
लचपलावह्यारेवा० ॥ सुरनर चातकजमह्या

रे ॥ ३ ॥ बोधबीज उपजावियो रे बाला ।
नविउरक्केत्र बधावियो रे बाला न० ब० नवि
क मुगति फलपावियो रे ॥ ४ ॥ नुँझीपरम०

श्रीमन्नेमिजिनंदायजलंनैवे०स्वाहा ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

अश्वसेननंदनसदा । वामोदरखनिहीर ॥
लोकत्रिस्वरसोजेप्रज्ञू । विजितकरमवक्रवीर १

॥ बाजै तेरा विद्युद्वारे द्या० एचाल ॥

पासजिणंदा प्रजुमेरेमनवसिया मे० ॥ त्रि
वकमलानन कमलविमलकल । तरमकरंदपा
नश्रुतिहिसरसिया पा० ॥ १ ॥ वामानदनमोह
निमूरत । सकल लोक जनमन किय वसिया
पा० ॥ परमजोति मुखचंद विलोकित । सु
र नर किंनर चक्रोर हरसिया ॥ २ ॥ अजन
गिरि तनुदुति जिनजलधर देशान अमृतधार
वरसिया पा० ॥ २ ॥ पियकरि जवि चिर
काल तरसिया । मुगति युवति तनु तुरत
फरसिया पा० ॥ २ ॥ कुमुद सुपद त्रिव
चंद जिणद नी ॥ बारी जाउं मन मेरो श्र
तिहिउलसिया पा० ॥ ३ ॥ नुँझी परम०श्र०
ज० श्रीमत्पार्श्वनाथाय ज० यजामहे स्वाहा

॥ दोहा ॥

वरइखाकुकुलकेतुसम । त्रिसलोदरश्रवतार
एप्रजुनीनितकीजिये । विविधजक्ति सुखकार

॥ रागतेजतरणिमुखराजेंप्रभ्रूजीको एचाल ॥
 चरमवीरजिनराया । हां रेजिनराया मैरे
 प्रभ्रुचरमवीर जिन० सिद्धा रथकुलमंदिरधज
 सम । त्रिसलाजननी जाया । निरुपम सुंदर
 प्रभ्रुदरणते । सकललोकसुखपाया मे० ॥ १ ॥
 वामचरणअंगुष्ठफरसते । सुरगिरिवर कंपाया
 इंद्रभ्रूतिगणधर मुनिजन । सुरपति बंदितपा
 या मे० ॥ २ ॥ वरतमानसाशनसुखदाया ॥
 चिदानंदघनकाया । चंद्रकिरण गणविमल रु
 चिरकर । शिवचंदगणि गुणगाया हां० ॥ ३ ॥
 वरसनंद मुनिनाग धरणमित । द्वितियाश्विन
 मनजाया । धवलपद्म पंचमितिथिशनियुत ॥
 पुरजयनगरसुहाया मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष
 सूरिसूरीश्वर । वरखरतरगठराया । क्लेमकि
 र्तिशाषागणिभूषण रूपचंदनुवकाया मे० ५
 महापूर्वजसु भूरिनरेस्वर । वरखरतर गठरा
 या । तासुशीसवाचक पुन्यशीलगणि तसुशी
 ष्यनामधराया मे० ॥ ६ ॥ समयसुंदरअनुग्रहि
 ऋषिमंजुल । जिनकीसोन्नसवाया । पूजरची
 पाठकशिवचंदने । आनंदसंघवधाया मे० ७
 ॥ इति रिषिमंजुल पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नंदीश्वर जीकी पूजा ॥



॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण ज
यकार ॥ अश्वसेन नंदन चरण । शरण
रुचिर उरधार ॥ १ ॥

जिनवाणी समरणकरी । सकलजीव सुख
कार ॥ कहिस्यु नदीश्वर जगत । पति
पूजन विसतार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

अखिलहोपसिरताज । अष्टमनंदीश्वरही
पटाजै ॥ बलयाकार जगत सुख कारी । नि
रुपम अतिशय गुण मणिधारी ॥ १ ॥

॥ उल्लासो ॥

मणिधारि वावन विमल गिरिवर । जै
नमदिर युतसदा ॥ शुभ्रजक्ति धर निरजरपु
गंडर निरपिपामे सम्मदा । इककोफि शतत्रि
ण सठिकोफिय चोरासीलख योजना । इणठी
पमा चक्रवाल विष्कंन । मान जाणो जोजना

॥ ढाल ॥

इण ढीपें पूरव दक्षिणआसा । पत्रिचम
उत्तर दिश चउपासा ॥ चतुरंजन गिरिसुख
माधारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ २ ॥

॥ उल्लालो ॥

धरचारि निजदुति नरविनिर्जित सजल
जलधर घनघटा । वलिचतुर शीति सहस्र
योजन तुंगता धरता स्फुटा ॥ इणप्रवर अं
जन सिखरि सिखरे शाश्रुता जिनमंदिरा ॥
चउसंख्य सुंदर कनककलसो । पमधरा जग
सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

इकइक अंजनगिरि चउपासा । चउपुक्क
रिणी प्रगट प्रकासा ॥ विस्तर इगलख योज
नसारा । तासुमांहि इक इक्कउदारा ॥ ३ ॥

॥ उल्लालो ॥

इकइक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्न
तता कुला ॥ जिनराज मंदिर मंछिता सज्ज
चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धराधरदी
र्घिका प्रतिविदिशि दीयदीय रतिकरा । दश
सहस्रयोजन उन्नताधर उदय करुणा सणवरा

॥ ढाल ॥

जिनमदिर युत रतिकर विमला । पूरव
दिशितेरस सङ्गञ्चला ॥ यह रीते परत्रिणदि
शिजाणो । इमं वावन्नगिरी इवखाणो ॥ ४ ॥

॥ उल्लालो ॥

इवखाणज्ञतयोजनसुदीर्घा वज्जत्तरयोजन
प्रमा । अति उन्नता पंचास योजन विस्तरा
जिनगृह समा ॥ शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा
पचशत धनुरुन्नता । इणरीति प्रति प्राशाद
प्रतिमा जाणिये विंवशाश्रता ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अपन्नानन चंद्रानना । वारिपेण ब्रधमा
न ॥ एजाणो शाश्रत सकल । जिनप्रति
मा अन्निधान ॥ ३ ॥

सुरगिरि शिखरे जिनतणों । जिन न्हव
णोत्सव सार ॥ करिके नदीश्वर जई । ह
रिगण विबुध उदार ॥ ४ ॥

अनुजव रसयुत न्क्तिधर । हृदय सरोज
मफार ॥ इणपरि शाश्रत जिनतणों ।
करै पूजअति सार ॥ ५ ॥

पूरवदिशि अंजनगिरी । मदिरगत जि

नराज ॥ अष्टविधि पूजायें सदा । अर

चीजै हित काज ॥ ६ ॥

प्रथम पूज जिन राजनी । विमल जलै
अर पूर ॥ करियें न्हवण सदाजवी । हो

य सकल दुख दूर ॥ ७ ॥

॥ कुंदकिरण अग्निजजलोजी देवा एचाल ॥

मिलिकरि सकल सुरासुरा रेवाला । नि
जसेवक सुर पासें रे ॥ क्षीर जलधि मागध

थकी रे वाला । सिंधुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥

वलि वरदामसुतीर्थसें रेवा० । विमल सलि
लअणावें रे ॥ मणिकनकादि कलश अरी रे

वाला । अषधि कुसुम मिलावें रे ॥ २ ॥ इं

द्रादिक सज्जसुरगणा रेवा० । शाश्वत जिन

न्हवरावें रे ॥ विमल सलिल धाराकरी रेवा

कुमति तापनें गमावें रे ॥ ३ ॥ इणपरि जे

अगतैजवी रेवाला । न्हवणकरै जिनअंगें रे

तेसुरवर सुख अनुजवी रे वा० । लहै शिव

पद मनरंगें रे ॥ ४ ॥ इव्यपूज करि सुरवरा

रेवा० । करै जिणंद गुणगानारे ॥ कुशल कु

मुद विकसाथवारे वाला । प्रभु शिवचंद स

माना रे ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

दुरितदाव घनातप वारणं । सकलजाव
विकासनकारणं ॥ जगतिज्जव्य ज्वोदधि तार
ण । जिनगणं स्नपयाम्य मलैर्जलैः ॥ १ ॥
सुंझी श्रीअर्ह परमात्मज्यो जनतानतज्ञान श
क्तिज्यः प्रणतसकल सुरासुरेद्र वृंद विहित
जक्तिज्यः कठिन कर्म जालमालो भूलन
चरणेज्यो जन्मजरा मृत्युनिवारण कारणेज्यो
नदीश्वराष्टम द्वीपगत पूर्वाजन गिरिशिखर
स्थ सिंहायतन मंथनायमानेज्यः श्रीरिपज्ञान
न चंद्रानन वारिपेण वर्धमाना त्रिधानाष्टो
त्तरैकज्ञात शाश्वत जिनेद्रेज्यो जल यजामहे
स्वाहाः इति प्रथमजल पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

द्वितीयपूज जिनराजकी । करज्ज जक्तिज
रसार ॥ वरसुगंध द्रव्ये करी । तरज्ज सिं
धु ससार ॥ १ ॥

॥ मेघवरसैजरी पुष्पवादलकरी एचाल ॥

जक्तिधरी जविजन पूजमहाराजकुं । एह
वरगध द्रव्ये सदाई ॥ विमल घनसार चदन
सरसमृगमदा । कुंकर्मे कर विलेपन मुदाई ज०

१ ॥ जे ज्ञवि सुरजितरगंधद्व्यंकरी । सुरजि
तनुकरै जिनराज केरो ॥ तेहनी चंद्र करअ
मल यज्ञवासना । सुरजितम करइ सज्जजग
घणैरो ज्ञ० ॥ २ ॥ एमवर सुरजितर द्व्य
संसुरवरा । श्रचकरि जगपती विंवासारा ॥
परमशुभ्र ज्ञावना ज्ञावता गावता । विशद
जिनवर गुणा अतिश्रपारा ॥ ३ ॥ सकलसुर
गणमिलीएम जंपैमुदा । जोसुरा आज जिन
राज श्रची ॥ विरति गुण रहितनिज जन्म
सफलो कियो । सुमति संयोग दुरमति विगू
ची ज्ञ० ॥ ४ ॥ दुतियइम पूज करतांहरै ज
व्यनो । पापघनताप श्रपै श्रपारा ॥ सरग
निरवाण पुरपंथ प्रगटीकरण । विशदशिव
चंद्रकरगण उदारा ज्ञ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मृगमदोज्वल कुंकुम चंदनै । श्रिचर तनां
तर तापनिकंदनैः ॥ जिनवरा नघता मसजा
स्करान् । स्वहितकृद्दिधये चसमर्चयेः ॥ ६ ॥
नुंझी श्रीअर्हं परमात्म० प्रणत० कठिन० नं
दीश्वरा० रिषज्ञानन चंद्रानन वारिषेण वर्ध
माना श्लोत्तरैकशत शाश्वत जिने० चंदनं य

जामहेस्वाहा इतिद्वितीया गंधपूजा सपूर्णम्
॥ दोहा ॥

तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित श्रु
तिहिरसाल ॥ सुरज्जि कुसुमकरि ज्ञवियज
न । करिये ज्ञक्ति विशाल ॥ १ ॥

॥ पांचवरणी अंगीरची एचाल ॥

एह जिनकी पंकहरणी जगतिसारी । मि
लिकरि हरिवर सकल सुरासुर ॥ त्रिकरण ड
क करि हितकारी एह० ॥ १ ॥ अनुजवरस
युत चित्त ज्ञक्तिधरि । पूरव पुन्य उदय नारी
एह० ॥ इणविध कुसुम ज्ञक्ति जिनवरकी ।
करइ हरइ धनदुरितारी । एह० ॥ २ ॥ मा
लती नागपुन्नाग केवळी । टमणक कुंद सुग
धिधारी एह० ॥ मरुक केतकी पम्न मोगरा
कुसुममालकरि मनुहारी ए० ॥ ३ ॥ जिनवर
कठ ठवे प्रज्जु श्यागल । कुसुमपुज धरि दुख
वारी ए० ॥ इण विध पुष्प ज्ञक्तिकरि ज्ञवि
जन । वरइ सकल जग सिरि नारी एह० ॥
४ ॥ करिके शुक्लध्यान पावकसें । जस्म वि
पम समकमवारी ए० ॥ चिदानंदधनपद शिव
चंदीपम । पामे श्रुतिगुण विसतारी ॥ ए० ॥ ५

॥ काव्य ॥

ऋव दवानल ताप घनाघनं । कुशल चंद
 न नंदन काननं ॥ विज्ञद शारद चंद समा
 ननं । जिनगणं कुसुमै ऋच समर्चयेः ॥ ६ ॥
 नुंजीश्रीं अर्हं परमात्मज्योऽनंता० ॥ प्रणत०
 कठिन० नंदी० श्री रिषज्ञानन चंज्ञानन वा
 रिषेण वर्धमाना निधान अ० जिने०ज्यो पु
 ष्यं यजामहेस्वाहा ॥ इतितृतीयपुष्पपूजा ॥ ३

॥ दोहा ॥

जगनायक जिनचंद नी । एह चतुर्थिजा
 ण ॥ धूपपूज करिये सदा । हरिये कुमति
 अनाण ॥ १ ॥

सबअरतिमथनमुदारधूपं एचाल ॥

जग कुशलकारि अघालि हरणं । धूपपूज न
 दाररे ॥ धूप अनलै कुगति दुखजर । फलद
 दहन अपाररे ॥ १ ॥ ज० ॥ सरस चंदन
 अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे ॥ कुंदरु
 क्वली सेलारस । करिये गंधवांठि साररे ॥
 २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो ॥
 धूपनृत करधाररे । सुर पुरंदर पूजकरतां ॥
 लहै लान्न अपाररे ज० ॥ ३ ॥ धूपपरिमल

महमहैं जिम ॥ तेम जुवन मऊाररे ॥ धूप
पूजा ते नविकनो । गुण सुगंधि विचाररे ॥
जग० ॥ ४ ॥ नव अधकूप पतत उधरत ।
धूप अरचन धाररे ॥ कहत गणि शिवचंद
पाठक । पूज चतुर्थी साररे ज० ॥ ५ ॥

॥ काच्य ॥

नव सुदुस्तर वारिधि तारणं । विषय
सौख्य विकार निवारकं ॥ निरुपमोत्तर मंग
ल कारकं । जिनगणं धृतधूप करायते ॥ १
नुंजी अर्ह परमात्म० प्रणत कठिन० ॥ नंदी
श्वरा० श्री रिपज्ञानन चंद्रानन । वारिपेण
वर्धमानान्निधान अ० धूपं यजामहे स्वाहा
इति चतुर्थी धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

दीप पूज इह पचमी । करिये विविध
प्रकार ॥ दीप पूज करतो नविक । दीपे
जगतमऊार ॥ १ ॥

॥ तेरी पूजायणी तेरसमै एचाल ॥

मेरी लगीय प्रीत प्रजुचरणा । जिनगुण
परिणति करण कारण ॥ सकललोक सुखकर
ण मे० ॥ १ ॥ गहिरसिंधुजव निपतित ता

रण । तरण तरणिगुणधरणे ॥ अनंतरूपधर
दुरगतित्रय हर । परमज्योति अधिकरणे मे
० ॥ २ ॥ करुणाधार विमलगुण आगर नि
रूपमञ्जुशरण शरण मे० । एजिनचरण दीप
पूजनसे ॥ श्रुचीजे दुख हरणे मे० ॥ ३ ॥
केवल विमल चिदानंद लहिये दीपपूजके क
रणे मे० । रत्न दीपसे करै आरती हरिगण
जिनगुण चरणे मे० ॥ ४ ॥ एप्रभुचरण सेव
नवि जनकुं ॥ अमृत पद सुवितरणे मे० ।
कुमति रजनि अज्ञान तिमिर हर । वर शि
वचंद्र सु किरणे मे० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरु कषाय
करेणु समीरणं ॥ मद धराधरता वल वैरिणं
जिनगणं प्रयजे वरदीपकैः ॥ ६ ॥ नुँझी पर
मा० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीरिषजा
नन चंद्रानन वारिषेण वर्धमान अ० दीपं य
जामहे स्वाहा ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५

॥ दोहा ॥

बठीअकृत श्रचना । करिये धरि शुन
जाव ॥ वरिये सिधुवधू परम । अकृत

सुख नोदाव ॥ १ ॥

॥ हांहोरे देवा वावनाचठनघसिकुमकुमा ॥

हांहोरे वाला एजगढीसर हितकरू । अ

लवेसर जिनमाहाराजए ॥ अतिगहिरान्नव

जलधिते । प्रचुतारण तरण जिहाजए हां०

१ ॥ ज्जीमकरम कुंजरघटा । जजन मृगराज

समानए ॥ हाहोरे वाला नव्यकमल प्रतिवो

धिवा । एप्रचुवासर महिरानए हां० ॥ २ ॥

रजत शालि तदुलमयी अक्षत पूजन अग्रसा

रए ॥ एपूजा जिनचंद नी । वांठित सुखनी

दातारए हां० ॥ ३ ॥ ठवणजिनंद दरसणअ

वै । अनुन्नव रसतरुनो कंदए ॥ नावजिणे

सरदरसनो कारण कह्यो सकलजिणंदए हां०

४ ॥ ए पाठक शिवचठने । जिनचरण शरण

आधारए ॥ प्रतिन्नव ज्ञय ज्योयेकही ठठी ।

अक्षत पूजासारये हा० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

विजित मठर नूधर धीरत । निहत साग

रराजगलीरत ॥ प्रदित पातकयोध सुवीरतं

जिनगणं प्रयजेक्षत पूजया ॥ ६ ॥ सुंझी

अर्ह परमात्मज्यो अनंता० प्रणत० कठिन०

नंदीश्वरा० श्रीरिषज्ञाननचंद्रानन वारिषेणव
 र्धमाना जिधानाष्टोत्तरैक० जिने० श्रुततयजा
 महे स्वाहाः ॥ इति ठठीश्रुतपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

हिवपूजा नैवेदनी । सप्तम अतिहिवि
 साल ॥ करिये जिनवरनी श्रुचल । लहि
 ये मंगल माल ॥ १ ॥

॥ राग जिनगुणगानं श्रुतश्रुतं एचाल ॥

जिनवरदरसण वरश्रुतं । ए जिनदरश
 ण श्रुत फरसै ॥ जवि तजि मिथ्याश्रुयगुण
 तं जि० ॥ १ ॥ जगदीसरपरमात्मदशापद ।
 पामें श्रुनुपम कांचनतं ॥ तिणसें सुरपति प्र
 नुदरसणवरि । जगते गावें जिनचरितं जि०
 २ ॥ मोदक घृत वरखजाक परमुख । वरनैवे
 दसरसधरितं ॥ हरिगण जगप्रभु श्रागलढो
 वें । मणिमय कनकथाल जरितं जि० ॥ ३ ॥
 जे नैवेद करी जिनपूजन । करइ तेह जगम
 न हरितं ॥ अतिही स्वादु सुरगति शिवपद
 सुख । ततिनित सेवें जवितुरितं जि० ॥ ४ ॥
 विंशति पदमें ये जिनपतिपद । वरशिवचं
 द विमल श्रुमितं ॥ इणपद सेवक जविजन

केरो । सचित नूरिहरइ दुरितं जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविज्ञानमयस्वरूप । समस्त लोकत्रय
 नूतिनूपं ॥ लसफुणौघामृत चारुकूपं । यजे
 सुनैवेद्यचया जिनीधं ॥ ६ ॥ नुंकी श्रीअर्हं
 परमात्मज्योऽनता० प्रणत० कठिन० नंदी० श्री
 रिषज्ञानन चंद्रानन वारिपेण वर्धमाना जि
 धाना षोडशैकं जिने० ज्यो नैवेद्यं यजामहे
 स्वाहाः ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिनफल पूजा अष्टमी । कष्टअनिष्ट वि
 दार ॥ करिये शुभजावे सदा । जरिये पु
 न्यजंकार ॥ १ ॥

॥ तेजतरणि मुखराजै एचाल ॥

सुरनायक जसगावे । जिनजीको सुर० ए
 अंकली ॥ निरमल मनवच काय करणते ।
 लुलि २ शीस नमावे । सुर अवतार सफल
 ज्योमेरो । जिनपूजन सुपसावे जि० ॥ १ ॥
 नयनचक्रोर चद्र समज्योती । सचितदूर पु
 लावे ॥ निरखि २ मनमोहन मूरति । अणंद
 अगनमावे जि० ॥ २ ॥ नालिकेर नारगी क

वला । केला श्याम अणावें ॥ पूंगीफल दाहि
 म परमुखफल । जिनवर चरण चढावें जि०
 ३ ॥ जेजवि फलपूजा जिनवरकी । करैकरा
 वेंजावें ॥ अनुमोदे तेपरमचिदानंद । घनशु
 मृत फलपावें जि० ॥ ४ ॥ वरस श्रुहार ठि
 होत्तर जेठें । प्रतिपद सुकल सुहावें ॥ चंद्र
 सूनुवासर जयनगरै । खरतर गच्छजगचावें
 जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरि सूरीसर । वि
 जयमान वरुदावें ॥ रूपचंद गणिपाठक पा
 री । वादींद्र विरुद धरावें जि० ॥ ६ ॥ ता
 ससीस वाचक पुन्यशील सिष ॥ समय सुंदर
 कहिरावें ॥ तासुसीस पाठक शिव चंदै । पू
 जरची मनजावें जि० ॥ ७ ॥ जेनंदीश्वर शा
 श्रुत जिनकी । वसुविध पूजरचावें ॥ तेजन
 सकल लोकके ईश्वर । तीर्थकरपद पावें जि०
 ॥ कलश ॥

सुरपति सुरासुर वृंद वंदित चरण पंकज
 मघहरं । सतद्वीप नंदीश्वर जिनालय परम
 तर सुख माकरं ॥ अति विज्ञद हिमकर चं
 षिका मल निखिल गुण मणि सागरं । जि
 नराज गण मह मर्चये वरफल चयैः करुणा

कर ॥ ९ ॥ जूँजी श्री परमात्मज्यो ज्ञता०
 प्रणतस० कठिन० नंदीश्वरा० श्री शपज्ञा
 नन चंद्रानन वारिपेण वर्धमाना जिधानाष्टो
 त्तरैकशत शाश्वत जिनेद्देज्यः फलं यजामहे
 स्वाहा ॥ इत्यष्टमीफल पूजा ॥ ९ ॥

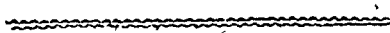
॥ दोहा ॥

पूरव दिसि अंजन गिरी । मंदिरगत जि
 नराज ॥ अफविधि पूजा ये सदा । अरची
 जै हितकाज ॥ १ ॥ पूरव परमुख चिञ्ज दि
 सै । पुक्कारणी अजिराम ॥ दधि मुख चउमं
 दिर जिना । अरचीजै शुभ काम ॥ २ ॥ ई
 शानादि विदिशिगत । वसुरतिकर गिरिराज
 मंदिर गत जिनराजकी ॥ करिये पूजसमाज
 ३ ॥ दक्षिण अजनशैलमें । चउ दिशिदधि
 मुख सार । चउमंदिर जिनराज की ॥ करिये
 पूज उदार ॥ ४ ॥ दक्षिण दिशि अजन गि
 री । मंदिरगत जिनराज ॥ वसुविधि पूजा
 ये सदा । पूजी जे हित काज ॥ ५ ॥ दक्षि
 ण ईशानादिकै । विदिशि अतिहि उदार ॥
 अफ रतिकर गिरिवर जिना । पूजो विवि
 ध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशि अजन गिरी

मंदिर जिन महाराज ॥ वसुविध पूजा ये स
 दा । पूजो नविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम
 अंजन शैलने । चउदिशि दधि मुखधार ॥
 चउमंदिर जगनाथ की । पूज करो सुखकार
 ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै ॥ विदिशें जगहि
 त काज । अरु रतिकर गिरि जिनप्रते ॥
 अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्तर दिशि अंजन
 गिरी । मंदिर गत जगराय ॥ अष्टविधार्चन
 से नविक । अरचो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥
 उत्तर अंजनशैलने । चउदिशि दधिमुखनाम
 चउमंदिर तीर्थज्ञने । अरचो शुभ परिणाम
 ११ ॥ उत्तर ईशानादिके । विदिशें रुचिराका
 र । वसु रतिकरगिरि जगविभू ॥ पूजो अरति
 विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल ॥
 कोठारी चितचंग ॥ इनके आग्रहसे करी ॥
 पूजा अतिहि सुरंग ॥ १३ ॥



॥ इति श्री नंदीश्वरजीकी पूजासंपूर्णा ॥



॥ अथ पांच कल्याणक पूजा ॥



॥ दोहा ॥

ज्योतिरूप जगदीसनो । अद्भुत रूप अनू
प ॥ प्रवचनप्रभुता प्रगटपण । जय जय
ज्योति सरूप ॥ १ ॥

चौबीसे जिनवर नमी । पच कल्याणक
रूप ॥ शासन नायक वर्णवु । दर्शन ज्ञा
न सरूप ॥ २ ॥

कल्याणक उच्छ्वकरै । इन्द्रादिक जे देव
तेजावे न विजन करै । श्रीजिनवरनीसेव

॥ राग सरपदो ॥

जोतिसकल जगदीसनी । हां रेज० हे ॥
च्यारनिक्षेप प्रमाण । नाम जिनादिक जिन
कह्या । अगम मांहिप्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणाजिण नामा । ठवण जिणानं
जिणंद पणिमानं ॥ ढहुजिणा जिण जीवा ।
जावजिणा समवसरणच्छा ॥ १ ॥

॥ ढालतेहीज ॥

विनकारण कारजनही हां रेका०ए । एसव
 लोकप्रसिद्ध ॥ ज्ञावनिद्धेप प्रधानता । कारज
 रूपेंसिद्ध ॥ २ ॥ विनश्याकारें दुब्यनो हां०
 दु० । नज्जवें थापन सिद्ध ॥ नामविना आ
 कारनो । प्रगट पणै नविद्युद्ध ॥ ३ ॥ नामा
 दिक कारणसही हां०का० इनविन ज्ञावन
 होय । ज्ञावविद्युद्धै जिनतणी पूजकरो सज्ज
 कोय ॥ ४ ॥ विवहारै निञ्चय लहै हां०नि०
 कारण कारज होय ॥ पावळ ज्ञालाक्रमकरो ।
 सोधचढै सज्जकोय ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा । लोकालोक प्रका
 श ॥ व्यापक ज्ञावें थिर रह्यो । शुद्ध वि
 कास विलास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हांहोरेदेवा जोतिसकल जिनराजनी । स
 ज्ज लोकालोक प्रकास ए ॥ हांहोरेदेवा राजत
 श्रीजिनराजजी । वांणी प्रवचन शुद्धवासए १
 हांहोरेदेवा मात नमुं नित सारदा । गुरुपंच
 कल्याणक सारए ॥ हांहोरेदेवा तीर्थकरना

वर्णवुं । गुणशास्त्र परंपरधारण ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक-जगधणी । त्रिभुवन पति
परमेस ॥ पर उपगारी प्रभुतणा । गुण
गावत सज्जवेस ॥ १ ॥

॥ ढालतेहीज ॥

हांहोरेदेवा । वीसथान करि सेवना वां
ध्युजिननाम प्रधानहे । हांहोरेदेवा दिव्यअ
मरसुखअनुभवें ॥ प्रायेप्रभुपुन्य प्रमाणए १
हांहोरे देवा निरमल तरवरज्ञानना । धारक
कारक शुभयोगए ॥ हांहोदेवा शब्दचरणरस
गधना । शुभफरस तणा वरजोगहे ॥ ४ ॥
हांहोरेदेवा शाश्वत सिद्धायण तणा । नितउ
च्छ्वकरत सुरंगए ॥ हांहोरे वाला बालचद
पाठक कहै । नितमंगल होतसुचगहे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पुन्य पूर्वजव प्रभुतणो । प्रगट्टो प्रगट
प्रजाव ॥ सुरकुमरीनित प्रतिकरें नाटक
नवनवजाव ॥ १ ॥

॥ पूर्व मुखसावनं एचाल ॥

शुभ निजदर्शने करियगुणकर्सना । जिन

चरण सेवना ॥ विवधकारीहेअइयो विविध
 कारी आ० । एक जिनधम्ममय परमलीनता
 दीनतासकलतज रजनिवारीहे अइ० ॥ १ ॥
 आत्मगुणअंतरातमपणैवृत्तित्तातजिय बहिरा
 त्मजिन आणधारी हेअ आ ॥ २ ॥ सुअसम्य
 क्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुध धर्मस
 चिन्नाससारीहे०अ० । विविधमणिरत्ननीजो
 तिऊगमगजगें । चंद्रिका नासनासितकरारी
 हे अ० सित० ॥ ३ ॥ प्रवर कुलशुद्धराजन्य
 प्रमुखेंमुदा । आयुकर बंध नरत्तव सुधारीहे
 अ० न० ॥ गर्भ अवतार निजमात उदरेंल
 है । बालशुद्धलग्न शुद्धयोग चारीहे अ० ।
 योगचारी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्धदिन शुद्ध मज्जरत घणी । शुद्ध उच्चग्र
 हचार ॥ देवलोक चवि प्रचुलहै । मातुउ
 दर अवतार ॥ १ ॥

सुंदरवरप्रासाद महि । मध्यनिशा जिनमा
 त ॥ स्वप्नदेख सुखसेजमें । जाग्रत अति
 हरषात ॥ २ ॥

॥ राग घाटाचैती ॥

जिनजी जजो जवि प्यारा । याते आ
 नंद अथिक अपारा जि० ॥ १ ॥ सुख सेऊ
 सूती जिन माता । देखैं सुपना मनजाता ॥
 चित हरखित ज्ञय तिणवारा जि० ॥ २ ॥
 शुचि गज वृष सिंह मनुहार । लट्ठमी दाम
 ज्ञज्ञी दिनकार । धजकुंज पदमसर सारा जि०
 वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोज्ञय मेरु
 समान निर्धूम पावक सुखकारा जि० ॥ ३ ॥
 शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ ह
 दय क्रमधारी ॥ शुनसूचक पुन्य सजारा जि०
 सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरि
 कारंगे । निशिशेषगई तिण वारा जि० ॥
 ४ ॥ एकही पुष्पमाला चढाइये ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष परमात्मा । ज्ञावी जगवन
 जास ॥ प्रवचन प्रगटकरण प्रज्जु । पुन्य
 तर्णें सुप्रकाश ॥ १ ॥

॥ पूजा सतर प्रकारी एचाल ॥

आज आनंद वधाई जई त्रिजुवनमें ।
 चवद सुपन सूचित गुण जेहनां ॥ अवतरे
 माता उदर नेमें । आ० ॥ १ ॥ नृपति सद

न वज्र सुपन शास्त्र विध । अर्थ विचारक
 रि निज गनमैं ॥ पुत्र रतन फल वचत नृप
 ति कुल परम कल्याण होत जननमैं ॥ आ०
 २ ॥ प्रफुलित हरख जरत हिय झलसत ।
 जिन जननी तात सुनि तनमैं ॥ दिन दिन
 बढत पूवर धन जन मन । अधिक उठाह
 घर घरनमैं आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि
 माणक मोतिये । संख प्रवाल शिल वरसन
 मैं ॥ धनद धनद सुरइंद्र जकमते । जरत
 जंकार नृपसदन मैं आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल
 मधु वीण बजावत । गीत गीततननमैं ॥ दु
 न्दुजि मुरज मृदंग घन गरजत । गरज २
 मानुं जैसे घनमैं आ० ॥ ५ ॥ १ ॥ पूर नर लोक
 मांऊ अधिक उठाहवाह । निशदिन होत जन
 जनपदमैं । इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत । म
 नोरथ होत जोजो मातु मनमैं आ० ॥ ६ ॥
 परम कल्याण शुभयोग संयोग ज न
 नघरि शुभग्रह शुभदिन मैं ॥ वरण सति १न
 ताहि कवि श्वसर कौ । आनंद जयो त
 नुवन मैं आ० ॥ ७ ॥ इति च्यवन पूजा ।
 नुंजी परम० श्र० ज० श्रीच्य० स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटे पावन पतित प्रजु । अधम उधार
न काज ॥ नृपकुल मांहे अवतरे त्रिजुवन
के शिर ताज ॥ १ ॥

॥ राग सौरठी ॥

आजअधिक आनंद ज्योरेवाला । आज
सुरंग बधाई रे ॥ जगपति जिनवर जनमि
यारे वाला । सुरबधु वन मिलआई रे १ ॥
आठोआज आनंदघन उलटो रेदेवा । दिश
कुमरी हरपाई रे ॥ आठोदशदिश निर्मलता
घई रेदेवा । फूलरही वन राई रे ॥ २ ॥ फू
लै फूली वन लतारे वाला । मधुमालती म
हकाई रे ॥ शालिप्रमुष सज्जधाननारे वाला ।
निपजी रास सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें
नरकमारे वाला । कृणइक साता पाई रे ॥
सद्यजन मन हरषित ज्योरे वाला । जूमंऊल
ठविठाई रे ॥ ४ ॥ शुनदिन शुनमऊरतघली
रेवाला । शुनग्रह शुनपल आई रे ॥ जन्मय
यो जिनराजनोरे वाला । प्रगटीपूर्व पुन्याई रे
५ ॥ पुष्पत्रयांगुलायजलययाकरे ॥

॥ दोहा सौरठी ॥

त्रिभुवन माहिसुरूप । जन्मसमय जिनरा
जनें ॥ वाजिन्न वजत अनूप । सुरनरकृत
उठव ज्ञवें ॥ १ ॥

॥ रावणनीरत वणावेहोजलां एचालमें ॥

आजआनंद बधाई रे ॥ देखोआ० ॥ ज
यजय कारजयो जिनशासन ॥ सुरकुमरी ह
रषाई रे दे० ॥ १ ॥ घर२गौरी मंगलगावत
मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईत उपद्रव जय
सब जागे । खार समुद्रें जाई रे दे० ॥ २ ॥
आज सनाथ जयोहै त्रिभुवन । जिनवर ज
नम्या जाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष ज
यो है । धन धन मात कहाई रे दे० ॥ ३ ॥
जन्म महोच्छ्व करननकुं सब । दित्रिकुमरी
मिल आई रे ॥ कर कदली गृह सुंदर रचना
पावन कर ऊर लाई रे दे० ॥ ४ ॥ जिनज
ननी जिनवर पय प्रणमी ॥ मस्तक आण
चढाई रे । स्नान करावत उजय जरीरें ॥ तै
लाज्यंग कराई रे दे० ॥ ५ ॥ नूषण नूषित
अंग विलेपन । देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्प
ण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल डु
लाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरन के फूल सुगंधित

सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होमकरी रक्षापोटरि
या । जिनवरकरै बंधाई रे दे० ॥ ७ ॥ मंगल
गावत जिनजग जननी । निजगृह माहेठाई
रे सफलज्यो निजआतम जाणी । दिशकुमरी
घर आई रे दे० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अतिहि अधिक उच्छ्वकरी । गइकुमरी
निजथान ॥ इंद्रहिवें उच्छ्व करै । जन्म
समय जिन जाण ॥ १ ॥

॥ रागगौरी सांऊसमेंजिनवंदो एचाल ॥

आजउलव मन जायो रे ॥ देखोमाई ॥ ज
गजननी जिनजायो रे देखो आ० ॥ त्रिजुवन
माहि प्रकास ज्यो है । इंद्रासन थररायो रे ।
दे० आ० ॥ १ ॥ अविधि ज्ञान घर जिनजा
कुं निरखत । हृदय कमल जलसायो रे ॥ ह
रिणेगमेपी इंद्र जकमते । घटसुधीप घुरायो
रे दे० ॥ २ ॥ वनठुन नवररूप मनोहर । सु
र समुदय मनजायो रे ॥ सुरकुमरी वररूपण
रूपित । अदभुत रूप वनायो रे दे० ॥ ३ ॥
नवनव यानवाहनरच सुरवर । सुरगिरिशिख
रें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उच्छ्व ।

मेघ घटा घररायो रे दे० ॥ ४ ॥ कालीघटा
वरदामनिं चमकत । दादुर मोर सुहायो ॥ अ
तिहि सुगंध पुष्प व्रज वरसत । मोतियन की
ऊरलायोरे दे० ॥ ५ ॥

प्रभुप्रतिमापंचतीर्थी ज्ञीतरसेंल्यावें । सिं
हासणपरस्थापनकरैस्नात्रपूजाकरावें ॥

॥ दोहा ॥

शक्रजाय जिनवर गृहें । जिनजननी जिन
राज ॥ प्रणमी श्री महाराजनी । जक्ति
करै सुरराज ॥ १ ॥

॥ सुंदरनेम पियारो माई एचालमें ॥

तुमसुत प्रानपियारो माई तु० ॥ आं० ॥
जग वत्सल जगनायक निरख्यो धन २ ज्ञाग
हमारो माई तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तु
मसुतजायो । अधम उधारण हारो माई ॥
धन २ प्रगटजयो जगदिनकर । त्रिभुवन तारन
हारो माई तु० ॥ २ ॥ सबसुर चाहत स्ना
त्र करनकुं । सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥
करजीही प्रभु अरजकरतज्ञं । सब जनकाज
सुधारो माई तु० ॥ ३ ॥ मैंसेवक तुमसुत च
रननको । आयोहं अधिकारो माई ॥ इंद

कहें पटपंकज प्रणमं । नयसत्र दूरनिवारो तु०
 ४ ॥ पांचरूपकरि प्रभुजीकुं लावे । पांहुगव
 न सिणगारो माई ॥ चोसठ इद्र महोत्सव
 करिहैं । पूजन अष्टप्रकारो माई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पंचरूप कर इद्र जिन । पंहुगवन लेजा
 य ॥ सिहांसन उठरंग गहि । स्नात्र करे
 सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनोगुमाननकरियेंठवीलीराधाहेए० ॥

जिनजीको पूजन करिये । हारे होरंगीले
 श्रावकहो जि० ॥ द्रव्यजाव वज्रजेदेकरता ।
 नयसागर निसतरिये जि० ॥ १ ॥ गगाजल
 चदन पुष्पाटिक । अष्टविध मंगल धरियें ॥
 जाधविगुष्टे जिनगुणगावो । नाटक नवनव क
 रियें जि० ॥ २ ॥ वज्राविध प्रभुकी शक्ति र
 चावत । वर्ननकरन नतरियें ॥ वोशानद दे
 खैं सोडुजानें । दुससत्र दूरेंहरिये जि० ॥ ३ ॥
 पूजनकर प्रभुकुं घरत्यावे । श्रातम पुन्यैजरियें
 करअठाहो महोत्सव श्रायत । सयसुर मिल
 निजधरिये जि० ॥ ४ ॥ इतिश्री जन्मकल्या
 णकं ज० श्री अष्ट द्रव्य स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

सुरकृतउच्छ्व अति अधिक । जये अनंतर
प्रात ॥ मातपिता उच्छ्वकरें । निज कुल
क्रमविष्यात ॥ १ ॥

पारनहीधनकेजहां । अगणित नरेनंकार ॥
दानमनो वंछित दिये । दयावंत दातार
॥ गात्रलूहे०एचाल ॥

जिनजन्म महोच्छ्व रंगसुरे । जयेप्रातक
रतउक्क रंगसुरे ॥ हां रेदेवा रंगसुं ॥ नृपउच्छ्व
व करै अतिघणुं ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुलक्रमक
रै रेदेवा । जगजस कीरतविस्तरें वि० । घ
रघरउच्छ्व रंगमें ॥ २ ॥ सुरवधुमिल सुरसं
गसुं रे ॥ करेनाटक नवनव रंग सुं रे रं ० ॥
हां रे बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपाति
शयें शोभता रे देवा । इंद्रादिक मन मोहता
रेवा०मो० हां० । विद्याप्रभु विस्मयवती ४
परमप्रमोद प्रवीणतारे देवा । सुरकीला अं
तिशयवता रे देवा अ० ॥ वैक्रिय शक्तिसमे
लसुं रे देवा ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगसुं रे देवा
वाजित्र नवनव रंगसु रे देवा अ० ॥ वजित
अहोनिशिसंगसुं रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीनज्ञान अतिशय धरै । अतिशय कला
सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीडातिशय । अति
शयगुण अन्निराम ॥ १ ॥

॥ पचवरणी अंगीरचीकु०एचाल ॥

वरणीन जातीरे व० । जिनजीकी सोजाव०
न जाती ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरषत ।
शोर न श्रैसोजगजाती जि० ॥ १ ॥ अनत गु
णेंकरि सोजित प्रभुजी । सुद्ध सवेग सोवन
जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निसदिन ।
पुन्यपुरुष पायाराती जि० ॥ २ ॥ परउपगारी
परम पुरुषोत्तम । अदभुत अनुभव रस पा
ती ॥ कामभोग वरविवुध प्रकारे । प्रातनये
सुखसघाती जि० ॥ ३ ॥ जसु जसख्यात प्र
गठ त्रिभुवनमे । कुल राजन्योत्तम जाती ॥ ध
नरतीन भुवनके साहिव । श्यामहमारो वर
गाती जि० ॥ ४ ॥ इद्ध अहो निश जावन
जावत । देख दरस अति हरपाती ॥ दुन्दुभि
प्रमुख वाजिन्न वजतनित । सुरवधु वनमंग
लगाती जि० ॥ ५ ॥ नुँझी प० पुष्प वासद्धे
प चढावे ॥

॥ दोहा ॥

प्रवरन्नोग प्रनुपुन्यते । प्रगटिं प्रगट प्रधा
न ॥ गुणग्राहक गृहवासमें । दर्शन ज्ञान
निधान ॥ १ ॥

प्रनुविन दीनानाथ दया । विन कौन क
हावत कोई रे प्र० ॥ गृहवासै सुधसंयम धा
री । शुद्धसुजावे होइ रे प्र० ॥ १ ॥ सम्यग
दर्शनज्ञव निर्वेदे स्वतन की जरषोइरे । प्रनु
ता प्रनुकी कोकहि वरने ॥ सुरनर नारीमो
हीरे प्र० ॥ २ ॥ शुद्धलेख्या शुद्धध्यानरमें नि
त । श्यातम निरमलधोइरे ॥ श्यात्मरूप नि
हारत निजघर । संगसुमति जह जोइरे प्र०
३ ॥ प्रगट प्रकास श्यात्मउजियारे । सामक
हावत सोइरे ॥ गृहवासै सुधसंयम रागी ।
लागी लगनसवाइरे प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता
प्रनुजीनो लीनो । अंतरशत्रु विगोइरे ॥ वि
षयवासना ढीणज्ञइलख श्यातम शक्तिसुंठोइ
रे प्र० ॥ ५ ॥ इमकही फूलचढावे ॥

॥ दोहा ॥

दाता दीन दयाल प्रनु । देतसंवत्सरीदा
न ॥ दूरकरै दालिद्वजग । त्रिनुवन मांहि

प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानंदनकी क्याठविलागतप्यारी ॥
 जगपति जिनवरकी । क्याठवि मोहनगा
 री ज० ॥ मोहत प्रभुकेमोहनरूपें । निरपनि
 रपनरनारी क्या० ॥ १ ॥ जोगकर्म अंतरायक
 र्मकष्टु । क्षीणज्ञए निरधारी ॥ दानसंवत्सरघ
 नजिम वरसत । पृथ्वी प्रमुदित कारी क्या०
 २ ॥ नवलोकान्तिक देवसवेमिल । हाजरहोय
 सुचारी ॥ जयजय मंगल शब्द उचारत । ध
 र्म गहोसुख कारी क्या० ॥ ३ ॥ दानधर्म शिव
 मारगप्रभुजी । प्रगटकियो हितकारी ॥ दाता
 दीन दयाल जगतमें । जिनसम कोसुविचा
 री क्या० ॥ ४ ॥ इन्द्रादिक सुरसुरी नरनारी ।
 दीक्षोत्सव अतिजारी ॥ गानदान सनमानता
 नकरि प्रभुगति सकलसुप्यारी क्या० ॥ ५ ॥
 तजि ससार लियो शुभयोगें । शंभु सतरप्र
 कारी ॥ मनपर्यव वरज्ञान जयोतव । विहरत
 पर उपगारी क्या० ॥ ६ ॥ मुँडी प० अ०
 ज० श्री० दीक्षा० अष्टद्वयं० स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ । पायक कीला

कोम ॥ जिनदीक्षा महोच्छ्वसमें । हाज
 रहोयं तिणठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुरअ
 सुरनर । प्रनुकुं करेप्रणाम नरनारी आसी
 सदे । जयजय त्रिनुवन साम ॥ २ ॥ त
 जआश्रव संवरगहै । संयमजाव निधा
 न ॥ सबसंसार तजीकरी । नएअणगार
 प्रधान ॥ ३ ॥

॥ तेरीपूजावणी तेरसमें एचाल ॥

धारी धारी धारी जिननए संयमपदधा
 री । चरनकमल बलिहारी जि० ॥ पंचसुमति
 धर तीन गुपतिकर । सबजीवां सुखकारी जि०
 १ ॥ जीतलिये उपसर्गपरी सह ॥ सत्रुसेना
 गणजारी । नयनैरव तेनिप्रकंपनए । निर्म
 मनिर हंकारी जि० ॥ २ ॥ क्रोधमान माया
 लोअ अकिंचन । आकिंचन ब्रम्हचारी ॥ पुष्क
 रसम निरलेप जगत गुरु । निरंजन अवि
 कारी जि० ॥ ३ ॥ चेतन परप्रनु अप्रतिधा
 ती । खेसम निराश्रयारी ॥ खड्गीशृंग परे
 एकाकी । अप्रतिबंध विहारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

रत्नत्रय परिग्रहकरी । मुक्तिमार्ग अजिराम

निशदिन करत विहारकम । प्रासु कामनिज
धाम ॥ १ ॥

॥ सदगुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ एचाल ॥

जिनवरजी जगहितकारी जि० ॥ जग व

त्सल जगबंधु जगत गुरु । जग नायक जय

कारी ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्री । अप्र

माद नारंरुसुचारी ॥ अतिशय धाम धामनि

जवीरज । वृषभपरै सुविहारी जि० ॥ २ ॥

सूरवीर प्रभु सिंहतणीपर । कुंजर करम वि

दारी ॥ अतिगज्जीर साधरसम शोभित । सौ

म्यलेश्या सुख कारी जि० ॥ ३ ॥ तेज पुज

दिनकरसम दीपत । हेम वरण मनुहारी ॥

सर्वसहन कारक धरणी पर । स्वच्छ हृदयक

जधारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुभ्रुहः ॥ - - - - - । कल्पतीतजिणंद ॥

वीतरागादिचरैप्रवर । रत्नत्रयजगचद ॥ १ ॥

॥ कुमरीनें जादूकारा एचाल ॥

जाके गगद्वेष जया न्यास रे । सोई श्या

म सबल सुखकारा जा० ॥ वासीचदन सम

प्रभु ज्ञानि । अपका रे उपकारारे जा० ॥

१ ॥ कंचन काष्ठ समानहै जाके । सुख दुख
सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत ।
जिनजीहै अधिकारा रे सो० ॥ २ ॥ शिव
सुख असु नवसुख हू नवांलै । वीतराग प्रभु
प्यारा ॥ सूरवीर प्रभु कृपकश्रेणि चढ । मो
हन मल्लपितारा रे सो० ॥ ३ ॥ द्वायक संय
मनें शुभयोगे । अनुत्तर गुणगण धारा ॥ पा
ठकविजय विमलकहै प्रभुके ॥ चरणकमलव
लिहारारे सो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

घनघातीकरकर्मको । द्वायकरद्वायकज्ञान ॥
दर्शनलोकालोकको । प्रगटप्रकासीज्ञान १ ॥

॥ ठूमरी वसमन खितरोकुंठ केतीर ॥

॥ नजले श्रीमहावीर एचाल ॥

पायोप्रभु नवजलनिधि कोतीर पा० ॥ अ
तुलीवल वरुवीर पा० ॥ अनुत्तरजाकैसुमति
गुपतिहै । अनुत्तरहमाधीर पा० ॥ १ ॥ मा
दवआर्यव अनुत्तरजाके । रोक्वोआश्रव नी
र ॥ संवरजोग क्रियानवि विणठी । रही ई
र्यासुखसीर पा० ॥ २ ॥ घनघातीसव सनुवि
नासी । केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरनदर्शन प्रग

टनयो है । निजश्रातम गुणद्वीर पा० ३ ॥
 प्रातिहार्य श्रुतिशय जिनसंपद । जयोश्रुनुकूल
 समीर । देउपदेश नविकप्रतिबोधत । वचना
 तिशयगनीर पा० ॥ ४ ॥ लोका लोक प्रकास
 परमगुरु । कहिनसकै मतिसोर ॥ पाठकवि
 जयविमल परमात्म । प्रनुतापरमसुधीर पा०
 ॥ ५ ॥ नैकीपरम०श्रु०ज० श्रीम०केवलज्ञान
 कल्याणके श्रुद्व्यं० यजाम० स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रादिकसुरसवमिली । तीननुवनसिरदार ॥
 सवदरसीसर्वज्ञनी । महिमाकरेश्रुपार १ ॥

॥ श्रुतुलविमलमिलो श्रुखंरुगुणेनिलो ॥

श्रुतुलविमलप्रनुताप्रनुकीलखचोसठइद्वउक्क
 वधरेए ॥ च्यारप्रकारकेसुरसवमिलकरसमवसर
 णरचनाकरैए आ० ॥ १ ॥ रजतकनकरत्नप्राकारे
 कनकरत्नमणिकगुराए ॥ वृद्धश्रुसोक सिहासन
 सोजित । तीनकृत्र चामरदुरैए श्रु० ॥ २ ॥
 दुन्दुभिप्रमुख श्रवण सुखदायक । गहिरसुरेवा
 जिप्रधुरैए ॥ जानुप्रमाण पुष्यघन वरसत ।
 जलजधलज विकसितसुरैए श्रु० ॥ ३ ॥ सा
 धुसाधवी श्रावकश्राविका । इन्द्रादिकसुरीसुर

बरे ए ॥ नरनारीतिर्यग विद्याधर । द्वादशवि
धपरिषदज्ञरे ए अ० ॥ ४ ॥ नविजनधर्मतणै
उपदेसे । जोजनगांमिमधुर गिरे ए ॥ प्रतिबो
धितचोमुख श्रीजिनवर ॥ निजरज्ञाषाअनु
सरै ए अ० ॥ ५ ॥ वासहेपकोजै ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटपणैप्रनुकीप्रज्ञा । प्रगटप्रकासकरूप ॥
प्रगटीप्रनुतापरमसम । परमातमपदरूप ॥
॥ विगढीकौनसुधारैनाथबिनबि०एचालमें ॥
नूमंलनविकमल विबोधन । दिनकरस
मजिनरायारे नू० । अणज्जते इककोठ अमर
पद । पंकजमर लुनायारे नू० ॥ १ ॥ ग्रा
मनगरपुरपहण बिचरत । त्रिनुवननाथकहा
यारे ॥ चौसठइंद्रकरै जाकीसेवा । तनमनसे
लयलायारे नू० ॥ २ ॥ इंद्राणीमिल मंगल
गावत । मोतियनचौक पुरायारे ॥ सर्वजीव
हितकारकप्रनुजी निश्रेयससुखदायारे नू० ।
३ ॥ नवजलनिधि निर्यामकजगगुरु । तारक
सकलकहायारे । शासननायक संघसकलकुं ॥
प्रवचनतत्वसुनायारे नू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणा
करप्रनुजीकी महिमा । वरनेकोकविरायारे ॥

परउपकारकप्रचुके पाठक । विजय विमलगुण
गायारे जू० ॥ ५ ॥ वासद्धेपकरै ॥

॥ दोहा ॥

निजनिज ज्ञापा जविकजन । तृपतन सुन
तहि श्रोत ॥ मीठी अमृत समगिरा । सम
ऊतश्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहरवो ॥

जिनदवामिलगयोरे । दोयचरणुं परध्या
न शुक्ल मनगह गह्यो रे जि० । ज्ञायकज्ञेय
अनंतनोरे ॥ सबदरसी जिनचद । सुरतरुसम
जग धालहो रे ॥ सेवत सुरनरइंद । धर्ममै
लह्यो रे दो० ॥ १ ॥ चवदम गुण थानक क
रैरे । आतम वीर्य अनत ॥ योग निरोधन
की क्रिया रे । सूखम वादरकत ॥ बंधसबटर
गयो रे । सरब सवर जयो रे दो० ॥ २ ॥
धनकर आत्मप्रदेशनों रे । करशैलेशी कर्ण
कर्म सकल दूरै, क्रिया रे । जीर्णवस्त्र जिमपर्ण
मुक्ति पद जिम लह्यो रे दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान
क्रिया कर कर्मको । द्वय कर पर अनुबंध
निजआतम रूपे लह्योए ॥ शाश्वत सुख संबं
ध । सिद्ध सुध बुध थयारे दो० ॥ ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

शुक्ल शुभोचर शुभमगम । सिद्धजएसु
वि शुद्ध ॥ परमात्म प्रभु परम प्रद चिदा
नंद शुभिरुद्ध ॥ १ ॥

॥ रागधनासरी तेजतरणिमुखराजें एचाल ॥
तेजतरणि समराजै । प्रभुजीकोते० ॥ ए
कसमयप्रभु ऊरधगतिकर । मुक्तिमहल सुवि
राजै प्र० ते० ॥ १ सादिश्रुनंत सदासाश्रित
वरश्रुनंत महासुखठाजै । अचलश्रुगोचर प्रभु
शुविनाशी सिद्ध सरूप विराजै प्र० ॥ २ ॥
निरुपाधिकनिरुपम सुखप्रभुके । कहिनसकै
कविराजै ॥ श्रुजर श्रुमर श्रुद्वय शुविकारी
सकलानंद सहाजै प्र० ॥ ३ ॥ संवत उगणी
सैंतेरोत्तर । श्रावण सुदिपखराजै ॥ श्रीजिन
राज तणा गुणगाथा । पंचमि दिवस समा
जै ॥ ४ ॥ श्रीविक्रम पुरनगर मनोहर । श्री
संघ सकल समाजै ॥ पंच कल्याणक पूजाप्र
भुकी । कीनीहित सुखकाजै प्र० ॥ ५ ॥ श्री
खरतरगच्छ नायक लायक । युगप्रधान पद
ठाजै ॥ जंगमगुरु नहारकवरश्री । जिनसौ
नाग्य सुराजै प्र० ॥ ६ ॥ श्रीप्रीतविलासध

मर्मसुंदरगणि । अमृत समुद्र सुन्राजै ॥ पाठ
 कविजय विमल प्रभुकेगुण । गावत घनजि
 मगाजे प्र० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिव
 रकी । प्रेरणिया सुसमाजे । श्रीजिन वरकी
 स्तवनाकीधी । धर्मप्रज्ञावन काजे प्र० ८ ॥
 नुँझी प०अनं० जन्मजरामृत्यु निवारकेश्यः
 श्री मज्जिनेंरेयो निर्वाणकल्याणके जलचंद०
 यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ कलत्रपूजा राग मालवी गौळी ॥

सुन्रआरती प्रभुकी उदारचित्तै । करोन्नवि
 करसालरे ॥ प्रथमधूप सुगंधजिनकुं । उखेवो
 जिननालरे सु० ॥ १ ॥ नाल निजकरतिलक
 सुंदर । पहरपुष्य सुमालरे । दक्षिणकर जि
 न राज जूके । करआवर्त्त सुथाल रे सु० २ ॥
 यथासगते सुन्नगते । करोदिल पुसियालरे
 द्व्यजावे विविधपूजा ॥ नविकजाव विला
 सरे सु० ॥ ३ ॥ गुणअनंत महंतगावो । प्रभु
 परम दयालरे ॥ जन्मसफली करो नविजन
 कहैपाठक बाल रे सु० ॥ ४ ॥

॥ इति आरती ॥

॥ इति कल्याणक पूजा ॥

॥ अथ पंच ज्ञान पूजा ॥



॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री केलीसदन । नतसुर अलिङ्गकार ॥
 नाजिनंदपदपद्मयुग । सुरुचिरमानसधार १ ॥
 निखिलजंतुसुखकारिणी । जिनवाणीनुरधार ॥
 पंचज्ञानपूजनतणो । कहस्युंविधिविस्तार २ ॥

॥ ढाल ॥

सकल क्रियानो मूलजे राजै । अद्वैतिक
 जसुमहिमा ठाजै ॥ जेसऊ दुरित तिमिर अप
 हारै । लज्जित कोटि दिनंद अवतारै ॥ १ ॥

॥ उह्वालो ॥

अवतार जसुमतिनाण । श्रुत पुनरवधि
 नाण बखानिये ॥ मनजाव परिणति विशद
 वेदन मनः पर्यय जानिये । वर अनंतानंत
 केवल अपक्रिहय गइ जाणए ॥ प्रतिपत्ति जे
 दै ज्ञान ज्ञाख्युं जिनपती जगजाणए ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

विंशति पदमांहे अष्टम पद ए । ज्ञावे बंदन

करिञ्जव तरिये ॥ नवपद सप्तमपद मनजायो
श्रीतीरथ पति श्रीमुखगायो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

योग्यदेशथित वस्तु जे । विषय प्रगट प्र
तिज्ञास ॥ इन्द्रिय मन कारणकरी । जेद
वतीस प्रकाश ॥ १ ॥ उपयोग क्रमतेक
ह्यो । मति पूर्वक सुयनाण ॥ प्रथम पीठ
त्रवि अरचिये । नमोनमो मइ नाण २ ॥

॥ ढाल ॥

समकित उतपति कालै मतिश्रुत । लवधे
हाय समकाले । सुयनिस्सिय पुन रस्सुय नि
स्सिय । जेदेसुय अजुवाले रे । त्रविका श्रीम
इनाण तेवदी वंदीने चिरनंदोरे ज० समकित
रसनो कदोरे ज० शिवतरु बीजनोवृंदोरे ज०
श्रीमइ० एअकली ॥ १ ॥ अष्टा विंशतिधा
सुयनिस्सिय । अस्युगह१ईहा२वाय३ ॥ धारण
४ एचउपणइन्द्रियमण । करि चउविंशतिथार्ये
रेज० श्री० ॥ २ ॥ नयनमनोविन इन्द्रियसा
रु । वजणुगह चउजेय ॥ उप्यइया १ वेणइया२
कम्मिय ३ । पारिणामिय४ अवसेयरेज०श्री०
३ ॥ उगह इक्कासमयईहावाय । अष्ट मुज्जत्तम

संख ॥ संखकाल धारणउक्लिष्ठ अरचोएहनिकं
खरे ज० श्री० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक युग्मम् ॥

लोकेवग्रहर्द्धहनंपुनरपायोधारणेत्यंचतु । ज्ञै
दैःकृत्प्रमवग्रहोप्युजयथाथो व्यंजनातोर्थतः॥त्व
द्भासारसनाश्रवोन्निरथसावेदोन्मिताव्यं जना
षोढार्थोपिमनोद्वियुक्तरसनात्त्रगघ्राणकर्णैःस्फु
टम् ॥ १ ॥ षोढेहापितथेन्द्रियैश्चमनसापायो
पिषद्घातथा । षद्घैवंखलुधारणापिचमति
ज्ञानंकिलेत्यंचयत् ॥ अष्टाविंशतिधामतं नव
पदेगंधादिभिः पूजन । द्रव्यैरष्टन्निरर्चयामि
तदहंजक्तप्राशिवायामलम् ॥ २ ॥

ॐङ्गीश्रीमति ज्ञानाय जलं १ चंदनं २ पुष्पं ३
धूपं ४ दीपं ५ अक्षतं ६ नैवेद्यं ७ फलं ८
यजामहेस्वाहा ॥ इतिमतिज्ञानपूजा १ ॥

॥ दोहा ॥

सर्वद्रव्यगुणपर्यय । प्रकट करणदिनकार
अगम अपार अनंतश्रुत । गुणगणरयणा
धार ॥ १ ॥ अन्निलापेप्लावित अरथ । ग्र
हणहेतु चिदनूप ॥ समकित मिथ्यातैकरी
बोधाबोधसरूप ॥ २ ॥

॥ रागसामेरी ॥

पूजारेऽवि श्रीश्रुतज्ञान उदार पू० तीर्थ
पतिपद लहि नविजनके यातेकरत उधार १
पू० अस्कर १ सन्नी २ सम्मं ३ साई ४ सपर्यवसित ५
शुभनावे ॥ गमिय ६ अगपविष्ठ ७ एचउदह ।
नेदविपर्ययनावे पू० ॥ २ ॥ पर्यायादिकसमा
ससहितयह । विशतिधापुनहोवे सर्वचरणकर
ण क्रियाधार । पातिक कलिमलखोवे पू० ३
इकइकश्रुत अक्षरनां करता । स्वपरविज्ञाग
विचार ॥ होवेपर्ययराशिअनंती । सामेरीम
तिधार पू० ॥ ४ ॥

॥ उलोक ॥

यदक्षरमथोजिधावद्वतमादियुक्तंततः । सप
र्यवसितचवैगमिकमगविष्टतथा ॥ नजासहस
मासत पुनरिमानिचेत्यंश्रुतं । चतुर्दशविधंय
जेनवपदेशुनैरष्टनि ॥ १ ॥

नुंजीश्रीश्रुत ज्ञानाय जलं० यजामहेस्वाहा ॥
इतिश्री श्रुतज्ञान पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

द्रव्यक्षेत्र पुनकाल श्रु न्नावे विषयप्रमाण
घेदैरूपीद्रव्यकों नमोनमोऽवधिनाण १ ॥

॥ कुणखेले तोसुं होरीरे एचाल ॥

अवधिज्ञान नित नजियैरे निज विमल न
क्तिसें अनुगामी ते देशांतरगत ज्ञानीनें अनु
गमियेरे नि० ॥ १ ॥ जिमबज्ज बज्जतर दारु
प्रक्षेपे कालाजलन वधैये रे नि० सुविमलविम
लतराध्यवसाये वर्धमान जग जयियेरे नि०
प्रतिपातीते एककालमें दीपइवास्तं गमियेरे
नि० सेतरनेदे गुणकारण यह बडा उहीकहि
येरे नि० ॥ ३ ॥ नव प्रत्ययिते बज्जतर नेदे
सुरनिरि नवमां गहियेरे नि० परमावधि अ
निरामचंद्रोदयेनिहचे केवल लहियेरे नि० ४

॥ उलोक ॥

यच्चैकं ह्यनुगामिचान्य दुदितं संवर्धमानं त
था तार्तीयं प्रतिपात्य मूनिहि पुनर्नज्यूर्वका
णीदृशं । षोढारूपि पदार्थ मात्र विषयं श्री
सिद्ध चक्रेनघे द्रव्यै रष्टनिरादरात्तदवधि ज्ञा
नं ज्ञानै रचये ॥ १ ॥

जुंझीश्रीअवधिज्ञानायजलंचं० यजामहेस्वाहा
इति अवधि ज्ञानम् ॥

॥ दोहा ॥

जेसप्रम गुणठाण थित ऋद्धिमंत मुनिराय

उपजे तसञ्जुविपुलमतिजेदेमनपर्याय १
 मूर्त्तवस्तु अवलंबियह द्रव्यक्षेत्र अरुकाल
 जावेचउहाजाणिये अरचिलहोसुखमाल २

॥ जिनराज नामतेरा एचाल ॥

मनपर्यवाञ्जिधानं गुणरत्नके निधान पूजोरे
 जविकञ्जुजजावे ॥ १ ॥ घटमात्र बोधकर्त्ता
 सामान्य जावधर्त्ता ससार जीतिहर्त्ता पू० २
 सार्द्धं छय दीवसागर सन्नीपचेदि आगर मन
 जावके दिवाकर पू० ॥ ३ ॥ मनद्रव्यके अशेष
 गुणपर्ययादिशेष स्फुटजासितेविशेष ॥ ४ ॥

॥ त्रलोक ॥

मन पर्यार्याख्यं विपुल मतिचान्य दृजुमति
 द्विधेत्यं यदज्ञानं हृदय गतजाव प्रकटनं ॥
 सुमंज्ञा वत्पचेन्द्रिय विषयि रम्यैर्नवपदे यजे
 पूजाद्रव्यै स्तदहमधुना मंगल करम् ॥

नैकीश्री मनःपर्यवज्ञानाय जलंच० यजामहे
 स्वाहा ॥ इतिमनःपर्यय ज्ञान पूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध असाधारण सकल निर्व्याघातानंत
 एकसकल साकारफुनि केवल नतानत १
 पञ्चमगति दातार यह पञ्चमज्ञान उदार

नविज्ञावैश्वरचनकरी लहोपरमसुखसार २
 केवल नाणउदार याते आनंद अधिक अ
 पार अं० नवसिद्धस्थ दुःखेद तसअंतर वज्र
 तरनेद तेतोवरणे किमु कविवार के० ॥ १ ॥
 रविजिम अमल प्रकाम द्रव्यसकल परिणाम
 तससत्ता विन्नतिकार के० ॥ २ ॥ काल त्रय
 अनुसारे निज निज वेद अकारे प्रतिबिंबि
 त होय तिणवार के० ॥ ३ ॥ क्षेत्रथी लोकालो
 क । अनिरामचंद्रोदया लोक याते परमानंद
 अपार के० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

सम्यक्तं समुपैति शुद्धमखिलं यस्माज्जगद्भा
 सते साक्षाद्दस्तगतं त्रिकाल जनितं वृत्तंस्फुर
 त्यंजसा ॥ जायंते तुलसिद्धयो नवपदे द्रव्यैः
 शुचैः केवलज्ञानं तत्परिपूजयामि सततं ज्ञा
 वैरनंतं महत् ॥ ५ ॥

नैकीश्री समस्त लोकालोक प्रकाशकाय के
 वलज्ञानाय जलं चंदनं पु० यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति पंचज्ञान पूजा समाप्ता ॥

॥ आरती ॥

जै जगसुखकारीवारी । जैसमपद चितधारी

शारति करुंसारी जै० । अष्टाविंशति जेदकरी
 ने । मतिज्ञान राजै ॥ ध्यावतपूजत नविजन
 केरा । नवसकट जाजै जे० ॥ १ ॥ जेद चतु
 र्दशस्थथा विंशति । प्रवचन पतिदापे ॥ श्री
 श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर स्वमुखथी जापे
 जे० ॥ २ ॥ रूपीद्रव्य विषयि मर्यादा । करिञ्च
 वधीसीहै ॥ जेद पटक सख्यातीतीवा । नविज
 न मनमोहै जै० ॥ ३ ॥ तूर्यज्ञान मनपर्यवक
 हिये । जेदयुगम लहिये जै० ॥ ऋजुमति विपु
 लमति सरदहिये । न्यूनाधिक गहिये जै० ॥
 लोकालोकातर्गत वस्तुगुण पर्यवजासी । केव
 ल एक सहायअनते जए निर्वृतिवासी जे० ॥
 ५ ॥ पंचज्ञानकी शारति करतां नवशारती
 ठीजे जिमवरदत्त कुमर गुणमजरी । तिम
 न्तिकीजै ॥ बृहत् नहारक खरतर पति ॥
 जिनहंस सूरीराया ॥ तत्पद कजमधुकरकच
 ननिधि । शानंद वरताया ॥

॥ शारती ॥

जय२ शारति ज्ञानदिनदा अनुभव पद पा
 धन सुखकदा तीन जगतके जाव प्रकाशक
 पूरणप्रजुता परम शानंदा जय२० ॥ १ ॥ म

तिश्रुति अविधि अनेमनपर्यव । केवल काटैस
 व दुखदंदा जय० ॥ २ ॥ नवजल पार उता
 रण कारण ॥ सेवोध्यावो नविजनवृंदा जय०
 ३ ॥ शिवपुरपंथ प्रगटएसीधा । चौमुखनापै
 श्री जिनचंदा जय० ॥ ४ ॥ अविचल राज
 हीयासैपावें । चिदानंद निजतेजअमंदा जय०
 आरति ज्ञानदि० अनुभव ॥ इति आरती ॥

॥ अथ त्राषा अष्टप्रकारी पूजा ॥

गंगामागध क्षीरनिधि अपधि मिश्रितसार
 कुसुमेवासित शुचिजलें । करोजिन स्नात्र उ
 दार ॥ मणि कनकादिक अष्टविधकरी नरी
 कलस सफार । शुभ्ररुचि जेजिनवरन्हवें तसु
 नहि दुरित प्रचार ॥ २ ॥ मेरुसिखर जिमसु
 रवर जिनवर न्हवण अमान । करता बरता
 निजगुण समकित वृष्टि निधान ॥ ३ ॥ हर्ष
 नरि अप्सरावृंद आवें । स्नात्रकर एमआसी
 सत्तावें । जिहांलगे सुरगिरी जंबुदीवो ॥ अ
 म्हतणा साध्यजीवा तुजीवो ॥ ४ ॥

उलोक विमल० । नुँकी परमपरमात्मने अ
 नंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणा
 य श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

वाचना चदन कुमकुमा । मृगमदने घन
सार ॥ जिनतनु लेपैतसुटलै । मोहसंता
पविकार ॥ १ ॥

सकलसताप निवारण तारण सज्जन्नि चित्त
परमअनीहाअरिहा तनुचरचो जनिनित्त १
निजरूपै उपयोगी धारी जिनगुणगेह । ज्ञा
वचंदनसज्जन्नावयो टालै दुरितअच्छेह ॥ २ ॥
जिनतनुचरचता सकलनांकी । कहै कुग्रहाउ
घ्नताआजथाकी ॥ सकल अनिमेपता आज
म्हांकी जव्यता अमतणी आजपाकी ॥ ३ ॥
सकलमोह० नुँझी चं० यजामहे स्वाहा २ ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्रीवरमोगरा । चंपक जायगुलाव ॥
केतकिटमणोवोलसरि पूजो जिनजरबाव
अमलअखंफितमफितविकसित शुक्लकुसुमनी
घनजात लाखीणोटोफरठवोअगीरचोवज्जन्नां
त १ गुणकुसुमैनिजआतम मफितकरवाजव्य
गुणरागीजहत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥
जगधणीपूजता विविधफूलै सुरवरातेगिणैखि
णअमूलै खांतधरिमानवाजिनपपूजै तसुतणा

पापसंतापधूजै ॥ ३ ॥

विकचनिर्मल० नुँझीपरम० पुष्पंयजा० ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णागर मृगमदतगर । अंबरतुरकलोवा
न ॥ मेलिसुगंध घनसारघन करोजिनने
धूपदान ॥ १ ॥

धूपघटीजिममहसहै तिमदहैपातिकवृंद अर
तिअनादिनीजावै पावैमनआणंद ॥ १ ॥ जे
जिनपूजैधूपैन्नवकूपें फिरतेह नावेंपावें धुवघ
रअवैसुखअबेह ॥ २ ॥ जिनघरेवासतांधूप
पूरे मिच्छतदुर्गं धताजायदूरै धूपजिमसहजऊ
ठगसुजावै कारकाउच्चगतिजावपावै ॥ ३ ॥
सकलकर्म० नुँझीपरम० धूपंयजामहेस्वाहा
॥ दोहा ॥

मणिमयरजततांमृना । पात्रकरीघृतपूर ॥
वत्तीसूत्रकुसुंजनी । करोप्रदीपसुनूर १ ॥
मंगलदीपवधावोगावो जिनगुणगीत दीपत
णीजिमआलिकामालिकामंगलनीत १ दीपत
णीशुचज्योती दीतीजिनमुखचंद निरखीहर
पोन्नविजनजिमलहोपूर्णंद २ जिनगृहेंदीप
मालाप्रकाशै तेहथीतिमिरअज्ञाननाशै निज

घटैज्ञानज्योती प्रकाशै तेहथी जगतणाभाव
ज्ञाशै ॥ ३ ॥

नविकनिर्मल० नुँझीपर० दीपंयजा० स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

अद्वत अद्वतपूरसुं जेजिन आगैसार स्व
स्तिकरचतां विस्तरै निज गुणजरविस्तार
उज्जल अमल अखंफित मंफितअद्वतचंग पुं
जत्रयकरो स्वस्तिक अस्तिकनावेरंग ॥ १ ॥
निजसत्ताने सन्मुखउन्मुख नावेजेह ज्ञानादि
क गुणगावे नावे स्वस्तिकजेह ॥ २ ॥ स्वस्तिक
क पूरतां जिनपआगे स्वस्तिकश्री नद्रकल्याण
जागे जन्मजरा मरणादि अशुभनागै नियत
शिवशर्मरहै तासुआगे ॥ ३ ॥

सकल मंगल नुँझी परम० अद्वतं यजामहे०

॥ दोहा ॥

सरस शुचीपकवानवज्ज शालिदालिघृतपू
र करोनैवेदजिनआगलै क्षुधादोपतसुदूर
लपन श्रीवरधेवर मधुतर मोतीचूर सिंहके
सरिया सेविया दालिया मोदकपूर ॥ १ ॥
साकर द्वाखसिघोळा नक्त व्यंजन घृतसदा ।
करोनैवेदजिनआगलै जिममिलै सुखअनव

द्व ॥ २ ॥ ठोकतांनोज्य परन्नावत्यागे त्रिवि
जना निजगुणैन्नोज्य मांगें अमन्नणी अमतणुं
सरूपन्नोज्य श्यापज्योतातजीजगतपूज्य ३ ॥
सकल पुञ्जल नुँझीपरम० नैवेद्यं० यजामहे०

॥ दोहा ॥

पक्कविजोरुं जिनकरे ठवतां शिवपद देह
सरसमधुररस फलगिणै येहजिन नेटकरेह
श्रीफल कदली सुरंगी नारंगी श्यांवासार अं
जीर बंजीर दाफिम करणा षटवीज सफार
मधुरसुखादक उत्तमलोक अनंदित जेह व
रणगंधादिक रमणिक बज्जफल ठोकै तेह २
फलजरै पूजतां जगतस्वामी मनुजसुरन्नवेलहै
सफलपांमी सकलमुनि ध्येयगत नेदरंगें ध्या
वतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥

कटुककर्म नुँझीपरम० फलं यजामहेस्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

इम अन्नविध जिन पूजतां विरचैजेथिर
चित्त मानव नव सफलोकरै बाधैसमकि
तविन्न ॥ १ ॥

अगणित गुणगण आगर नागर बंदितवाय
श्रुतधारी उपकारी श्रीज्ञानसागर उवऊाय

तासचरण कजसेवकमधुकर परलयलीन श्री
जिनपूजा गाइये जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥
संवतगुण युगअचल इंद्रु हर्षनरि गाइयो
श्रीजिनेदु तासफल सुकृतथी सकलप्राणी ल
ह्योज्ञान उद्योत धनशिव निसाणी ॥ ३ ॥
इतिजिनवर० नुँझीपरमप० अर्घंयजा०स्वाहा
शक्रोयथा० नुँझीपरम० वस्त्रंयजामहेस्वाहा
इति श्री अष्ट प्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा ॥

सुरनदी जलनिर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत
दाघनिवारया । सकलमंगल वांछित दायकं
कुशल सूरिगुरोश्चरणंयजे ॥ १ ॥ नुँझी श्री
जिन कुशल सूरिचरण कमलेज्यो जल निर्व
पामिते स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥

मलयचंदनकेसरवारिणानिखिलजाम्ब्य रुजा
तपहारिणा सकलमं० ॥ ३ ॥ नुँझी श्रीजिन
कुशल सूरि गुरु चरण कमलेज्य. चदन नि
र्घ्यामिते स्वाहा ॥ २ ॥ चदन पूजा ॥

कमल केतकि चंपक पुष्पकैः परिमला हृत
षट्पद घृदकैः सकल० ॥ ३ ॥ नुँझी श्री जिन
कुशल सूरि गुरुचरण कमलेज्य. पुष्पं निर्घ

यानिते स्वाहा ॥ ३ ॥ पुष्प पूजा ॥

सरल तंदुलकै रति निर्मलैः प्रवर मौक्तिक पुंज
बह्वज्वलैः सकलमं० ॥ ४ ॥ नुँझी जिनकुशल
सूरि चरण कम० अद्भुतं निर्वपा० स्वाहा ॥
इति अद्भुत पूजा ॥

वज्रविधैश्चरुजिर्वटकादिकै । प्रचुर मोदक
पुंज सुखज्जकैः सकलमं० ॥ ५ ॥ नुँझी श्री
जिन कुशल० नैवेदानि० ॥

अतिसुदीप्तिमयैः खलुदोपकै विमलकांचन
जाजन संस्थितैः सकलमं० ॥ ६ ॥ नुँझीश्री
जिनकुशल० दीपानि० ॥

अगरुचंदन धूपदशांगजैः प्रसरिताखिल
दिक्षु सुधूमकैः सकलमं० ॥ ७ ॥ नुँझीश्रीजिन
कुशल० धूपानि० ॥

पनसमोचसदाफल कर्कटैः सुसुखदैः किलश्री
फलचिर्नटैः सकलमं० ८ नुँझीश्री जिनकुशल०
फलानि० ॥

जलसुगंधप्रसूनसुतंदुलैश्चरुप्रदीपकधूपफला
दिप्तिः सकलमं० ॥ ९ ॥ नुँझी श्रीजिनकुशल०
अर्घनि० ॥ ९ ॥ इतिजिनकुशलसूरिपूजाष्टकं
॥ इति श्रीजिनपूजा संग्रह ॥

॥ पूजानाम ॥

- १ स्नात्र ५ ३
 २ अष्टप्रकारी ५ १७
 ३ सतरहजेदी ५ २५
 ४ वहीनवपदजीकी ५ ४८
 ५ ठोटीनवपदजीकी ५ ७९
 ६ बीसस्थानकजीकी ५ ८३
 ७ ऋषिमंजलजीकी ५ १३३
 ८ नदीश्वरजीकी ५ १५३
 ९ पचकल्याणककी ५ १६६
 १० पचज्ञानकी ५ १६२
 ११ त्रापाअष्टप्रकारी ५ २५०
 १२ दादाजीकीअष्टप्रकारी ५ ०

मुद्रासहस्रकिरणै ।

ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसहारी ॥

पुस्तककमलविकासी ।

दुनिशंजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

फी पुस्तक } { दोरुपैये २ ॥
 निठरावल }